Website Link: mib.gov.in

जनवरी 2023

भारत
लोकतंत्र की जननी

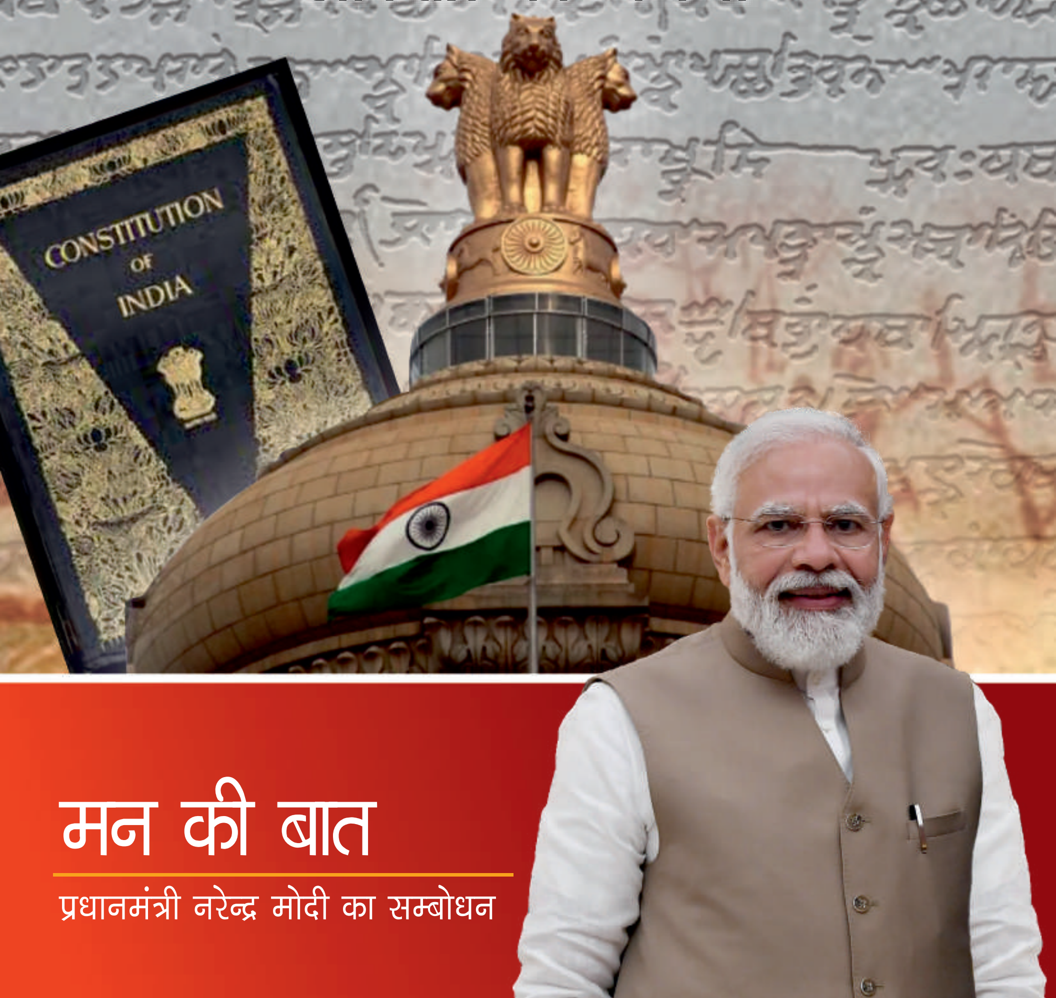

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश — 1

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख — 14

2.1 **पीपुल्स पद्म** — 16
समाज के गुमनाम नायकों का सम्मान

2.1.1 **पद्म पुरस्कार विजेताओं के शब्दों में...** — 20

2.1.2 **राष्ट्र निर्माताओं को सम्मानित करता 'पीपुल्स पद्म'** — 22
अशोक मलिक का लेख

2.2 **इंडिया : द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी** — 24

2.2.1 **भारत का जीवंत लोकतंत्र - विश्व का मार्गदर्शक** — 26
रामनाथ कोविंद का लेख

2.2.2 **लोकतंत्र: भारतीय सभ्यता की आधारशिला** — 28
एस. एम. कृष्ण का साक्षात्कार

2.2.3 **अनादि काल से भारत लोकतंत्र की जननी** — 30
कपिल कपूर का साक्षात्कार

2.2.4 **'इंडिया : द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी' इतिहास वर्णन का अन्तराल पाटने का प्रयास** — 32
रघुवेन्द्र तंवर का साक्षात्कार

2.3 **पर्पल फ़ेस्ट, गोवा** — 34
भारत का पहला समावेशी उत्सव

2.3.1 **भारत में समावेशिता को प्रोत्साहित करता पर्पल फ़ेस्ट :** प्रमोद सावंत का साक्षात्कार — 38

2.4 **भारत के टेक-ऐड का निर्माण करते इनोवेटर्स** — 40

2.4.1 **भारत का नवाचार वाहक - IISc बेंगलुरु** — 42
प्रो. गोविन्दन रंगराजन का साक्षात्कार

2.5 **ई-वेस्ट प्रबन्धन** — 44
सर्क्यूलर इकोनॉमी की बड़ी ताकत

2.5.1 **ई-वेस्ट सम्बन्धी मुद्दे और 'वेस्ट टू वेल्थ' की अवधारणा** — 50
जगदीश मित्रा का लेख

2.5.2 **सर्क्यूलर इकोनॉमी को मज़बूत करने के लिए प्रतिबद्ध भारत के स्टार्ट-अप :** डॉ. पी. पार्थसार्थी का लेख — 52

2.6 **भारत में वेटलैंड की क्षति का पुनरुत्थान** — 54
सरकारी सक्रियता और जनभागीदारी का प्रमाण

2.6.1 **वेटलैंड कंज़र्वेशन में विश्व में अग्रणी भारत** — 62
डॉ. वीरेन्द्र आर. तिवारी, डॉ. गोपी जी. वी., डॉ. एस.ए. हुसैन का लेख

03 प्रतिक्रियाएँ — 66

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो! नमस्कार

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। 2023 की यह पहली 'मन की बात' और उसके साथ-साथ, इस कार्यक्रम का सत्तानवे-वाँ (97वाँ) एपिसोड भी है। आप सभी के साथ एक बार फिर बातचीत करके मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। हर साल जनवरी का महीना काफी इवेन्टफुल होता है। इस महीने, 14 जनवरी के आस-पास उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक, देश-भर में त्योहारों की रौनक होती है। इसके बाद देश अपना गणतंत्र उत्सव भी मनाता है। इस बार भी गणतंत्र दिवस समारोह में अनेक पहलुओं की काफ़ी प्रशंसा हो रही है। जैसलमेर से पुल्कित ने मुझे लिखा है कि 26 जनवरी की परेड के दौरान कर्त्तव्य पथ का निर्माण करने वाले श्रमिकों को देखकर बहुत अच्छा लगा। कानपुर से जया ने लिखा है कि उन्हें परेड में शामिल झाँकियों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को देखकर आनन्द आया। इस परेड में पहली बार हिस्सा लेने वाली वुमेन कैमल राइडर और सीआरपीएफ की महिला टुकड़ी की भी काफ़ी सराहना हो रही है।

साथियो, देहरादून के वत्सल जी ने मुझे लिखा है कि 25 जनवरी का मैं हमेशा इंतजार करता हूँ, क्योंकि उस दिन पद्म पुरस्कारों की घोषणा होती है और एक प्रकार से 25 तारीख की शाम ही मेरी 26 जनवरी की उमंग को और बढ़ा देती है। ज़मीनी स्तर पर अपने समर्पण और सेवा-भाव से उपलब्धि हासिल करने वालों को पीपुल्स पद्म को लेकर भी कई लोगों ने अपनी भावनाएँ साझा की हैं। इस बार पद्म पुरस्कार से सम्मानित होने वालों में जनजातीय समुदाय और जनजातीय जीवन से जुड़े लोगों का अच्छा-खासा प्रतिनिधित्व रहा है। जनजातीय जीवन, शहरों की भागदौड़ से अलग होता है, उसकी चुनौतियाँ भी अलग होती हैं। इसके बावजूद जनजातीय समाज, अपनी परम्पराओं को सहेजने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। जनजातीय समुदायों से जुड़ी चीज़ों

74वाँ गणतंत्र दिवस

पीपुल्स पद्म

ज़मीनी स्तर के नायकों को सम्मान

के संरक्षण और उन पर रिसर्च के प्रयास भी होते हैं। ऐसे ही टोटो, हो, कुई, कुवी और मांडा जैसी जनजातीय भाषाओं पर काम करने वाले कई महानुभावों को पद्म पुरस्कार मिले हैं। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। धनीराम टोटो, जानुम सिंह सोय और बी. रामकृष्ण रेड्डीजी के नाम, अब तो पूरा देश उनसे परिचित हो गया है। सिद्धी, जारवा और ओंगे जैसी आदि-जनजाति के साथ काम करने वाले लोगों को भी इस बार सम्मानित किया गया है, जैसे – हीराबाई लोबी, रतन चन्द्रकार और ईश्वरचन्द्र वर्माजी। जनजातीय समुदाय हमारी धरती, हमारी विरासत का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। देश और समाज के विकास में उनका योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। उनके लिए काम करने वाले व्यक्तित्वों का सम्मान, नई पीढ़ी को भी प्रेरित करेगा। इस वर्ष पद्म पुरस्कारों की गूँज उन इलाकों में भी सुनाई दे रही है, जो नक्सल प्रभावित हुआ करते थे। अपने प्रयासों से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में गुमराह युवकों को सही राह दिखाने वालों को पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इसके लिए कांकेर में लकड़ी पर नक्काशी करने वाले अजय कुमार मंडावी और गढ़चिरौली के प्रसिद्ध झाड़ीपट्टी, रंगभूमि से जुड़े परशुराम कोमाजी खुणे को भी यह सम्मान मिला है। इसी प्रकार नॉर्थ-ईस्ट में अपनी संस्कृति के संरक्षण में जुटे रामकुईवाँगबे निउमे, बिक्रम बहादुर जमातिया और करमा वांगचु को भी सम्मानित किया गया है।

साथियो, इस बार पद्म पुरस्कार से सम्मानित होने वालों में कई ऐसे लोग शामिल हैं, जिन्होंने संगीत की दुनिया को समृद्ध किया है। कौन होगा जिसको संगीत पसन्द ना हो? हर किसी की संगीत की पसन्द अलग-अलग हो सकती है, लेकिन संगीत हर किसी के जीवन का हिस्सा होता है। इस बार पद्म पुरस्कार पाने वालों में वो लोग हैं, जो संतूर, बम्हुम, द्वितारा जैसे हमारे पारम्परिक वाद्ययंत्रों की धुन बिखेरने में महारत रखते हैं। गुलाम मोहम्मद ज़ाज़, मोआ सु-पोंग, सिंहबोर कुरका-लांग, मुनि-वेंकटप्पा और मंगल कान्ति राय ऐसे कितने ही नाम हैं, जिनकी चारों तरफ़ चर्चा हो रही है।

साथियो, पद्म पुरस्कार पाने वाले अनेक लोग, हमारे बीच के वो साथी हैं, जिन्होंने हमेशा देश को सर्वोपरि रखा, राष्ट्र प्रथम के सिद्धान्त के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वो सेवाभाव से अपने काम में लगे रहे और इसके लिए उन्होंने कभी किसी पुरस्कार की आशा नहीं की। वो जिनके लिए काम कर रहे हैं, उनके चेहरे का सन्तोष ही उनके लिए सबसे बड़ा अवॉर्ड है। ऐसे समर्पित लोगों को सम्मानित करके हम देशवासियों का गौरव बढ़ा है। मैं सभी पद्म पुरस्कार विजेताओं के नाम भले ही यहाँ नहीं ले पाऊँ, लेकिन आप से मेरा आग्रह ज़रूर है कि आप, पद्म पुरस्कार पाने वाले इन महानुभावों के प्रेरक जीवन के विषय में विस्तार से जानें और औरों को भी बताएँ।

साथियो, आज जब हम आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान गणतंत्र दिवस की चर्चा कर रहे हैं, तो मैं यहाँ एक दिलचस्प किताब का भी ज़िक्र करूँगा। कुछ हफ़्ते पहले ही मुझे मिली इस बुक में एक बहुत ही इंटरेस्टिंग सब्जेक्ट पर चर्चा की गई है। **इस बुक का नाम इंडिया – द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी है और इसमें कई बेहतरीन एसेज़ हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हम भारतीयों को इस बात का गर्व भी है कि हमारा देश मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी भी है। लोकतंत्र**

भारत लोकतंत्र की जननी

हमारी रगों में है, हमारी संस्कृति में है– सदियों से यह हमारे कामकाज का भी एक अभिन्न हिस्सा रहा है। स्वभाव से हम एक डेमोक्रेटिक सोसायटी हैं। डॉ. आम्बेडकर ने बौद्ध भिक्षु संघ की तुलना भारतीय संसद से की थी। उन्होंने उसे एक ऐसी संस्था बताया था, जहाँ मोशन्स, रिजोल्यूशन्स, कोरम, वोटिंग और वोटों की गिनती के लिए कई नियम थे। बाबासाहेब का मानना था कि भगवान बुद्ध को इसकी प्रेरणा उस समय की राजनीतिक व्यवस्थाओं से मिली होगी।

तमिलनाडु में एक छोटा, लेकिन चर्चित गाँव है – उत्तिरमेरुर। यहाँ ग्यारह सौ-बारह सौ साल पहले का एक शिलालेख दुनिया भर को अचम्भित करता है। यह शिलालेख एक मिनी - कॉन्सटिट्यूशन की तरह है। इसमें विस्तार से बताया गया है कि ग्राम सभा का संचालन कैसे होना चाहिए और उसके सदस्यों के चयन की प्रक्रिया क्या हो। हमारे देश के इतिहास में डेमोक्रेटिक वैल्यूस का एक और उदाहरण है – 12वीं सदी के भगवान बसवेश्वर का अनुभव मंटपम। यहाँ फ्री डिबेट और डिस्कशन को प्रोत्साहन दिया जाता था। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि यह मैग्ना कार्टा से भी पहले की बात है। वारंगल के काकतीय वंश के राजाओं की गणतांत्रिक परम्पराएँ भी बहुत प्रसिद्ध थीं। भक्ति आन्दोलन ने पश्चिमी भारत में लोकतंत्र की संस्कृति को आगे बढ़ाया। बुक में सिख पंथ की लोकतान्त्रिक भावना पर भी एक लेख को शामिल किया गया है, जो गुरु नानक देवजी के सर्वसम्मति से लिए गए निर्णयों पर प्रकाश डालता है। मध्य भारत की उराँव और मुंडा जनजातियों में कम्युनिटी ड्रिवेन और कॉन्सेंसस ड्रिवेन डिसिजन पर भी इस किताब में अच्छी जानकारी है। **आप इस किताब को पढ़ने के बाद महसूस करेंगे कि कैसे देश के हर हिस्से में सदियों से लोकतंत्र की भावना प्रवाहित होती रही है। मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी के रूप में हमें निरंतर इस विषय का गहन चिन्तन भी करना चाहिए, चर्चा भी करना चाहिए और दुनिया को अवगत भी कराना चाहिए। इससे देश में लोकतंत्र की भावना और प्रगाढ़ होगी।**

मेरे प्यारे देशवासियो, अगर मैं आपसे पूछूँ कि योग दिवस और हमारे विभिन्न तरह के मोटे अनाजों – मिलेट्स में क्या कॉमन है तो आप सोचेंगे ये भी क्या तुलना हुई ? अगर मैं कहूँ कि दोनों में काफ़ी कुछ कॉमन है तो आप हैरान हो जाएँगे। दरअसल संयुक्त राष्ट्र ने इंटरनेशनल योग डे और इंटरनेशनल ईयर ऑफ़ मिलेट्स दोनों का ही निर्णय भारत के प्रस्ताव के बाद लिया है। दूसरी

बात ये कि योग भी स्वास्थ्य से जुड़ा है और मिलेट्स भी सेहत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तीसरी बात और महत्त्वपूर्ण है – दोनों ही अभियानों में जन-भागीदारी की वजह से क्रान्ति आ रही है। जिस तरह लोगों ने व्यापक स्तर पर सक्रिय भागीदारी करके योग और फिटनेस को अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, उसी तरह मिलेट्स को भी लोग बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। **लोग अब मिलेट्स को अपने खान-पान का हिस्सा बना रहे हैं। इस बदलाव का बहुत बड़ा प्रभाव भी दिख रहा है। इससे एक तरफ़ वो छोटे किसान बहुत उत्साहित हैं, जो पारम्परिक रूप से मिलेट्स का उत्पादन करते थे। वो इस बात से बहुत खुश हैं कि दुनिया अब मिलेट्स का महत्त्व समझने लगी है। दूसरी तरफ़, एफपीओ और इंटरप्रेन्योर्स ने मिलेट्स को बाज़ार तक पहुँचाने और उसे लोगों तक उपलब्ध कराने के प्रयास शुरू कर दिए हैं।**

INTERNATIONAL YEAR OF
MILLETS
2023

आंध्र प्रदेश के नांदयाल ज़िले के रहने वाले के.वी. रामा सुब्बा रेड्डीजी ने मिलेट्स के लिए अच्छी-खासी सैलरी वाली नौकरी छोड़ दी। माँ के हाथों से बने मिलेट्स के पकवानों का स्वाद कुछ ऐसा रचा-बसा था कि इन्होंने अपने गाँव में बाजरे की प्रोसेसिंग यूनिट ही शुरू कर दी। सुब्बा रेड्डीजी लोगों को बाजरे के फायदे भी बताते हैं और उसे आसानी से उपलब्ध भी कराते हैं। महाराष्ट्र में अलीबाग के पास केनाड गाँव की रहने वाली शर्मीला ओसवालजी पिछले 20 साल से मिलेट्स की पैदावार में यूनिक

तरीके से योगदान दे रही हैं। वो किसानों को स्मार्ट एग्रीकल्चर की ट्रेनिंग दे रही हैं। उनके प्रयासों से न सिर्फ़ मिलेट्स की उपज बढ़ी है, बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है।

अगर आपको छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जाने का मौक़ा मिले तो यहाँ के मिलेट्स कैफ़े ज़रूर जाइएगा। कुछ ही महीने पहले शुरू हुए इस मिलेट्स कैफ़े में चीला, डोसा, मोमोस, पिज़्ज़ा और मंचूरियन जैसे आइटम खूब पोपुलर हो रहे हैं।

मैं, आपसे एक और बात पूछूँ? आपने इंटरप्रेन्योर शब्द सुना होगा, लेकिन क्या आपने मिलेटप्रेन्योर्स सुना है क्या? ओडिशा की मिलेटप्रेन्योर्स, आजकल खूब सुर्ख़ियों में हैं। आदिवासी ज़िले सुन्दरगढ़ की करीब डेढ़ हज़ार महिलाओं का सेल्फ हेल्प ग्रुप, ओडिशा मिलेट्स मिशन से जुड़ा हुआ है। यहाँ महिलाएँ मिलेट्स से कुकीज़, रसगुल्ला, गुलाब जामुन और केक तक बना रही हैं। बाज़ार में इनकी खूब डिमांड होने से महिलाओं की आमदनी भी बढ़ रही है।

कर्नाटका के कलबुर्गी में अलंद भुताई मिलेट्स फार्मर्स प्रोड्यूसर कम्पनी ने पिछले साल इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मिलेट्स रिसर्च की देखरेख में काम शुरू किया। यहाँ के खाखरा, बिस्कुट और लड्डू लोगों को भा रहे हैं। कर्नाटका के ही बीदर ज़िले में हुल्सूर मिलेट प्रोड्यूसर कम्पनी से जुड़ी महिलाएँ मिलेट्स की खेती के साथ ही उसका आटा भी तैयार कर रही हैं। इससे इसकी कमाई भी काफ़ी बढ़ी है। प्राकृतिक खेती से जुड़े छत्तीसगढ़ के संदीप शर्माजी के एफपीओ से आज 12 राज्यों के किसान जुड़े हैं। बिलासपुर का यह एफपीओ 8 प्रकार के मिलेट्स का आटा और उसके व्यंजन बना रहा है।

साथियो, आज हिन्दुस्तान के कोने-कोने में G20 की सम्मिट्स लगातार चल रही है और मुझे खुशी है कि देश के हर कोने में, जहाँ भी G20 की सम्मिट हो रही है, मिलेट्स से बने पौष्टिक और स्वादिष्ट

मिलेट प्रोसेसिंग यूनिट में कार्यरत महिलाएँ

G20 आयोजनों में एक आकर्षण बने हुए हैं मिलेट्स

व्यंजन उसमें शामिल होते हैं। यहाँ बाज़ार से बनी खिचड़ी, पोहा, खीर और रोटी के साथ ही रागी से बने पायसम, पूड़ी और डोसा जैसे व्यंजन भी परोसे जाते हैं। G20 के सभी वेन्यू पर मिलेट्स एग्जीबिशन में मिलेट्स से बनी हेल्थ ड्रिंक्स, सीरियल्स और नूडल्स को शोकेस किया गया। दुनिया भर में इंडियन मिशंस भी इनकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए भरपूर प्रयास कर रहे हैं। **आप कल्पना कर सकते हैं कि देश का ये प्रयास और दुनिया में बढ़ने वाली मिलेट्स की डिमांड, हमारे छोटे किसानों को कितनी ताक़त देने वाली है। मुझे देखकर भी अच्छा लगता है कि आज जितने तरह की नई-नई चीज़ें मिलेट्स से बनने लगी हैं, वो युवा पीढ़ी को भी उतनी ही पसन्द आ रही हैं। इंटरनेशनल इयर ऑफ़ मिलेट्स की ऐसी शानदार शुरुआत के लिए और उसको लगातार आगे बढ़ाने के लिए मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को भी बधाई देता हूँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, जब आपसे कोई टूरिस्ट हब गोवा की बात करता है, तो आपके मन में क्या ख़याल आता है? स्वाभाविक है, गोवा का नाम आते ही सबसे पहले यहाँ की खूबसूरत कॉस्टलाइन बीचेज़ और पसन्दीदा खानपान की बातें ध्यान में आने लगती हैं, लेकिन गोवा में इस महीने कुछ ऐसा हुआ, जो बहुत सुर्ख़ियों में है। आज 'मन की बात' में, मैं इसे आप सबके साथ साझा करना चाहता हूँ। **गोवा में हुआ ये इवेंट है – पर्पल फेस्ट, इस फेस्ट को 6 से 8 जनवरी तक पणजी में आयोजित किया गया। दिव्यांगजनों के कल्याण को लेकर यह अपने-आप में एक अनूठा प्रयास था। पर्पल फेस्ट कितना बड़ा मौक़ा था, इसका अन्दाजा आप सभी इस बात से लगा सकते हैं कि 50 हज़ार से भी ज़्यादा हमारे भाई-बहन इसमें शामिल हुए।** यहाँ आए लोग इस बात को लेकर रोमांचित थे कि वो अब 'मीरामार बीच' घूमने का भरपूर आनन्द उठा सकते हैं। दरअसल, 'मीरामार बीच' हमारे दिव्यांग भाई-बहनों के लिए गोवा के एक्सेसिबल बीचेज़ में से एक बन गया है। यहाँ पर क्रिकेट टूर्नामेंट, टेबल टेनिस टूर्नामेंट, मैराथन

कम्पटीशन के साथ ही एक डेफ-ब्लाइंड कन्वेंशन भी आयोजित किया गया। यहाँ यूनिक बर्ड वाचिंग प्रोग्राम के अलावा एक फिल्म भी दिखाई गई। इसके लिए विशेष इंतजाम किए गए थे ताकि हमारे सभी दिव्यांग भाई-बहन और बच्चे इसका पूरा आनन्द ले सकें। पर्पल फेस्ट की एक ख़ास बात इसमें देश के प्राइवेट सेक्टर की भागीदारी भी रही। उनकी ओर से ऐसे प्रोडक्ट्स को शोकेस किया गया, जो दिव्यांग फ्रेंडली हैं। इस फेस्ट में दिव्यांग कल्याण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के अनेक प्रयास देखे गए। पर्पल फेस्ट को सफल बनाने के लिए मैं इसमें हिस्सा लेने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूँ। इसके साथ ही उन वालंटियर्स का भी अभिनन्दन करता हूँ, जिन्होंने इसे ऑर्गेनाइज़ करने के लिए रात-दिन एक कर दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि एक्सेसिबल इंडिया के हमारे विज़न को साकार करने में इस प्रकार के अभियान बहुत ही कारगर साबित होंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब 'मन की बात' में, मैं एक ऐसे विषय पर बात करूँगा, जिसमें आपको आनन्द भी आएगा, गर्व भी होगा और मन कह उठेगा – वाह भाई वाह ! दिल ख़ुश हो गया! देश के सबसे पुराने साइंस इंस्टिट्यूशन में से एक बेंगलुरु का इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, यानी IISc एक शानदार मिसाल पेश कर रहा है। 'मन की बात' में मैं पहले इसकी चर्चा कर चुका हूँ कि कैसे इस संस्थान की स्थापना के पीछे भारत की दो महान विभूतियाँ जमशेदजी टाटा और स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा रही है तो, **आपको और मुझे आनन्द और गर्व दिलाने वाली बात ये है कि साल 2022 में इस संस्थान के नाम कुल 145 पेटेंट्स रहे हैं। इसका मतलब है – हर पाँच दिन में दो पेटेंट्स। ये रिकॉर्ड अपने आप में अद्भुत है। इस सफलता के लिए मैं IISc की टीम को भी बधाई देना चाहता हूँ।**

साथियो, आज पेटेंट फाइलिंग में भारत की रैंकिंग 7वीं और ट्रेडमार्क्स में 5वीं है। सिर्फ़ पेटेंट्स की बात करें, तो पिछले पाँच वर्षों में इसमें क़रीब 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भी भारत की रैंकिंग में जबरदस्त सुधार हुआ है और अब वो

पर्पल फ़ेस्ट, गोवा

विविधता और समावेशन का जश्न

40वें पर आ पहुँची है, जबकि 2015 में भारत ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 80 नम्बर के भी पीछे था। एक और दिलचस्प बात मैं आपको बताना चाहता हूँ। भारत में पिछले 11 वर्षों में पहली बार डोमेस्टिक पेटेंट्स फाइलिंग की संख्या फॉरेन फाइलिंग से अधिक देखी गई है। ये भारत के बढ़ते हुए वैज्ञानिक सामर्थ्य को भी दिखाता है।

साथियो, हम सभी जानते हैं कि 21वीं सदी की ग्लोबल इकोनॉमी में नॉलेज ही सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि भारत के टेक-ऐड का सपना हमारे इनोवेटर और उनके पेटेंट्स के दम पर ज़रूर पूरा होगा। इससे हम सभी अपने ही देश में तैयार वर्ल्ड क्लास टेक्नोलॉजी और प्रोडक्ट्स का भरपूर लाभ ले सकेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, NaMoApp पर मैंने तेलंगाना के इंजीनियर विजयजी की एक पोस्ट देखी। इसमें विजयजी ने ई-वेस्ट के बारे में लिखा है। विजयजी का आग्रह है कि मैं 'मन की बात' में इस पर चर्चा करूँ। इस कार्यक्रम में पहले भी हमने 'वेस्ट टू वेल्थ' यानी 'वेस्ट से कंचन' के बारे में बातें की हैं लेकिन आइए आज, इसी से जुड़ी ई-वेस्ट की चर्चा करते हैं।

साथियो, आज हर घर में मोबाइल फोन, लेपटॉप, टेबलेट जैसी डिवाइस आम हो चली हैं। देशभर में इनकी संख्या बिलियन में होगी। आज के लेटेस्ट डिवाइस, भविष्य के ई-वेस्ट भी होते हैं। जब भी कोई नई डिवाइस खरीदता है या फिर अपनी पुरानी डिवाइस को बदलता है, तो यह ध्यान रखना ज़रूरी हो जाता है कि उसे सही तरीके से डिस्कार्ड किया जाता है या नहीं। अगर ई-वेस्ट को ठीक से डिस्पोज़ नहीं किया गया, तो यह हमारे पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचा सकता है लेकिन अगर सावधानीपूर्वक ऐसा किया जाता है, तो यह रिसाइकिल और रियूज़ की सर्क्यूलर इकोनॉमी की बहुत बड़ी ताकत बन सकता है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि हर साल 50 मिलियन टन ई-वेस्ट फेंका जा रहा है। आप अन्दाजा लगा सकते हैं

देश के टेक-ऐड के सपने को साकार करते भारत के नवप्रवर्तक

कि कितना होता है? मानव इतिहास में जितने कमर्शियल प्लेन बने हैं, उन सभी का वजन मिला दिया जाए, तो भी जितना ई-वेस्ट निकल रहा है, उसके बराबर नहीं होगा। ये ऐसा है जैसे हर सेकंड 800 लैपटॉप फेंक दिए जा रहे हों। आप जानकर चौंक जाएँगे कि अलग-अलग प्रोसेस के जरिए इस ई-वेस्ट से करीब 17 प्रकार के प्रेशियस मेटल निकाले जा सकते हैं। इसमें गोल्ड, सिल्वर, कॉपर और निकल शामिल हैं, इसलिए ई-वेस्ट का सदुपयोग करना, 'वेस्ट को कंचन' बनाने से कम नहीं है। **आज ऐसे स्टार्ट-अप्स की कमी नहीं, जो इस दिशा में इनोवेटिव काम कर रहे हैं। आज करीब 500 ई-वेस्ट रिसायकल इस क्षेत्र से जुड़े हैं और बहुत सारे नए उद्यमियों को भी इससे जोड़ा जा रहा है। इस सेक्टर ने हज़ारों लोगों को सीधे तौर पर रोज़गार भी दिया है।** बेंगलुरु की ई-परिसरा ऐसे ही एक प्रयास में जुटी है। इसने प्रिंटेड सर्किट बोर्ड्स की कीमती धातुओं को अलग करके स्वदेशी टेक्नोलॉजी विकसित की है। इसी तरह मुम्बई में काम कर रही इको-रीको ने मोबाइल ऐप से ई-वेस्ट को कलेक्ट करने का सिस्टम तैयार किया है। उत्तराखंड के रुड़की की अट्टेरो रीसाइक्लिंग ने तो इस क्षेत्र में दुनियाभर में कई पेटेंट्स हासिल किए हैं। इसने भी खुद की ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग टेक्नोलॉजी तैयार कर काफ़ी नाम कमाया है। भोपाल में मोबाइल ऐप और वेबसाइट 'कबाड़ीवाला' के ज़रिए टनों ई-वेस्ट एकत्रित किया जा रहा है। इस तरह के कई उदाहरण हैं। ये सभी **भारत को ग्लोबल रीसाइक्लिंग हब बनाने में मदद कर रहे हैं लेकिन ऐसे इनेशेटिव्स की सफलता के लिए एक ज़रूरी शर्त भी है, वो ये है कि ई-वेस्ट के निपटारे से सुरक्षित उपयोगी तरीकों के बारे में लोगों को जागरूक करते रहना होगा। ई-वेस्ट के क्षेत्र में काम करने वाले बताते हैं कि अभी हर साल सिर्फ 15-17 प्रतिशत ई-वेस्ट को ही रिसाइकिल किया जा रहा है।**

ई-वेस्ट की रीसाइक्लिंग कचरे से कंचन बनाना

मेरे प्यारे देशवासियो, आज पूरी दुनिया में क्लाइमेट-चेंज और बायोडायवर्सिटी के संरक्षण की बहुत चर्चा होती है। इस दिशा में भारत के ठोस प्रयासों के बारे में हम लगातार बात करते रहे हैं। भारत ने अपने वेटलैंड्स के लिए जो काम किया है, वो जानकर आपको भी बहुत अच्छा लगेगा। कुछ श्रोता सोच रहे होंगे कि वेटलैंड्स क्या होता है? वेटलैंड साइट्स यानी वो स्थान, जहाँ दलदली मिट्टी जैसी ज़मीन पर साल-भर पानी जमा रहता है। कुछ दिन बाद, 2 फरवरी

ई-वेस्ट प्रबन्धन में तत्पर स्टार्टअप्स

को ही वर्ल्ड वेटलैंड्स डे है। हमारी धरती के अस्तित्व के लिए वेटलैंड्स बहुत ज़रूरी हैं, क्योंकि इन पर कई सारे पक्षी, जीव-जन्तु निर्भर करते हैं। ये बायोडायवर्सिटी को समृद्ध करने के साथ फ्लड कंट्रोल और ग्राउंड वाटर रिचार्ज को भी सुनिश्चित करते हैं। आप में से बहुत लोग जानते होंगे रामसर साइट्स ऐसे वेटलैंड्स होते हैं, जो इंटरनेशनल इम्पोर्टेंस के हैं। वेटलैंड भले ही किसी देश में हों, लेकिन उन्हें अनेक मापदंडों को पूरा करना होता है, तब जाकर उन्हें, रामसर साइट्स घोषित किया जाता है। रामसर साइट्स में 20,000 या उससे अधिक वाटर बर्ड्स होने चाहिए। स्थानीय मछली की प्रजातियों का बड़ी संख्या में होना ज़रूरी है। **आज़ादी के 75 साल पर अमृत महोत्सव के दौरान रामसर साइट्स से जुड़ी एक अच्छी जानकारी भी मैं आपके साथ शेयर करना चाहता हूँ। हमारे देश में अब रामसर साइट्स की कुल संख्या 75 हो गई है, जबकि 2014 के पहले देश में सिर्फ़ 26 रामसर साइट्स थीं। इसके लिए स्थानीय समुदाय बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस बायोडायवर्सिटी को सँजोकर रखा है। यह प्रकृति के साथ सद्भावपूर्वक रहने की हमारी सदियों पुरानी संस्कृति और परम्परा का भी सम्मान है।** भारत के ये वेटलैंड्स हमारे प्राकृतिक सामर्थ्य का भी उदाहरण हैं। ओडिशा की चिलका झील को 40 से अधिक वाटर बर्ड्स स्पीशीज़ को आश्रय देने के लिए जाना जाता है। कईबुल-लमजाओ, लोकटॉक को स्वैम डियर का एकमात्र नेचुरल हैबिटैट माना जाता है।

तमिलनाडु के वेडंथांगल को 2022 में रामसर साइट्स घोषित किया गया। यहाँ की बर्ड पापुलेशन को संरक्षित करने का पूरा श्रेय आस-पास के किसानों को जाता है। कश्मीर में पंजाथ नाग समुदाय एनुअल फ्रूट ब्लॉसम फेस्टिवल के दौरान एक दिन को विशेष तौर पर गाँव के झरने की साफ़–सफाई में लगाता है। बर्ड्स रामसर साइट्स में अधिकतर यूनिक कल्चर हेरिटेज भी हैं। मणिपुर का लोकटक और पवित्र झील रेणुका से वहाँ की संस्कृतियों का गहरा जुड़ाव रहा है। इसी प्रकार साम्भर का नाता माँ दुर्गा की अवतार शाकम्भरी देवी से भी है। **भारत में वेटलैंड्स का ये विस्तार उन लोगों की**

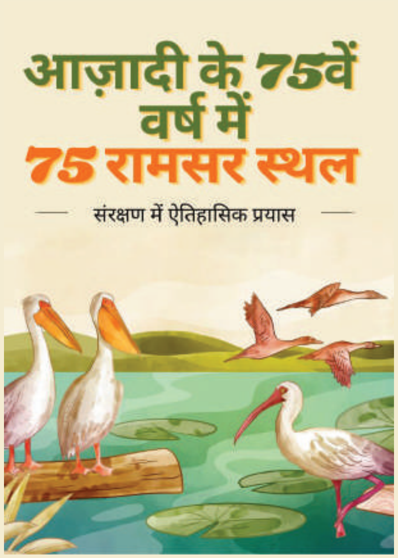

वजह से सम्भव हो पा रहा है, जो रामसर साइट्स के आस-पास रहते हैं। मैं ऐसे सभी लोगों की बहुत सराहना करता हूँ, 'मन की बात' के श्रोताओं की तरफ़ से उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार हमारे देश में, ख़ासकर उत्तर भारत में खूब कड़ाके की सर्दी पड़ी। इस सर्दी में लोगों ने पहाड़ों पर बर्फबारी का मज़ा भी खूब लिया। जम्मू-कश्मीर से कुछ ऐसी तस्वीरें आईं, जिन्होंने पूरे देश का मन मोह लिया। सोशल मीडिया पर तो पूरी दुनिया के लोग इन तस्वीरों को पसन्द कर रहे हैं। बर्फबारी की वजह से हमारी कश्मीर घाटी हर साल की तरह इस बार भी बहुत खूबसूरत हो गई है। बनिहाल से बडगाम जाने वाली ट्रेन की वीडियो को भी लोग खासकर पसन्द कर रहे हैं। खूबसूरत बर्फबारी, चारों ओर सफ़ेद चादर-सी बर्फ। लोग कह रहे हैं कि ये दृश्य, परिलोक की कथाओं-सा लग रहा है। कई लोग कह रहे हैं कि ये किसी विदेश की नहीं, बल्कि अपने ही देश में कश्मीर की तस्वीरें हैं।

एक सोशल मीडिया यूज़र ने लिखा है, 'कि स्वर्ग इससे ज़्यादा खूबसूरत और क्या होगा?' ये बात बिलकुल सही है, तभी तो कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। आप भी इन तस्वीरों को देखकर कश्मीर की सैर जाने का ज़रूर सोच रहे होंगे। मैं चाहूँगा आप खुद भी जाइए और अपने साथियों को भी ले जाइए। कश्मीर में बर्फ से ढके पहाड़, प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ और भी बहुत कुछ देखने-जानने के लिए है, जैसे कि कश्मीर के सैयदाबाद में विंटर गेम्स आयोजित किए गए। इन गेम्स की थीम थी– स्नो क्रिकेट! आप सोच रहे होंगे कि स्नो क्रिकेट तो ज़्यादा ही रोमांचक खेल होगा, आप बिलकुल सही सोच रहे हैं। कश्मीरी युवा बर्फ के बीच क्रिकेट को और भी अद्भुत बना देते हैं। इसके

जरिए कश्मीर में ऐसे युवा खिलाड़ियों की तलाश भी होती है, जो आगे चलकर टीम इंडिया के तौर पर खेलेंगे। ये भी एक तरह से खेलो इंडिया मूवमेंट का ही विस्तार है। **कश्मीर में, युवाओं में खेलों को लेकर बहुत उत्साह बढ़ रहा है। आने वाले समय में इनमें से कई युवा देश के लिए मेडल जीतेंगे, तिरंगा लहराएँगे। मेरा आपको सुझाव होगा कि अगली बार जब आप कश्मीर की यात्रा प्लान करें तो इस तरह के आयोजनों को देखने के लिए भी समय निकालें। ये अनुभव आपकी यात्रा को और भी यादगार बना देंगे।**

मेरे प्यारे देशवासियो, गणतंत्र को मजबूत करने के हमारे प्रयास निरंतर चलते रहने चाहिए। गणतंत्र मज़बूत होता है 'जन-भागीदारी से', 'सबका प्रयास से', 'देश के प्रति अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाने से', और मुझे संतोष है कि हमारा 'मन की बात', ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ सेनानियों की बुलन्द आवाज़ है। अगली बार फिर से मुलाक़ात होगी ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों की दिलचस्प और प्रेरक गाथाओं के साथ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

पीपुल्स पद्म

समाज के गुमनाम नायकों का सम्मान

“पद्म पुरस्कार पाने वाले अनेक लोग हमारे बीच के वो साथी हैं, जिन्होंने, हमेशा देश को सर्वोपरि रखा और ‘राष्ट्र प्रथम’ के सिद्धान्त के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वो सेवाभाव से अपने काम में लगे रहे और इसके लिए उन्होंने कभी किसी पुरस्कार की आशा नहीं की। वो जिनके लिए काम कर रहे हैं, उनके चेहरे का सन्तोष ही उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। आप से मेरा आग्रह है कि पद्म पुरस्कार पाने वाले इन महानुभावों के प्रेरक जीवन के विषय में विस्तार से जानें और औरों को भी बताएँ।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“2014 के बाद की अवधि में भारत की उल्लेखनीय विशेषताओं में एक हमारे समाज के लोकतंत्र की जड़ों को मज़बूत करने का दृढ़ प्रयास है। ज़मीनी-स्तर पर उपलब्धियों का वास्तविक सम्मान करते हुए पद्म पुरस्कारों का ‘पीपुल्स पद्म’ में रूपांतरण इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।”

-अशोक मलिक
सदस्य, पद्म पुरस्कार समिति 2022

मिज़ोरम की के.सी. रनरेमसंगी, पश्चिम बंगाल के धनीराम टोटो, लद्दाख के कुशोक थिकसे नवांग चम्बा स्टानज़िन, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव के प्रेमजीत बारिया और कर्नाटक की रानी मचैया – क्या आप जानते हैं कि देश के कोने-कोने से आए विविध क्षेत्रों के इन लोगों को क्या बाँधता है? ‘सेवा परमो धर्मः’ का मंत्र, और बड़े पैमाने पर अपने समुदायों तथा देश के प्रति निःस्वार्थ सेवा की उनकी अन्तर्निहित भावना के लिए उन्हें इस वर्ष पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जिन्हें अब ‘पीपुल्स पद्म’ के रूप में भी जाना जाता है।

जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा, लोकतंत्र हमारी रगों में, हमारी संस्कृति में है और सदियों से हमारे कामकाज का अभिन्न अंग रहा है। “लोकतंत्र का मतलब केवल जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए ही नहीं, बल्कि जनता के साथ, जनता के बीच भी होता है।” ‘पीपुल्स पद्म’ इसी लोकाचार का अनुसरण और सम्मान करता है।

2016 में पद्म पुरस्कार विजेताओं के नामांकन और चयन की पूरी प्रक्रिया को लोकतांत्रिक और पारदर्शी बनाया गया था। गिने-चुने व्यक्तियों द्वारा नामांकन की सिफारिश की परम्परा से हटकर, नामांकन प्रक्रिया को बड़े पैमाने पर जनता के लिए खोल दिया गया, जिससे यह एक जन आन्दोलन बन गया। कोई भी भारतीय अब एक सरल ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों के लिए किसी व्यक्ति को नामांकित कर सकता है। अब आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से स्व-नामांकन भी किया जा सकता है।

इस प्रकार, ‘पीपुल्स पद्म’ ने नए भारत के निर्माण में जनभागीदारी के लिए एक आदर्श बदलाव किया है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप अधिक-से-अधिक गुमनाम नायकों को उनकी उचित पहचान मिल रही है। सरकार के नामांकित व्यक्तियों की पहचान की तुलना में उनके किए गए कार्यों को अधिक महत्त्व देने के परिणामस्वरूप पिछले कुछ वर्षों में पद्म पुरस्कारों ने अबाध्यता की भावना प्राप्त की है।

इस वर्ष की सूची भी ऐसे नामों से भरी पड़ी है, जिन्होंने ‘राष्ट्र प्रथम’ के सिद्धान्त के लिए अपना जीवन समर्पित करते हुए हमेशा देश को सर्वोपरि रखा है। जैसा कि प्रधानमंत्री ने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में रेखांकित किया, इस वर्ष के पुरस्कार विजेताओं में जनजातीय समुदाय और जनजातीय जीवन से जुड़े लोगों का अच्छा प्रतिनिधित्व है। चाहे वह कुरिचिया जनजाति के चेरुवयाल के. रमन हों, जिन्होंने वायनाड में चावल की 50 से अधिक देसी किस्मों को संरक्षित किया है; बिक्रम बहादुर जमातिया, जिन्होंने त्रिपुरा में जमातिया समुदाय के संरक्षण और उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया; चेंगलपट्टू में इरुला जनजाति के वादिवेल गोपाल और श्री मासी सदाइयाँ, साँप पकड़ने वालों के रूप में जिनकी विशेषज्ञता और पारम्परिक ज्ञान कई देशों द्वारा उपयोग किया गया है; उमरिया की जोधैयाबाई बैगा, जो अपने चित्रों के माध्यम से अपनी पारम्परिक आदिवासी संस्कृति को दर्शाती हैं या के.सी. रनरेमसंगी हों, जो पिछले तीन दशकों से मिज़ो लोक संगीत की शिक्षा दे रही हैं और इसका प्रचार कर रही हैं। ये सभी विभिन्न आदिवासी समुदायों के लोग अपने-अपने विशेष तरीकों से समाज की सेवा कर रहे हैं।

पद्म पुरस्कार

एक गर्वित लोकतंत्र के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म पुरस्कारों को पीपुल्स पद्म में बदलकर, सरकार आम नागरिकों के असाधारण कार्यों को मान्यता दे रही है और भारत के ताने-बाने को बुनने वाली संस्कृतियों, कौशल, विचारों और कार्यों की विविधता का जश्न मना रही है।

पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं :

पद्म विभूषण

असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए

- यह दूसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है
- पदक पर जियोमेट्रिक पैटर्न और देवनागरी में 'पद्म विभूषण' लिखा होता है
- केन्द्र में चार प्रमुख पंखुड़ियों वाला एक उभरा हुआ कमल का फूल होता है
- रिबन : सादा कमल गुलाबी

पद्म भूषण

उच्च स्तर की विशिष्ट सेवा

- यह तीसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है
- पदक पर जियोमेट्रिक पैटर्न और देवनागरी में 'पद्म भूषण' लिखा होता है
- केन्द्र में तीन प्रमुख पंखुड़ियों वाला एक उभरा हुआ कमल का फूल होता है
- रिबन : सादा कमल गुलाबी, बीच में एक चौड़ी सफेद पट्टी के साथ

पद्म श्री

किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए

- यह चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है
- पदक पर जियोमेट्रिक पैटर्न और देवनागरी में 'पद्म श्री' लिखा होता है
- केन्द्र में पाँच पंखुड़ियों वाला एक उभरा हुआ कमल का फूल होता है
- रिबन : सादा कमल गुलाबी, दो होरिज़ॉन्टल सफेद धारियों के साथ

सभी पदकों के पीछे देवनागरी में 'सत्यमेव जयते' के साथ केन्द्र में भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।

पुरस्कार विजेताओं को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर और मुहर के साथ एक सनद (प्रमाण पत्र) भी प्रस्तुत किया जाता है।

प्राप्तकर्ताओं को पदक की एक छोटी प्रतिकृति भी दी जाती है, जिसे वे किसी भी औपचारिक/राज्य समारोह के दौरान पहन सकते हैं, यदि वांछित हो।

पद्म पुरस्कार न केवल समाज के सभी वर्गों, विविध समुदायों और सभी भौगोलिक क्षेत्रों के प्रतिनिधि बन गए हैं, बल्कि वे ऐसे सांस्कृतिक तत्वों को सुर्खियों में लाने में भी सहायक रहे हैं, जिनके बारे में कम जानकारी है। धनीराम टोटो, जो दशकों से टोटो (डेंगका) भाषा का संरक्षण और प्रचार कर रहे हैं और इस गम्भीर रूप से लुप्तप्राय भाषा की एक स्क्रिप्ट भी विकसित कर चुके हैं; खिलौने बनाने वाले सी.वी. राजू, जो स्थायी डाई के उपयोग की 500 साल पुरानी परम्परा को बनाए रखते हुए उसे पुनर्जीवित कर रहे हैं; या 80 वर्षीय संतूर शिल्पकार गुलाम मुहम्मद ज़ाज़, जो अपनी पारिवारिक परम्परा को आठवीं पीढ़ी में आगे बढ़ा रहे हैं– ऐसे लोग जो लुप्त होते कला रूपों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं और जिन्होंने हमारी विरासत को संरक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है, उन्हें भी सरकार द्वारा मान्यता दी गई है।

इस साल पद्म पुरस्कारों की गूँज वामपंथी उग्रवाद- प्रभावित इलाकों में भी सुनाई दे रही है। कांकेर में बन्दियों के पुनर्वास के लिए उन्हें लकड़ी पर नक्काशी का हुनर सिखाने वाले अजय कुमार मंडावी और गढ़चिरौली की झाडीपट्टी रंगभूमि का इस्तेमाल पुनर्वास सहित सामाजिक कार्यों के लिए करने वाले परशुराम कोमाजी खुणे को गुमराह युवाओं को पुनर्निर्देशित करने और देश के विकास की दिशा में काम करने में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए यह प्रतिष्ठित सम्मान मिला है।

विजेताओं की सूची इस बात का स्पष्ट संकेत है कि ये प्रतिष्ठित नागरिक पुरस्कार अब कुछ लोगों के लिए आरक्षित नहीं हैं। विजेताओं की विशाल विविधता, समाज के सभी वर्गों और भारत जैसे विशाल देश के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है और वास्तव में प्रेरणादायक है। ऐसे समय में, जब देश अपने स्वतंत्रता आन्दोलन के गुमनाम नायकों का गुणगान कर रहा है, वर्तमान समय के उन अज्ञात नायकों को पहचान और सम्मान देना भी महत्त्वपूर्ण है, जिन्होंने किसी इनाम की उम्मीद किए बिना नि:स्वार्थ भाव से अपने समुदायों और समाज के लिए जीवन समर्पित कर दिया। हमारे लोकतंत्र के सर्वोच्च नागरिक सम्मान–पद्म पुरस्कार, आज केवल पुरस्कार मात्र नहीं हैं, वे आम नागरिकों के असाधारण कारनामों की पहचान हैं, संस्कृति, कौशल, विचारों और कार्यों की आश्चर्यजनक विविधता का सम्मान हैं, जो हमारे राष्ट्र के ताने-बाने को बुनती है।

पद्म पुरस्कार
विजेताओं के शब्दों में...

"मैं भारत सरकार का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने इतने बड़े पुरस्कार के लिए मुझे चुना। अपने समुदाय के किसी व्यक्ति को ऐसा सम्मान मिलता देख, तोतोपारा गाँव के निवासियों में ख़ुशी की लहर उत्पन्न हुई है।"

धनीराम टोटो, पश्चिम बंगाल, साहित्य और शिक्षा

"जब मैं स्कूल में था, तब मैंने लिखने का शौक विकसित किया। मेरे इस जुनून को आप 'हो कुड़ी' उपन्यास के नाम से जानते हैं। मैंने यह उपन्यास हो समुदाय के उत्थान के लिए लिखा था। मैं अपनी खुशी बयाँ नहीं कर सकता कि भारत सरकार ने मुझे पद्म श्री से नवाज़ा है। इससे क्षेत्रीय भाषाओं में लिखने वाले लेखकों को प्रोत्साहन मिलेगा।"

डॉ. जनम सिंह सोय, झारखंड, साहित्य और शिक्षा

"मैंने अपने माता-पिता को कम उम्र में खो दिया था, जिसके कारण मेरा बचपन मुश्किलों भरा रहा, लेकिन मेरी दादी ने मुझे ईमानदार और दयालु होना सिखाया। जब मैं खेतों में मज़दूर के रूप में काम करती थी तो मैं हमेशा कुछ ऐसा करने के बारे में सोचती थी जिससे सभी को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। तब मैंने महिला सखी मंडल बनाकर खाद बनाने, मवेशी पालने जैसे कामों के माध्यम से सभी के लिए आय के नए स्रोत बनाने शुरू किए। मुझे पद्म पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए मैं भारत सरकार के प्रति कृतज्ञ हूँ। इसने मुझे समाज के उत्थान और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखने के लिए प्रेरित किया है।"

हीराबाई लोबी, गुजरात, सामाजिक कार्य

झाडीपट्टी रंगभूमि की एक अलग पहचान है, एक अलग संस्कृति है। मैं 50 साल से इस क्षेत्र में काम कर रहा हूँ। मुझे पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए मैं भारत सरकार का आभारी हूँ। यह गौरव की बात है कि लोक रंगमंच झाडीपट्टी के एक कलाकार को यह सम्मान मिला है।

परशुराम खुणे, महाराष्ट्र, कला

"मैं 50 साल से जेनेटिक्स के क्षेत्र में काम कर रहा हूँ। भारत जैसे देश में जेनेटिक्स एक महत्त्वपूर्ण विषय बन जाता है, क्योंकि हर साल लगभग 26 मिलियन जन्म होते हैं। कोई-न-कोई बच्चा किसी-न-किसी अनुवांशिक समस्या से ग्रस्त होता है, इसलिए उसे मदद की ज़रूरत होती है। पहले मेरे दोस्त मुझे विदेश जाने और काम करने के लिए कहते थे, लेकिन मैं काम करता रहा और लोगों की मदद करता रहा। जब मुझे कड़ी मेहनत के लिए पद्म श्री मिला तो मैं खुश था। इसने जेनेटिक्स के क्षेत्र को भी पहचान दिलवाई है। एक बेहतर भारत बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने वाले अन्य लोगों को भी प्रोत्साहन मिला है, क्योंकि उन्होंने महसूस किया है कि उनके प्रयासों को आगे पहचाना जाएगा। 'मन की बात' में मेरा नाम शामिल करने के लिए मैं प्रधानमंत्री का आभारी हूँ।"

डॉ. ईश्वर चन्द्र वर्मा, दिल्ली, औषधि

"यह पद्म श्री सम्मान सिर्फ़ मेरे लिए नहीं है, यह कश्मीर के लिए सम्मान है। मुझे यह पुरस्कार देकर मेरी कला को पहचानने के लिए मैं भारत सरकार का आभारी हूँ।"

गुलाम मो. ज़ाज़, जम्मू और कश्मीर, कला

पद्म पुरस्कार विजेताओं से 'पीपुल्स पद्म' के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

राष्ट्र निर्माताओं को सम्मानित करता 'पीपुल्स पद्म'

अशोक मलिक

सदस्य, पद्म पुरस्कार समिति 2022,

अध्यक्ष (भारत), एशिया समूह

2014 के बाद की अवधि में भारत की उल्लेखनीय विशेषताओं में एक हमारे समाज के लोकतंत्र की जड़ों को मज़बूत करने का दृढ़ प्रयास है। ज़मीनी-स्तर पर उपलब्धियों का वास्तविक सम्मान करते हुए पद्म पुरस्कारों का, 'पीपुल्स पद्म' में रूपांतरण, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने इन पुरस्कारों की नए सिरे से परिकल्पना की है। इसने पद्म पुरस्कार प्रदान करने की प्रक्रिया को लॉबीइंग और सत्ता के गलियारों की सिफारिशों तथा प्रभाव से मुक्त कर प्रयासों, उपलब्धियों और अस्तित्व को महत्त्व दिया है।

पद्म प्रक्रिया की संरचना और तरीके को समझना महत्त्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री के पदभार ग्रहण करने तक पद्म पुरस्कार बहुत ही संकीर्ण सहमति से तय किए जाते थे। पुरस्कार विजेताओं के नाम केन्द्रीय मंत्रालय, राज्य सरकारें और सांसद भेजते थे। भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए यह बहुत छोटा समूह था, जो लम्बी सूची तैयार कर उसमें से नामों का चयन करता था और अन्तिम विजेताओं का फैसला करता था।

यह कितना व्यावहारिक था कि पद्म पुरस्कार के लिए दिल्ली या मुम्बई में अपने रोगियों के रूप में वरिष्ठ राजनेताओं और सिविल सेवकों के साथ अच्छे सम्बन्धों वाले चिकित्सा विशेषज्ञ के नाम पर, उस व्यक्ति की तुलना में विचार करने की अधिक सम्भावना होती थी, जिसने ग्रामीण क्षेत्र में ग़रीबों की नि:स्वार्थ सेवा कर सार्वजनिक स्वास्थ्य में योगदान दिया था। बराबरी का कोई आधार नहीं था।

प्रधानमंत्री ने नामांकन प्रक्रिया को सभी के लिए खोल दिया। आज स्व-नामांकन सहित नामांकन वेबसाइट पर अपलोड किए जा सकते हैं। नामांकित लोगों की सूची सब देख सकते हैं। ऐसे में, जब पद्म पुरस्कार समिति विचार-विमर्श के लिए बैठती है, तो वह कुछ सौ नहीं, बल्कि हज़ारों नामों को परखने के बाद निर्णय लेती है।

राज्य सरकारों, ज़िला प्राधिकरणों, नागरिक समाज संगठनों और आम नागरिकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अब तक गुमनाम रहे अपने नायकों की पहचान करें, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया है, लेकिन सुर्खियों से दूर रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से कम प्रतिनिधित्व वाले राज्यों और क्षेत्रों के सम्भावित पद्म विजेताओं को उजागर करने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। अब मणिपुर, लक्षद्वीप, सिक्किम, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, मिज़ोरम और लद्दाख के लोगों का पद्म पुरस्कार विजेताओं में शामिल होना कोई आश्चर्य की बात नहीं रही, बल्कि अब यह एक नियमित विशेषता बन गई है।

2023 की सूची से चार नामों पर गौर करें। डोमर सिंह कुँवर, छत्तीसगढ़ी लोक रंगमंच कलाकार, जिन्होंने 13 भाषाओं और बोलियों में हज़ारों नाटकों का मंचन किया है, राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा दिया है और ग्रामीण भारत में अन्धविश्वास तथा बाल विवाह जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

गुलाम मुहम्मद ज़ाज़, कश्मीर के आठवीं पीढ़ी के संतूर शिल्पकार, एक ऐसे परिवार का हिस्सा हैं, जो पिछले 200 वर्षों से इस वाद्य यंत्र को बना रहा है।

के.सी. रनरेमसंगी, पिछले तीन दशकों से मिज़ो लोक गायिका और सांस्कृतिक प्रतिरूप में अपने राज्य में विख्यात हैं और समूचे भारत में प्रशंसा की पात्र हैं।

धनीराम टोटो, एक लेखक और लुप्तप्राय तिब्बती भाषा टोटो (डेंगका) के आजीवन उन्नायक तथा संरक्षक हैं तथा उन्होंने इसकी पहली पाण्डुलिपि की रचना की है।

ऐसी सम्भावना बहुत कम है कि आपने 2014 से पहले इनके बारे में पढ़ा होगा। यही कारण है कि हर साल 25 जनवरी को हम और अधिक प्रत्याशा के साथ पद्म सूची का इंतजार करते हैं। भारत के लोगों का स्वामित्व का अधिकार और उनके मनोभाव प्रधानमंत्री की पद्म क्रान्ति को परिभाषित करते हैं।

इंडिया
द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी

प्राचीनकाल से भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों का एक प्रदर्शन

भारत में लोकतंत्र एक प्राचीन, अनूठी और दीर्घकालीन परम्परा रही है जो कई सहस्राब्दियों से विकसित हुई है। इंडियन काउंसिल ऑफ़ हिस्टोरिकल रिसर्च (ICHR) द्वारा प्रकाशित की गई किताब, 'भारत: लोकतंत्र की जननी', भारतीय उपमहाद्वीप में लोकतंत्र की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डालती है।

30 अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखे गए 30 लेखों वाली यह पुस्तक अंग्रेज़ों के आगमन तक प्राचीन भारत की राजनीतिक संस्कृति के भीतर लोकतांत्रिक लोकाचार पर प्रकाश डालती है।

छह खंडों में विभाजित पुस्तक पुरातात्विक, संख्यात्मक, पुरालेखीय और साहित्यिक स्रोतों द्वारा प्रस्तुत पूर्व-आधुनिक भारत में लोकतंत्र के चिह्नों की पड़ताल और पुनर्निर्माण करती है।

पुस्तक में उल्लेख किया गया है कि कैसे सभा और समितियों जैसी आर्गेनिक इंस्टीट्यूशन्स में समाज के विभिन्न वर्गों के जनप्रतिनिधि शामिल थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे राजकीय कला पर प्रारम्भिक ऑथॉरिटेरियन टेक्स्ट्स इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे लोकतंत्र की भावना ने राजशाही के अधिकार को भी सीमाओं में बाँधा था। इस प्रकार प्राचीन भारत में लोकतंत्र के 'प्रजातांत्रिक' होने के अलावा 'जनतांत्रिक' और 'लोकतांत्रिक' आयाम भी थे।

यह पुस्तक ग्राम सभाओं और शहरी संघों के कामकाज के साहित्यिक और पुरालेखीय स्रोतों को ध्यान में रखते हुए पूर्व-आधुनिक भारत में प्रचलित स्वशासन के लोकतांत्रिक रूपों के संगठन और संचालन की भी जाँच करती है।

पुस्तक के बाद के खंड लोकतंत्र के उन सिद्धांतों और व्यवहारों पर प्रकाश डालते हैं जो कि प्राचीन भारत में राजनीतिक संगठन और प्रशासन की विभिन्न इकाइयों, जैसे जनपद, राज्य और गण में संचालित होते थे।

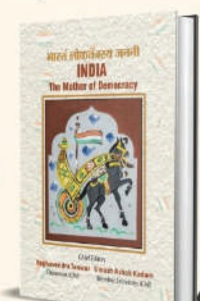

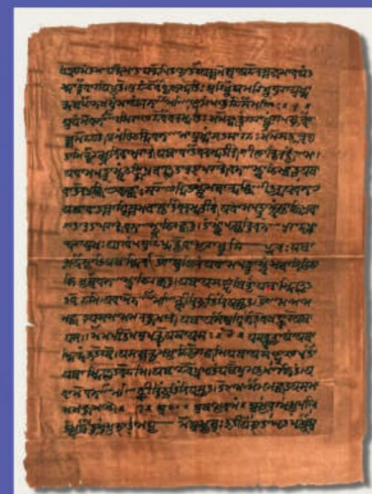

लिच्छवी जैसे प्राचीन गणराज्यों के कामकाज में सार्वभौमिक मताधिकार, आम सभा, मतदान के नागरिक अधिकार, विचार-विमर्श और अपील जैसी विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

पुस्तक का एक अन्य खंड 'लोक' या लोक और समुदाय के स्तर पर विचारों और प्रथाओं से भी सम्बन्धित है। सामुदायिक जीवन और सत्ता का विकेन्द्रीकरण समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रवेश का सूचक है। पूरे उपमहाद्वीप में रहने वाले जनजातीय समुदायों के बीच स्वशासन का तरीका भी चलन में था।

देश की आध्यात्मिक संस्कृति में लोकतान्त्रिक भावना को बढ़ावा देने में भक्ति आन्दोलन की भूमिका तथा सिख पंथ में व्याप्त इसी भावना की भी विस्तार से चर्चा की गई है।

पुस्तक का अंतिम खंड भारतीय उपमहाद्वीप में लोकतंत्र की स्वदेशी धारणाओं और व्यवहार पर उपनिवेशवाद के प्रभाव से सम्बन्धित है।

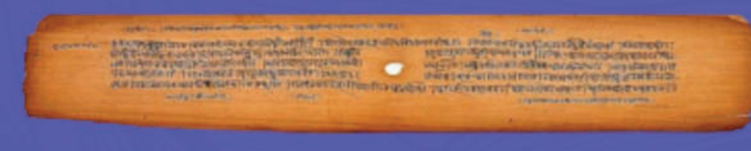

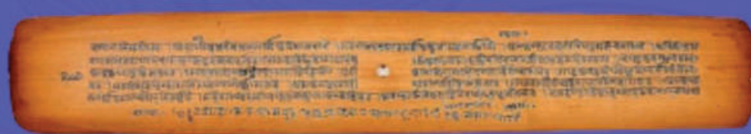

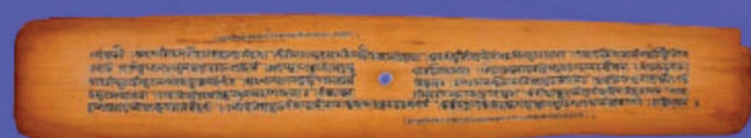

भारत का जीवंत लोकतंत्र - विश्व का मार्गदर्शक

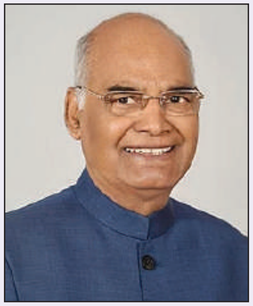

रामनाथ कोविन्द
पूर्व राष्ट्रपति

सबसे बड़ा और विविधरूपी लोकतंत्र भारत, विश्व के लिए उज्ज्वल उदाहरण है। आधुनिक ही नहीं, बल्कि हमारा प्राचीन इतिहास भी हमें हमारी सभ्यता में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सचेत करता है।

26 जनवरी, 1950 को लागू किए गए भारतीय संविधान के साथ ही लोकतांत्रिक गणतंत्र की नींव पड़ी थी। हालाँकि, हमारे राष्ट्र में लोकतांत्रिक आधार की जड़ें गहरे में प्राचीन अतीत तक जाती हैं। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) द्वारा हाल में प्रकाशित एक पुस्तक, 'इंडिया : द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी' सविस्तार हमारी प्राचीन और आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था पर विमर्श करती है। पुस्तक यह भी बताती है कि लोकतंत्र की व्यापक अवधारणा के मूल सिद्धान्त कैसे गठित और विकसित हुए थे।

भारत में गणराज्यों का उत्कृष्ट इतिहास मिलता है। 2,500 वर्ष पूर्व भारत में लिच्छवी तथा शाक्य जैसे चुनाव आधारित गणराज्य फलते-फूलते थे। 10वीं सदी के उत्तिरमेरूर के शिलालेखों में लोकतांत्रिक सहभागिता की यही भावना प्रतिबिम्बित होती है।

भारतीय उपमहाद्वीप की सामाजिक व्यवस्था में ऐसे प्रमाण, हमारे देश के लोकतांत्रिक डीएनए की बनावट के अप्रतिम साक्ष्य हैं। जब हम लोकतंत्र की बात करते हैं, तो हमें ध्यान रखना होगा कि विश्व के अनेक राष्ट्रों से अलग, भारत की विकास यात्रा लाखों वर्षों की रही है, परन्तु समावेशिता, समानता और सद्गुणी आचरण के इसके गुण आज तक अपने स्थान पर कायम हैं और हमारे संविधान का भी हिस्सा हैं।

अपने आरम्भिक वर्षों में मैं एक छोटे से गाँव में रहता था और भारत अभी आज़ाद ही हुआ था, उस समय देश के लिए देखे जा रहे हज़ारों सपनों की तरह मेरा भी एक सपना था कि एक दिन मैं भी सार्थक रूप से राष्ट्र-निर्माण का हिस्सा बनूँ। यह भारतीय लोकतंत्र की सशक्तता का ही प्रमाण है कि कच्चे घर में रहने वाले उस युवा को एक दिन भारतीय गणतंत्र के सर्वोच्च संवैधानिक कार्यालय को सम्भालने का अवसर मिला। आज प्रत्येक नागरिक मिलकर हमारी साझा नियति को नवीन रूप देने का कार्य कर रहा है, यह हमारे जीवंत लोकतांत्रिक संस्थानों की अन्तर्निहित शक्ति के कारण ही सम्भव हो रहा है।

हमारे संविधान में प्रतिष्ठापित स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के त्रिकोण को केवल कल्पना मात्र मानना गलत होगा। उनकी मौलिकता का प्रमाण हमारा इतिहास देता है; उन्हें मूर्तरूप

दिया जा सकता है और बेशक विभिन्न कालखण्डों में उन्हें मूर्तरूप दिया जाता रहा है। हमारे पूर्वज उदाहरण सहित उनके अर्थ समझाते रहे हैं और मुझे खुशी है कि मौजूदा सरकार उन्हीं के पदचिह्न पर चल रही है।

यह सरकार 'अंत्योदय' के मंत्र पर विश्वास रखती है, जिसका अर्थ है, सबके लिए सामाजिक, राजनीतिक समानता और एक समान अवसर। अपनी जनाधारित नीतियों को प्राथमिकता देकर यह सरकार, गाँवों के साथ-साथ, निर्धन वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजातियों तथा पिछड़ा वर्ग को सशक्त करने की दिशा में खुद संविधान के आदर्शों को मज़बूती प्रदान कर रही है। आज अनेक ऐसे नए कानून बनाए जा रहे हैं, जिन तक आम नागरिकों की पहुँच आसान हो सके।

सरल जीवनशैली की उपलब्धता के अलावा हमें आज भारत में 'जनभागीदारी' की अभूतपूर्व मिसाल दिखाई दे रही है। कोरोना वायरस महामारी के दौरान हमें समाज के हर क्षेत्र से लोगों द्वारा लोकतांत्रिक मूल्यों, अनुशासन और ज़िम्मेदारी निभाने के प्रति गम्भीरता देखने को मिली थी। लोकतंत्र की असली आत्मा जनभागीदारी में तथा विकास यात्रा से लोगों को जोड़ने में निहित होती है और यह सरकार इसी लक्ष्य को प्राप्त कर रही है। आखिर, कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों से मिलकर बनता है और हम सब भारत को बेहतर बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं।

ऐसे समय, जब भारत 'अमृत काल' में पहुँच चुका हो, प्रत्येक भारतीय की संकल्प-शक्ति देश के उज्ज्वल भविष्य को असीम विश्वास से भर देती है। अपने जीवंत लोकतंत्र के साथ, भारत ने सच ही एक ज़िम्मेदार एवं भरोसेमंद राष्ट्र के तौर पर सम्मान प्राप्त किया है।

'अमृत काल' के समय भारत को G20 का नेतृत्व प्राप्त होना, लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण के लिए विकसित देशों को विश्व के सबसे प्राचीन लोकतंत्र द्वारा मार्गदर्शन दिए जाने का बड़ा अवसर है। अतः उम्मीद की जानी चाहिए कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विकास के अवसर समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचेंगे।

एस. एम. कृष्ण
कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री

लोकतंत्र: भारतीय सभ्यता की आधारशिला

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और भारत की सिलिकॉन वैली के निर्माता, महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल और पद्म विभूषण से सम्मानित एस. एम. कृष्ण ने भारत और इसके प्राचीन लोकतांत्रिक मूल्यों पर अपने विचार साझा किए कि किस प्रकार हमारे ये मूल्य, प्रधानमंत्री के प्रयासों के साथ मिलकर भारत को एक शक्ति बना रहे हैं।

भारत का सम्बन्ध एक प्राचीन भव्य सभ्यता से है और उसी सभ्यता ने इसे बनाए रखा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'अनुभव मंटप' की अवधारणा का विस्तार करना चाहते हैं, जो वास्तव में हमारे देश में पहली प्रतिनिधि संसद थी। अनुभव मंटप की परिकल्पना में, समाज के हर कौशल और समाज के हर व्यक्ति का प्रतिनिधित्व शामिल है।

अनुभव मंटप की इस अवधारणा को युवाओं को समझाने और उनके व्यवहार में आत्मसात करने के प्रयास किए जा रहे हैं। हम उन मूल्यों को फिर से तलाशने की कोशिश कर रहे हैं, जो भारत के प्रतीक रहे हैं और जिस तरह से मीडिया इस पर बल दे रहा है, उससे मुझे यकीन है कि युवा इसे जल्द ही समझ लेंगे। प्रधानमंत्री ने युवाओं को एक नया मक़सद भी दे दिया है। उन्होंने उन्हें आगे बढ़ने के विभिन्न अवसर दिए हैं और मुझे लगता है कि युवाओं को प्रधानमंत्री के विभिन्न कार्यक्रमों का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए।

हम भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष मना रहे हैं और भारत ने सभी मानकों की दृष्टि से अत्यन्त बढ़िया प्रदर्शन किया है। मैं प्रधानमंत्री के प्रयासों की सराहना करता हूँ और उनका आभार व्यक्त करता हूँ। हमने जिस तरह की प्रगति की है, देश उसे हैरत से देख रहा है। आज

भारत विश्व का अग्रज बन गया है। आज विश्व का हर नेता अपने-अपने क्षेत्र में भारत के सुझाव चाहता है। भारत इस हद तक एक शक्ति बन चुका है।

भारत के लिए G20 देशों के समूह के नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त होना एक बड़ा सम्मान है, क्योंकि G20 एक ऐसा मंच है, जिसमें शक्तिशाली राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व है और उस समिति में भारत का प्रवेश गर्व और दृढ़ विश्वास के साथ हुआ है। भारत को अन्य लोगों, अन्य देशों का अध्ययन करके लाभ मिलेगा और इससे यह स्वयं समृद्ध होगा। सीखना एक यात्रा है। सीखने का कोई अन्त नहीं है। भारत सीख रहा है और साथ ही सिखा भी रहा है। मैं भारत के राजनीतिक इतिहास के इस गौरवशाली अध्याय के लिए प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री एस. जयशंकर को बधाई देना चाहता हूँ।

एस.एम. कृष्ण का भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों पर और क्या कहना है, यह जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

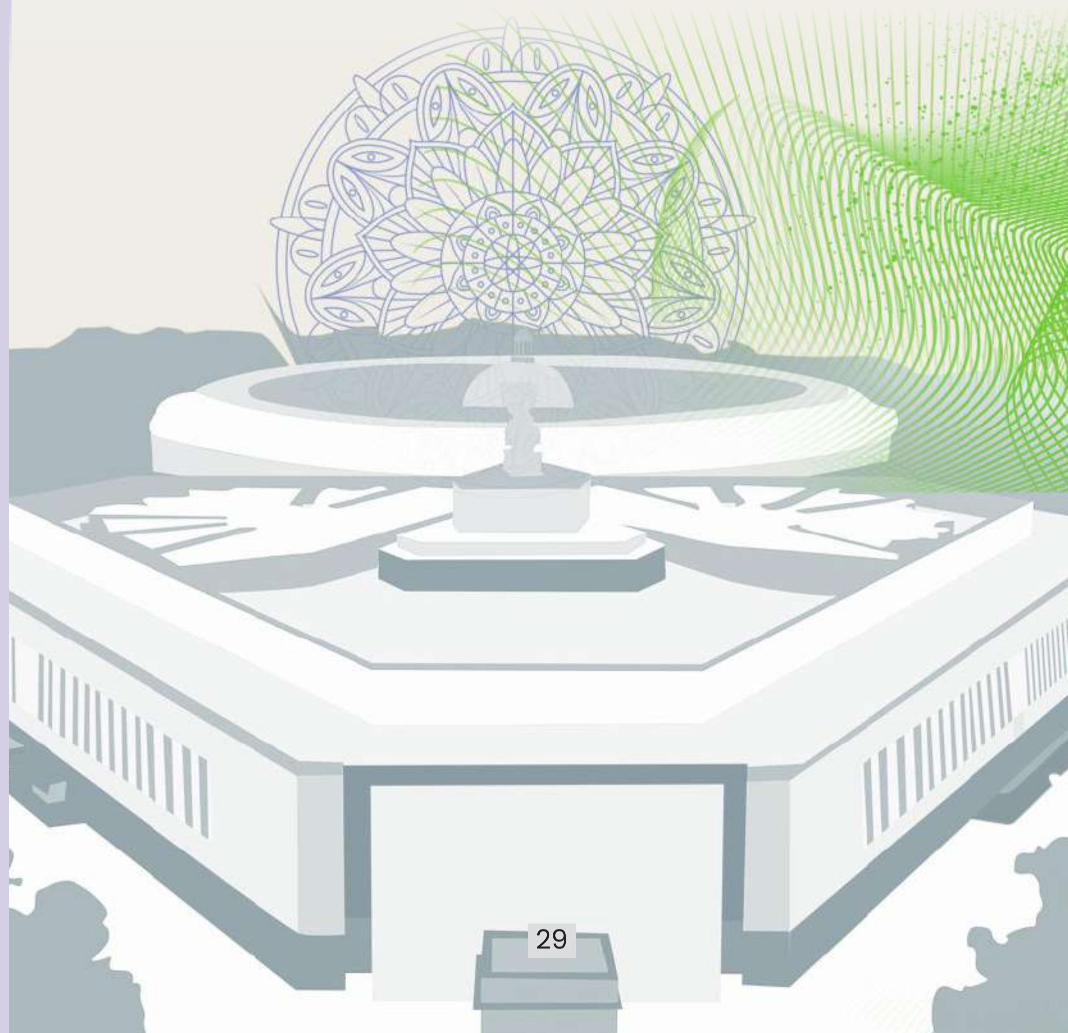

कपिल कपूर

पूर्व प्रो-वाइस चांसलर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

अनादि काल से भारत लोकतंत्र की जननी

लोकतंत्र सदियों से भारत का अविभाज्य अंग रहा है। हम वो समाज हैं जहाँ बारिश के मौसम में चींटियों को आटा और चीनी दी जाती है, एक ऐसा समाज जहाँ हर दिन एक रोटी जानवर के लिए, एक साधु के लिए और एक मेहमान के लिए बनाई जाती है; यह साबित करता है कि हम बिना प्रयास किए लोकतांत्रिक हैं। भारत में लोकतंत्र इतनी पुरानी प्रथा थी कि भारत के लोग स्वतंत्रता के बाद आसानी से इसे अपना सके।

प्राचीनकाल से ही भारत में लोकतांत्रिक जड़ें होने के प्रमाण और भारतीयों की रगों में दौड़ रहे लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रकाश में लाने की ज़रूरत को पूरा करने के लिए ही 'भारत-लोकतंत्र की जननी' किताब की शुरुआत हुई।

यह पहली पुस्तक है जिसमें कहा गया है कि लोकतंत्र का स्रोत पश्चिमी संस्कृति में नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति में है। पश्चिमी लोगों का दावा है कि लोकतंत्र की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीस में हुई थी, जब एक प्रसिद्ध विचारक अरस्तु ने 'पॉलिटिक्स' नामक एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप के बारे में बात की थी। इसी प्रकार उनके गुरु प्लेटो ने भी 'रिपब्लिक' नाम से एक संवाद लिखा, जिसका अपने आप में अर्थ सरकार का लोकतांत्रिक रूप है। हालाँकि वास्तविक तथ्य यह है कि प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज लोकतांत्रिक था।

लोकतंत्र और डेमोक्रेसी में अन्तर है। डेमोक्रेसी – डेमो यानि के लोगों द्वारा स्थापित एक नियम है, इसलिए लोकतंत्र एक राजनीतिक व्यवस्था है। भारत में डेमोक्रेसी के समकक्ष शब्द प्रजातंत्र है, जो के एक राजनीतिक शब्द है। कोई राज्य/देश प्रजातांत्रिक हो सकता है, वहाँ चुनाव और वोटिंग हो सकती है, लेकिन हो सकता है कि उस समाज में सद्भावना या समानता न हो। पश्चिमी दुनिया के इस आम मिथक को दूर करने के लिए कि डेमोक्रेसी और लोकतंत्र एक ही हैं, एक किताब लिखने और लोगों को इस अन्तर के बारे में बताने के साथ-साथ यह साबित करने का विचार हुआ कि प्राचीनकाल से लोकतंत्र भारत में ग्रीस के पहले भी अस्तित्व में था और यह भारतीय परम्परा का हिस्सा रहा है।

यह पुस्तक बताती है कि भारत में प्रजातंत्र शब्द ने लोकतंत्र का स्थान क्यों लिया। लोकतंत्र सिर्फ़ इंसानों के बीच ही नहीं, बल्कि हर जीव के बीच भी समानता की बात करता है। उदाहरण के लिए, कोई अन्य सभ्यता नहीं है जो भारत के प्राचीन जैन धर्म के मूल्यों की बराबरी कर सके। उनका साहित्य कहता है कि नदी के बहाव को रोकना या पेड़ को बढ़ने से रोकना, दोनों हिंसा के बराबर है। बहना एक नदी का और बढ़ना पेड़ों का अधिकार है। तो यह मूल्य कि प्रत्येक जीव स्वतंत्र है, यही लोकतंत्र है। प्रजातंत्र लोकतंत्र का ही एक रूप है। इसी बात पर प्रकाश डालने की आवश्यकता महसूस कर, ICHR के विशेषज्ञों के सहयोग से इस पुस्तक की शुरुआत की गई।

'भारत-लोकतंत्र की जननी' पुस्तक 'लोकतंत्र' की विरासत पर भी प्रकाश डालती है। पाणिनि द्वारा लिखित लगभग 2800 वर्ष पुराना साहित्य 'अष्टाध्यायी' जनपद, गणतंत्र और राज्यतंत्र के अस्तित्व की बात करता है। यह जनों को समर्पित एक प्रणाली के अस्तित्व की ओर इशारा करते हुए एक श्रेणीबद्ध प्रणाली को दर्शाता है। लगभग 300 ई.पू.-700 ई.पू. हिमालय क्षेत्र में निवास करने वाली सभी जनजातियाँ लोकतांत्रिक थीं। अष्टाध्यायी और ऋग्वेद भी पठानों (ऋग्वेद में पख्ता), बलूचियों (ऋग्वेद में बलिना), अफरीदी (ऋग्वेद में अप्रिता) जैसी जनजातियों के बारे में बात करते हैं जो सभी लोकतांत्रिक थे। कोई भी बड़ा निर्णय लेने के लिए वे सभी एक साथ बैठते थे, जिसे 'जिरगा' के नाम से जाना जाता था। इसका दूसरा रूप कुछ वर्ष पूर्व तक सिखों में सरबत खालसा के रूप में पाया जाता है। ऋग्वेद सभा और समितियों की बात भी करता है। उन दिनों समुदाय स्वशासित थे, वे आत्मनिर्भर थे।

पुस्तक का एक अन्य भाग आदिवासी समाज के बारे में बात करता है। आज भी विशेष रूप से भारत के उत्तरपूर्वी भाग की खासी और जयंतिया जैसी जनजातियाँ अभी भी लोकतांत्रिक तरीके से अपना निर्णय लेती हैं।

इस पुस्तक को तैयार करते समय प्राचीन भारत में लोकतंत्र की धार्मिक प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया था। जैन, बौद्ध और सिख धर्म में लोकतंत्र के उद्धरणों पर प्रकाश डाला गया है। उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म में संघ का कॉन्सेप्ट हुआ करता था। भिक्षु विहार में एक साथ रहते थे, जहाँ वे विहारों के कामकाज़ और प्रशासन को देखने के लिए अपने में से एक व्यक्ति को चुनते थे। बैठकें आयोजित की जाती थीं जिसमें प्रशासक उन प्रस्तावों की घोषणा करता था जो उसे प्राप्त हुए थे और सभी भिक्षुओं को अपनी आपत्तियाँ, यदि कोई हो, उठाने के लिए एक मंच दिया जाता था। केवल आपत्तियों के अभाव में प्रस्तावों को अमल किया जाता था। ऐसी स्थिति में जहाँ दो विपरीत प्रस्ताव होते थे और निर्णय लेना कठिन होता था, प्रशासक भिक्षुओं के बीच मतदान करवाता था। दक्षिण भारत का उत्तिरमेरूर शिलालेख भी दक्षिण भारत में एक मतदान प्रणाली के अस्तित्व को दिखाता है।

आधुनिक राजनीति विज्ञान में आज छात्र इन लोकतांत्रिक तरीकों के बारे में पढ़ते हैं, लेकिन भारत में यह सब आदि काल से मौजूद है। भारत में, लोकतंत्र एक पुरानी प्रथा है, और इस पुस्तक के माध्यम से हमने लोकतंत्र के वास्तविक सार को सामने लाने का प्रयास किया है और साथ ही बताया है कि कैसे भारतीय, युगों पहले से, लोकतंत्र से अच्छी तरह परिचित रहे हैं, जिससे यह साबित होता है कि वास्तव में भारत लोकतंत्र की जननी है।

रघुवेन्द्र तंवर

अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान संस्थान

‘इंडिया : द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी’ इतिहास वर्णन का अन्तराल पाटने का प्रयास

हाल ही में, भारतीय इतिहास अनुसन्धान संस्थान (ICHR) द्वारा प्रकाशित पुस्तक ‘भारत: लोकतंत्र की जननी’ हमारी सभ्यता के लोकतांत्रिक लोकाचार पर प्रकाश डालती है। संस्थान के अध्यक्ष, रघुवेन्द्र तंवर ने इस पुस्तक के बारे में अपने विचार साझा किए।

‘इंडिया: द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी’ नामक पुस्तक हिस्टॉरिकल नैरेटिव को सही करने और उसके गैप्स फ़िल करने का एक प्रयास है। प्रधानमंत्री लम्बे समय से कहते आ रहे हैं कि इतने प्राचीन देश के लिए यह विडम्बना ही है कि अंग्रेज़ों ने 200 वर्ष में इसके हिस्टॉरिकल नैरेटिव को पूरी तरह से बदल दिया। इस देश को उसकी जड़ों से काट दिया गया और दस हज़ार साल की प्राचीन परम्परा वाला देश भुला दिया गया। हम अपनी संस्कृति भूल गए और अपनी आध्यात्मिकता से कट गए। भारत का एक बदला हुआ चेहरा दुनिया के सामने पेश किया गया।

यह पुस्तक भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) से जुड़े 30 लेखकों का एक प्रयास है, ताकि दुनिया को यह बताया जा सके कि हम दस हज़ार साल पुरानी एक अनूठी सभ्यता हैं। अनेक मतभेद हैं, लेकिन एक सहज सम्बन्ध भी है– हम अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हैं।

श्री अरविन्दो कहते थे कि हिमालय से लेकर सागरों तक हम एक सभ्यता हैं। हम वास्तव में एक राजनीतिक इकाई हैं, लेकिन इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम एक सभ्यतागत राष्ट्र हैं।

जहाँ तक प्रश्न लोकतंत्र का है, तो यह इस पुस्तक के मर्म में है। प्रधानमंत्री ने बार-बार कहा है कि लोकतंत्र हमारी रगों में है, यह हमारे ख़ून में है। लोकतंत्र हम पर थोपा नहीं गया है। यह तो एक वृक्ष की भाँति हमारे देश में विकसित हुआ और निरंतर समृद्ध हो रहा है। इस पुस्तक में इन्हीं सब विषयों पर चर्चा की गई है।

लोकतंत्र का मूल सिद्धान्त आम सहमति और समानता है। इन सब का वर्णन, भारत की 5,000 से 6,000 वर्ष पुरानी सभ्यताओं में मिलता है। उस काल में संचालित होने वाली ऐसी कई सभाओं और समितियों का वर्णन हमारे वैदिक ग्रंथों में है। भारत में हज़ारों साल पुराने गाँव हैं, जहाँ आज भी आम सहमति बनाना सर्वोपरि माना जाता है; जिसे अब हम पंचायती व्यवस्था कहते हैं। हमारे आदिवासी समाज हैं और पूरी दुनिया जानती है कि हमारे आदिवासी समाज ऐसी ही व्यवस्था पर निर्भर थे।

‘इंडिया: द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी’ पर हमने जुलाई 2022 में काम शुरू किया था। पुस्तक में 5 से 6 विषयगत खण्ड हैं। विशेष बात यह है कि हमने इस पुस्तक में ऋग्वैदिक काल से लेकर औपनिवेशिक काल तक के लेख सम्मिलित किए हैं। इनमें देश के विभिन्न कोनों के आदिवासी समाज और ग्रामीण समाज, प्राचीन वैदिक और उत्तर-वैदिक समाज, मध्ययुगीन काल और इन विभिन्न काल के दौरान समाज में लोकतंत्र किन विभिन्न रूपों में फलाफूला, इस बारे में कई लेख हैं।

देश के इतने महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम ‘मन की बात’ में प्रधानमंत्री का ‘इंडिया: द मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी’ पुस्तक का उल्लेख करना, ICHR के लिए एक बड़ी बात है। मुझे तो आश्चर्य होता है कि प्रधानमंत्री अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच किताबें पढ़ने का समय कब और कैसे निकाल लेते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने सम्बोधन में किताब के लगभग 5-6 अध्यायों का बड़े विस्तार से उल्लेख किया था।

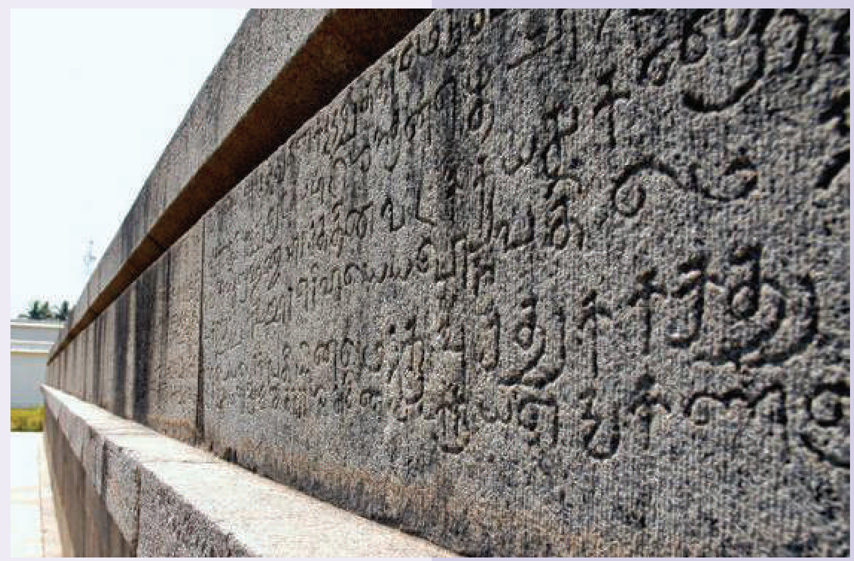

उत्तिरमेरूर शिलालेख, तमिलनाडु

पर्पल फ़ेस्ट, गोवा
भारत का पहला समावेशी उत्सव

PURPLE FEST

पर्पल फ़ेस्ट के बारे में:

पर्पल फ़ेस्ट अपनी तरह का पहला, समावेशी उत्सव है। इसका आयोजन दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राज्य आयुक्त कार्यालय, गोवा के समाज कल्याण निदेशालय और गोवा के खेल प्राधिकरण के सहयोग से किया गया। इस उत्सव में पैनल चर्चा, कलात्मक लाइव प्रदर्शन, भव्य प्रदर्शनियाँ, इमर्सिव एक्सपीरियंस जोन और बहुत कुछ शामिल है।

'मन की बात' के अपने हालिया एपिसोड में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसकी सफलता के पीछे लोगों के प्रयासों की सराहना की और सुलभ भारत के विज़न को साकार करने के लिए ऐसे अभियानों में विश्वास व्यक्त किया।

पर्पल क्यों?

हाल के वर्षों में, रंग पर्पल दिव्यांगता से जोड़ा गया है, जो कार्यबल और व्यापक समुदाय में दिव्यांग व्यक्तियों के योगदान के बारे में एक नई सकारात्मक कथा का प्रतीक है।

पर्पल फ़ेस्ट का उद्देश्य यह दिखाना है कि कैसे हम सभी के लिए एक समावेशी दुनिया बनाने के लिए एक साथ आ सकते हैं।

आयोजन

पर्पल रेन

प्रसिद्ध कलाकारों, संगीत समारोहों, नृत्य प्रदर्शनों और स्टैंड-अप कॉमेडी शो के लाइव प्रदर्शन के साथ, पर्पल रेन में सभी के लिए एक अच्छे समय की गारन्टी है!

पर्पल प्रदर्शनी

पर्पल प्रदर्शनी विज्ञान और कला दोनों क्षेत्र के चमत्कारी कार्यों को प्रस्तुत करती है। प्रदर्शनी में दिव्यांग व्यक्तियों द्वारा विकसित और विकसित नवीनतम सहायक उपकरण, उपकरण और उत्पाद प्रदर्शित किए गए।

पर्पल अनुभव क्षेत्र

पर्पल एक्सपीरियंस जोन ने एक दिव्यांगता के साथ जीवन को नेविगेट करने के अनुभव को प्रतिबिंबित करने के लिए डिज़ाइन की गई इमर्सिव गतिविधियाँ प्रदान कीं। चुनौतीपूर्ण बाधाओं से लेकर मददगार प्रगति तक, इस क्षेत्र ने सब कुछ कवर किया।

पर्पल फन

पक्षियों को देखने से लेकर नेत्रहीन कार रैली तक, पर्पल फन ने मामूली शुल्क पर गोवा के प्यारे समुद्र तटों, मन्दिरों और चर्चों का भ्रमण करके जीवन भर की यादें बनाने के लिए रोमांचक गतिविधियों और अवसरों की मेज़बानी की।

पर्पल थिंक टैंक

जब खुले दिमाग ईमानदार सम्वाद में संलग्न होते हैं, तो वे एक ऐसा स्थान बनाते हैं जो सुरक्षित और स्वागत योग्य हो। पर्पल थिंक टैंक में वार्ताओं और पैनल चर्चाओं की एक श्रृंखला शामिल है जिसमें दिव्यांग के लिए समावेशी शिक्षा और रोज़गार जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया था।

गुरुप्रसाद पावस्कर,
दिव्यांगजनों के लिए राज्य आयुक्त, गोवा सरकार

पर्पल फ़ेस्ट, भारत का पहला समावेशी कार्यक्रम हाल ही में गोवा में आयोजित किया गया था। हमने कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत के विभिन्न हिस्सों से आए दिव्यांग व्यक्तियों की बड़ी भागीदारी देखी। जब हमने इस कार्यक्रम की योजना बनाई थी तो हमने कभी नहीं सोचा था कि यह इतनी बड़ी सफलता होगी। पर्पल फ़ेस्ट में *50,000* से अधिक लोग आए और *3* दिनों के इस आयोजन में होने वाली विभिन्न गतिविधियों के साक्षी बने। प्री-इवेंट और इवेंट के *8* दिनों के दौरान विभिन्न राष्ट्रीय सम्मेलन हुए, जैसे डेफ-लाइन सम्मेलन और एक्सेस इंडिया सम्मेलन और कई दिलचस्प कार्यक्रम जैसे नेत्रहीन क्रिकेट टूर्नामेंट, एक राष्ट्रीय पैरा टेबल टेनिस चैम्पियनशिप और विभिन्न कार्यशालाएँ, जिन्हें दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन के प्रत्येक पहलू को कवर करते हुए खेल, रोज़गार, समावेशी शिक्षा के लिए आयोजित किया गया था। एक अनूठी बात यह थी कि हमारे पास दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम के अनुसार *21* दिव्यांगताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले पर्पल अम्बैसेडर थे। गोवा सरकार, मुख्यमंत्री, और समाज कल्याण मंत्री ने इस उत्सव का भरपूर समर्थन किया। प्रधानमंत्री ने पिछले सप्ताह अपने 'मन की बात' में पर्पल फ़ेस्ट का ज़िक्र किया था, जो हम सभी के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। यह अब हमारे कंधों पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है कि हम अत्यावश्यक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करें और दिव्यांग व्यक्तियों से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को सम्भालने के लिए एक उचित रास्ता खोजें। मुझे यकीन है कि आने वाले समय में गोवा सरकार पीडब्ल्यूडी के लिए विभिन्न नई योजनाओं को ला रही है। जैसाकि मैंने कहा कि पर्पल फ़ेस्ट की सफलता यहीं खत्म नहीं होती है, इसने हम पर इसे बड़ा और बेहतर बनाने की बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी है। यह भी ज़रूरी है कि अन्य राज्य भी इस मॉडल को दोहराएँ और प्रधानमंत्री के सुगम्य भारत के सपने को पूरा करें।

पर्पल फ़ेस्ट अम्बैसेडरों के शब्दों में

संतोष वाणी
हीमोफिलिया के लिए पर्पल अम्बैसेडर

"मैं गोवा हीमोफीलिया सोसायटी, पणजी का युवा नेता हूँ। हीमोफिलिया एक रक्त रोग है, जो क्लॉटिंग प्रोटीन की कमी के कारण रक्तस्राव का कारण बनता है। एक समुदाय के रूप में, हम हीमोफिलिया के रोगियों के लिए जागरूकता फैलाने का प्रयास करते रहते हैं और उचित उपचार और देखभाल के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं। हीमोफिलिया के पर्पल अम्बैसेडर के रूप में पर्पल फ़ेस्ट में भाग लेना एक अलग तरह का अवसर था। मुझे इतने बड़े पैमाने पर इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने का मौका मिला। भारत में पहली बार *21* दिव्यांगताओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए पर्पल फ़ेस्ट एक बेहतरीन मंच है। *50,000* से अधिक लोगों की उपस्थिति में मुझे विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के बारे में जानने और दुनिया भर के लोगों से मिलने का अवसर मिला। मैं समाज कल्याण मंत्री सुभाषफल देसाई, मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस तरह के समावेशी आयोजन की सफलता के लिए उनके मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।"

कुणाल ठाकुर
मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के लिए पर्पल अम्बैसेडर

"पर्पल फ़ेस्ट मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था। उत्सव के पहले दिन मीरामार समुद्र तट पर तैरने वाली व्हीलचेयर के बारे में बताया गया। मैं इसका अनुभव करने वाला पहला व्यक्ति था। यह एक बहुत ही रोचक क्षण था, क्योंकि अधिकांश समय दिव्यांगजन पानी का आनन्द नहीं ले पाते हैं। अब, मीरामार समुद्र तट को दिव्यांग समुदाय के लिए *100* प्रतिशत सुलभ समुद्र तट बना दिया गया है, साथ ही स्वरोज़गार पैदा करने पर भी ध्यान दिया गया। समारोह में एक ई-रिक्शा का भी शुभारम्भ किया गया, जिस पर व्हीलचेयर वाले लोग रैंप की मदद से आसानी से पहुँच सकें। कुल मिलाकर पर्पल फ़ेस्ट मस्ती से भरा रहा। बातचीत, नाटक, भाषण, संगीत और नृत्य से लेकर पक्षियों को देखने तक विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के साथ, सभी के लिए कुछ-न-कुछ था। दिव्यांगों के अधिकारों का समर्थन और प्रोत्साहन करने और हमारे लिए इस तरह के एक अद्भुत कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए मैं पर्पल फ़ेस्ट के पूरे संगठन का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं वास्तव में मानता हूँ कि पर्पल फ़ेस्ट का पहला संस्करण सिर्फ़ एक ट्रेलर था और आने वाले समय में हमारे लिए बहुत बड़ी चीज़ें इसके माध्यम से आएँगी, जिसके लिए मैं अभी से तत्पर हूँ।"

पर्पल फ़ेस्ट अम्बैसेडर्स के शब्दों में इस आयोजन के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

प्रमोद सावंत
मुख्यमंत्री, गोवा

भारत में समावेशिता को प्रोत्साहित करता पर्पल फ़ेस्ट

गोवा के लिए पर्पल फ़ेस्ट की यात्रा बेहद प्रेरणाप्रद रही है। इसके उद्भव से क्रियान्वयन तक, प्रत्येक पक्ष के बारे गहराई से सोचा गया है और अब, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अपने 'मन की बात' सम्बोधन में पर्पल फ़ेस्ट का उल्लेख करने के बाद तो इसे देश भर में अभूतपूर्व पहल के तौर पर माना जा रहा है।

हमारे समाज कल्याण मंत्री सुभाष फल देसाई और राज्य दिव्यांगजन आयुक्त गुरुप्रसाद पावस्कर द्वारा पर्पल फ़ेस्ट के विचार जानने से परिचित होने के पश्चात समारोह की नींव पड़ी थी। कार्यक्रम की अवधारणा और विचार के अनोखेपन को देखते हुए, मैंने तुरंत उसकी मंजूरी दे दी। चूँकि यह हमारे दिव्यांग साथियों को राष्ट्रीय स्तर पर उनकी प्रतिभा दिखाने का अनोखा अवसर है, इसलिए गोवा सरकार ने इस पहल को वार्षिक समारोह के तौर पर आयोजित करने की घोषणा की है और समाज कल्याण का केन्द्रीय सचिवालय अतिरिक्त अनुदान आदि के साथ इसे राष्ट्रीय आयोजन बनाने की मंशा रखता है।

पर्पल फ़ेस्ट का गोवा में आयोजन गोवावासियों के लिए बेहद गौरव का विषय रहा। आधिकारिक तौर पर कार्यक्रम 6 से 8 फरवरी के दौरान आयोजित किया गया, परंतु इसके आयोजन पूर्व की सरगर्मी आयोजन जितनी ही खुशनुमा रही थी। इसमें खेल, नेत्रहीन क्रिकेट, रंगमंच आयोजन, खाद्यान्न आयोजन, नेत्रहीनों के लिए सम्मेलन, चार राष्ट्रीय आयोजन, फैशन शो और अनेक वैयक्तिक गतिविधियों में 50,000 से अधिक लोगों ने सहभागिता की। इसके लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक के लोग आए थे। हमारे दिव्यांग भाइयों और बहनों के लिए यह आयोजन सचमुच समावेशिता के उत्सव के तौर पर रहा, जिसमें उन्हें न केवल राष्ट्रीय, बल्कि अन्तरराष्ट्रीय तौर पर अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर प्राप्त हुआ था।

उत्सव को सफल बनाने तथा पर्पल फ़ेस्ट को अभूतपूर्व सफलता दिलाने में संगठनिक समिति ने कोई कसर नहीं छोड़ी। कार्यक्रम आयोजन के लिए 1,000 स्वयंसेवकों ने दिन-रात काम किया और उन्हीं के कठोर श्रम के कारण इसे यह सफलता प्राप्त हुई। समूचे कार्यक्रम के दौरान, सामाजिक न्याय मंत्रालय ने दिव्यांगजनों को मुफ़्त उपकरण उपलब्ध कराए। उन्हें जिस भी उपकरण की आवश्यकता हुई, चाहे वह UDID कार्ड हों, व्हीलचेयर हो, आर्टिफिशियल हाथ हो या पैर, संगठन ने उसे पर्पल फ़ेस्ट में उपलब्ध कराया।

साथ ही प्रत्येक राज्य में संगठनों द्वारा किए जाने वाले कार्य, दिव्यांगजनों के लिए ऐसी संस्थाओं का संचालन करने वाले दिव्यांगजनों के खुद अपने कार्य देखने लायक थे। उनकी प्रतिभा, प्रोत्साहन और निष्ठा अद्वितीय थी, इसलिए ज़रूरी हो जाता है कि ऐसे कार्यक्रम आयोजित कराने के लिए राज्य सरकारें उनकी प्रतिभा और हुनर का इस्तेमाल करें। देश भर में इस क्षेत्र में काम करने वाली गैर-सरकारी संस्थाओं और संगठनों ने दिव्यांगजनों के लिए उनके द्वारा तैयार किए गए उपकरणों तथा इनोवेशन का प्रदर्शन किया था। दिव्यांगजनों के लिए एक फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया था और साथ ही दिव्यांगजनों के लिए चलाए जा रहे विशेष स्कूल के छात्रों के लिए भी एक शो का आयोजन किया गया था। उत्सव का प्रमुख लक्ष्य था कि समावेशिता के इस मंच पर लोग उनके बारे में जानें, उनसे सौहार्द जताते हुए उनकी प्रतिभा को सराहें और उनके लिए नए अवसर निर्मित करने में सहयोग दें। इस अवसर पर चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स ने स्व-रोज़गार तथा उनके यहाँ नौकरियों पर अपने विचार रखे तथा उनके लिए अलग से वर्कशॉप आयोजित की। इस क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाएँ, चाहे वह केरल से हों, या ओडिशा अथवा पश्चिम बंगाल से, आयोजन में उनके योगदान के लिए मैं उनका अभिवादन और धन्यवाद करता हूँ।

प्रधानमंत्री द्वारा विकलांग शब्द को हटाकर, दिव्यांग शब्द के इस्तेमाल से इस क्षेत्र के लिए सहयोग में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। इससे आमजन के बीच दिव्यांगजनों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। पर्पल फ़ेस्ट में उनके सहयोग तथा सराहना के लिए मैं प्रधानमंत्री को धन्यवाद देता हूँ। कार्यक्रम के पहले दिन, उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री ने हमें सराहना पत्र भेजा। इससे पहले राज्य के समुद्र तटों पर बनाई गई ह्यूमन चेन के माध्यम से हमने 104 कि.मी. लम्बे तट की साफ़-सफ़ाई की, जिसकी प्रधानमंत्री ने बेहद प्रशंसा की थी।

साथ ही मैं अन्य राज्यों और सरकारों से पर्पल फ़ेस्ट के विचार को उनके यहाँ कार्यान्वित करने की अपील करता हूँ, ताकि हमारा देश दिव्यांग भाइयों और बहनों के लिए अधिक समावेशी बने और प्रधानमंत्री के एक्सेसिबल इंडिया के विज़न का सपना साकार हो।

पर्पल फ़ेस्ट पर गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के विचार सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

भारत के टेक-ऐड का निर्माण करते

इनोवेटर्स

हम सभी जानते हैं कि 21वीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था में ज्ञान सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हमारे इनोवेटर्स और उनके पेटेंट के बल पर भारत के टेक-ऐड का सपना ज़रूर पूरा होगा। इससे हम सभी विश्वस्तरीय तकनीक और अपने देश में तैयार उत्पादों का पूरा लाभ उठा सकेंगे।

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

नवाचार को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई कुछ पहलें :

Impact:

5वीं ट्रेडमार्क में भारत की वैश्विक रैंक

7वीं पेटेंट दाखिल करने में भारत की वैश्विक रैंक

50% पिछले 5 वर्षों में पेटेंट की संख्या में वृद्धि

ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भारत की रैंक :

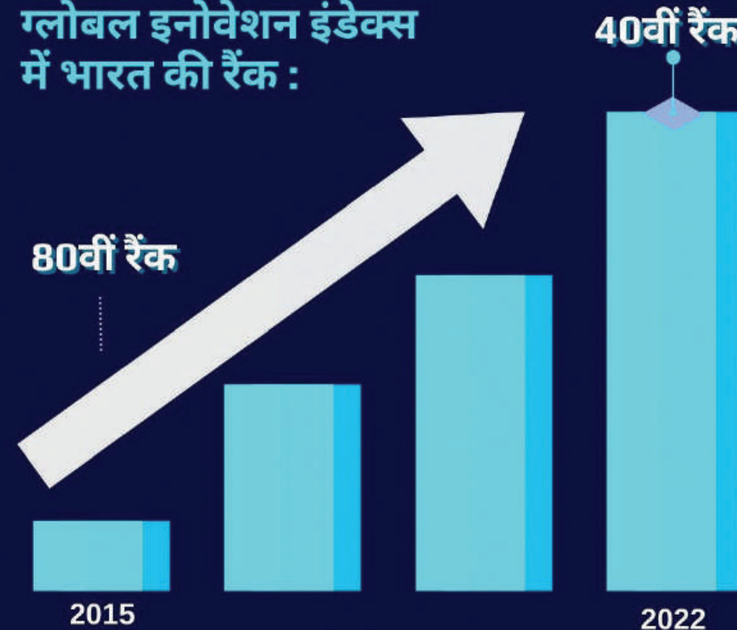

मेक इन इंडिया:

समावेशी विकास के एजेंडे को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत इनोवेटर्स का समर्थन करना।

प्रमोटिंग इनोवेशंस इन इंडिविजुअल्स, स्टार्ट-अप्स एंड एमएसएमईज़ (PRISM)

समावेशी विकास के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत नवप्रवर्तकों का समर्थन करने के लिए।

अटल टिंकरिंग लैब्स:

युवा मन में जिज्ञासा, रचनात्मकता और कल्पना को बढ़ावा देने तथा डिज़ाइन मानसिकता, कम्प्यूटेशनल सोच, अनुकूल शिक्षा, भौतिक कम्प्यूटिंग जैसे कौशल विकसित करने के लिए।

ATAL INNOVATION MISSION

इंडिया इनोवेशन इंडेक्स:

भारत के नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के मूल्यांकन और विकास के लिए एक व्यापक उपकरण और राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को उनके नवाचार पर रैंक करने के लिए।

भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु

भारत का नवाचार वाहक

पिछले कुछ वर्षों में भारत ने नवाचार के क्षेत्र में अविश्वसनीय प्रगति की है। अत्याधुनिक आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (AI) क्षमता के विकास से लेकर डिजिटल भुगतान, 5 जी को अपनाने से लेकर उच्चस्तरीय कार्यक्षमता वाली कम्प्यूटिंग तक, भारत ने अपने को विश्व के अत्याधिक अभिनवशील देशों में से एक सिद्ध किया है। युवा इनोवेटर्स के अलावा इसमें संस्थानों का भी हाथ रहा है कि आज भारत पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण बन रहा है।

हाल में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बेंगलुरु की सफलता का उल्लेख किया।

आईआईएससी, बेंगलुरु के बारे में :

- 1909 में जमशेदजी टाटा, मैसूर शाही परिवार और भारत सरकार के बीच एक साझेदारी द्वारा स्थापित।
- उन्नत वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान और शिक्षा के लिए भारत के प्रमुख संस्थानों में से एक।

वर्ष 2022 में संस्थान को अपने नाम **145** पेटेंट मिले

यानी हर **5** दिनों में **2** पेटेंट

IISc की उपलब्धियों के बारे में और अधिक जानने के लिए दूरदर्शन की एक टीम ने भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरु के निदेशक प्रोफ़ेसर गोविन्दन रंगराजन से बात की।

" 2022 में हमारे द्वारा दायर, दिए गए या पंजीकृत पेटेंट की संख्या 145 रही, यानी हर 5 दिन में 2 पेटेंट। इतनी अधिक संख्या में पेटेंट हम तभी सुनिश्चित कर पाए, जब हमने पेटेंट फाइलिंग के बारे में जागरूकता बढ़ाई। पेटेंट फाइलिंग कार्यालय तथा संकाय सदस्यों और छात्रों को लगातार भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु : भारत का नवाचार वाहक को एक-दूसरे के सम्पर्क में रखा इसके अतिरिक्त, कार्यालय ने ग़लतफहमी को दूर करने का भी काम किया और बताया कि प्रकाशन और पेटेंट फाइलिंग दोनों एक साथ कैसे चल सकते हैं।

हमने यह भी सनिश्चित किया कि उजागर किए गए अधिकांश आविष्कारों को, पेश किए जाने के 30 दिन के भीतर पेटेंट के लिए संसाधित कर दिया जाए। इसके अलावा, कार्यालय संकाय सदस्यों के साथ बातचीत करता रहता है, उनकी प्रयोगशालाओं का दौरा करता है और पेटेंट संरक्षित प्रयोगशालाओं के भीतर आईपी (इंटेलेक्चुअल प्रोपर्टी) खोजने और उनसे प्रयोगशालाओं के भीतर उन इंटेलेक्चुअल प्रोपर्टी को तलाशने के लिए सम्वाद करता है, जिन्हें पेटेंट से संरक्षित किया जा सके। इससे नए आईपी खोजने में मदद मिली जिन पर अन्यथा किसी का ध्यान नहीं जाता। अंततः संकाय सदस्यों के आपसी सहयोग और सम्पर्क से,पेटेंट्स के बीच अंतराल दूर किया गया, प्रौद्योगिकी तत्परता का स्तर बेहतर किया गया और नए आईपी तैयार किए गए हैं।

हमें इस बात की प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री ने भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरु का उल्लेख अपने 'मन की बात' सम्बोधन में किया। "

ई-वेस्ट प्रबन्धन

सर्क्यूलर इकोनॉमी की बड़ी ताकत

“अगर ई-वेस्ट को ठीक से डिस्पोज़ नहीं किया गया, तो यह हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुँचा सकता है, लेकिन अगर सावधानीपूर्वक ऐसा किया जाता है तो यह रीसाइकल और रियूज़ की हमारी सर्क्यूलर इकोनॉमी की बहुत बड़ी ताकत बन सकता है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“हम प्रधानमंत्री द्वारा उनके ‘मन की बात’ सम्बोधन में हमारा उल्लेख किए जाने से बहुत खुश और सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इस मान्यता ने हमें और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है। हमें रीसाइक्लिंग उद्योग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने पर गर्व है और हम अपने नागरिकों के सहयोग के लिए आभारी हैं। हम सब मिलकर एक स्वच्छ और हरित भारत बना सकते हैं।”

-अनुराग असाती
सह-संस्थापक, कबाड़ीवाला

पिछले दो दशकों से अधिक समय में विश्व ने एक तकनीकी परिवर्तन देखा है और भारत इस परिवर्तन के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरा है। प्रौद्योगिकी हम सबके जीवन में प्रवेश कर चुकी है और समाज में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला रही है। आज, हम मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप, टीवी, माइक्रोवेव जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से घिरे हुए हैं, जो बहुत उपयोगी होने के साथ-साथ पर्यावरण और न केवल मनुष्यों, बल्कि सभी जीवित प्राणियों के जीवन पर भारी पड़ते हैं। तकनीकी उपकरणों से उत्पन्न ई-वेस्ट का यदि उचित तरीके से प्रबन्धन नहीं किया जाए तो इसका पर्यावरण पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ता है और यह स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है, जिनमें कैंसर, गर्भपात, तंत्रिका सम्बन्धी क्षति और बच्चों में कम आईक्यू शामिल है। दूसरी ओर, अगर इसे ठीक से निपटाया जाए तो यह सर्क्यूलर इकोनॉमी की एक बड़ी ताक़त हो सकता है, जिसमें सामग्री का पुनरुपयोग और पुनरुत्पादन, विशेष रूप से एक स्थायी और पर्यावरण के अनुकूल तरीके से उत्पादन जारी रखने के साधन के रूप में किया जाता है।

ई-वेस्ट दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली अपशिष्ट धाराओं में से एक है, जैसाकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में अपने ‘मन की बात’ कार्यक्रम में उल्लेख किया है। यह माना जाता है कि विश्व स्तर पर उत्पन्न ई-कचरे की मात्रा पृथ्वी पर अब तक बनाए गए सभी वाणिज्यिक विमानों के संयुक्त वज़न से अधिक है। ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर 2020 के अनुसार, 2019-20 में वैश्विक स्तर पर कुल 5.36 करोड़ टन ई-वेस्ट उत्पन्न हुआ था। इसी वर्ष, अकेले भारत में 10 लाख टन से अधिक ई-वेस्ट उत्पन्न हुआ, जो इससे पिछले वर्ष की तुलना में 31.6 प्रतिशत अधिक था। आज, दुनिया में इलेक्ट्रॉनिक्स के सबसे तेज़ी से बढ़ते बाजारों में से चीन और संयुक्त राज्य अमरीका के बाद भारत ई-वेस्ट पैदा करने में क्रमश: तीसरे स्थान पर है। इसे यदि समुचित तरीके से निपटाया जाता है और इसका पुनर्नवीनीकरण किया जाता है, तो इससे सोना, चाँदी, ताम्बा और निकल जैसी लगभग 17 कीमती धातुएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस कचरे को धन में बदलने के लिए सरकार ने इसके संचय को कम करने और रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की हैं।

ई-वेस्ट (प्रबन्धन) नियम 2022, जो 1 अप्रैल, 2023 से लागू होगा और ई-वेस्ट (प्रबन्धन) नियम 2016 की जगह लेगा, इसमें इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण में खतरनाक पदार्थों के उपयोग को प्रतिबन्धित करने का प्रावधान किया गया है, जिनका मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नियमों में विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व प्रमाणपत्र (जैसे कार्बन क्रेडिट तंत्र) का भी प्रावधान है, जो तीसरे पक्ष को ई-वेस्ट उत्तरदायित्व की भरपाई की अनुमति देगा। ई-वेस्ट संग्रह के लिए बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उत्पादकों के लिए वार्षिक लक्ष्य तय किए गए हैं। भारत सरकार विभिन्न प्रौद्योगिकी डेवलपर्स जैसे बीएआरसी, सीएमईटी आदि और प्रौद्योगिकी संस्थानों के साथ मिलकर काम कर रही है ताकि कार्य को सुविधाजनक बनाया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग के लिए स्वदेशी तकनीकों

ई-वेस्ट प्रबन्धन के 3R:

रिड्यूस

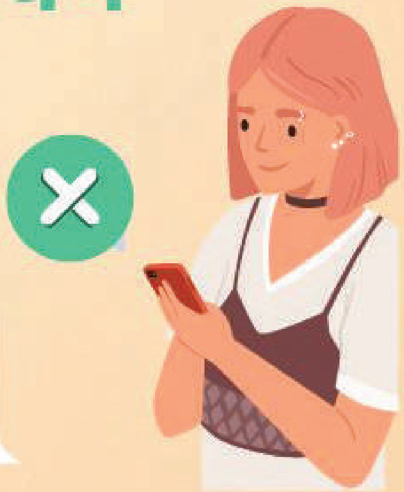

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का इस्तेमाल सोच-समझकर करें।

रियूज़

ई-वेस्ट को सीमित रखने के लिए नवीनीकृत इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का उपयोग करें।

रीसाइकिल

पर्यावरण में ज़हरीले तत्वों को फैलने से रोकने के लिए अपने इलेक्ट्रॉनिक्स को रीसाइक्लिंग सेंटर में ले जाएँ।

का उपयोग किया जाए।

पर्यावरण के अनुकूल आदतों को विकसित करने के महत्त्व को समझते हुए, प्रधानमंत्री ने 2021 में ग्लासगो में सीओपी-26 के दौरान 'लाइफ़स्टाइल फ़ॉर द एन्वायरमेंट' (लाइफ़) यानी पर्यावरण के लिए जीवन शैली का विचार पेश किया। यह विचार पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली को बढ़ावा देता है जो 'नासमझी तथा फिजूलखर्ची की बजाय सुविचारित और सतर्क उपयोग' पर केन्द्रित है। इससे हम अपने दैनिक जीवन में छोटे, लेकिन प्रभावी कदम उठाकर रिड्यूस, रियूज़ और रीसाइकिल को बढ़ावा देकर सर्क्यूलर इकोनॉमी को मज़बूत कर सकते हैं।

परिणामस्वरूप, भारत के नागरिक भी ई-वेस्ट को कम करने के लिए कई पहल कर रहे हैं। भारतीय स्टार्ट-अप्स भी ई-वेस्ट की समस्या से निपटने के लिए विभिन्न नवीन समाधानों के साथ आगे आए हैं, जो न केवल इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की उचित तरीके से रीसाइक्लिंग से धन सृजन की ओर अग्रसर हैं बल्कि रोज़गार के अवसर पैदा करने में भी अग्रणी हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में भारतीय स्टार्ट-अप्स द्वारा की गई कुछ ऐसी पहलों पर प्रकाश डाला। मुम्बई के 'इकोरीको' और भोपाल के 'कबाड़ीवाला' ने मोबाइल ऐप के जरिए ई-वेस्ट इकट्ठा करने की प्रणाली विकसित की है। रुड़की, उत्तराखंड के अट्टेरो रीसाइक्लिंग ने कई पेटेंट प्राप्त किए हैं और एक ऐसी ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग तकनीक तैयार की है जिसे पुरस्कृत किया गया है। बेंगलुरु के ई-परिसरा ने ई-वेस्ट से कीमती धातु निकालने की एक स्वदेशी तकनीक विकसित की है। अन्य के साथ-साथ ये सभी पहल भारत को एक ग्लोबल रीसाइक्लिंग हब बनने में मदद कर रही हैं।

हम जैसे-जैसे इस अमृत काल में आगे बढ़ रहे हैं, प्रधानमंत्री की परिकल्पना के अनुरूप अपने सामूहिक प्रयासों और सरकार के साथ-साथ निजी क्षेत्र के समर्पण के साथ, अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, हरे-भरे और स्वस्थ भारत के लिए सदैव प्रयासरत हैं।

अट्टेरो रीसाइक्लिंग बेस्ट-इन-क्लास टेक्नोलॉजी के साथ सस्टेनेबिलिटी पर फ़ोकस करती है

नितिन गुप्ता
सीईओ, अट्टेरो रीसाइक्लिंग

अधिकांश ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग अनौपचारिक, अवैज्ञानिक और खतरनाक तरीकों के इस्तेमाल से होता है। इससे पर्यावरण तथा धातु को नुकसान और सामाजिक लागत को हानि होती है। इस प्रक्रिया में उपयोगी रूप से पास के जल निकायों में दूषित पानी को डंप करना शामिल है जो साइनाइड के साथ पानी के प्रदूषण का कारण बनता है। लेड (सीसा) का उपयोग करके कीमती धातुओं को जलाने से जहरीला सीसा और कोयले का धुआँ निकलता है।

वर्तमान में अट्टेरो रीसाइक्लिंग ऑनलाइन उपभोक्ताओं तक पहुँच रहा है और वास्तविक पूर्ति ऑफ़लाइन तरीके से कर रहा है।

अट्टेरो रीसाइक्लिंग भारत की सबसे बड़ी ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग कम्पनी और दुनिया की सबसे उन्नत लीथियम-आयन बैटरी रीसाइक्लिंग कम्पनी है। हम ई-वेस्ट और लीथियम-आयन वेस्ट की रीसाइक्लिंग के लिए कार्बन क्रेडिट प्राप्त करने वाली दुनिया की एकमात्र कम्पनी हैं। अट्टेरो के पास विश्व का सर्वोच्च RER (रीसाइक्लिंग एफ़िशिएंसी रेट) है और भारत में लगभग 90% ऑटोमोबाइल OEMs के साथ हमारा टाई-अप है।

प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में अट्टेरो रीसाइक्लिंग का उल्लेख सुनकर हमें खुशी हुई। उन्होंने मौजूदा समय में ई-वेस्ट के उचित निपटान के महत्त्व और कार्बन फ़ुटप्रिंट को कम करने और कीमती धातुओं के नए खनन को कम करने के लिए एक मज़बूत सर्क्यूलर इकोनॉमी के निर्माण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। हमें यकीन है कि उनके शब्द लोगों में सस्टेनेबल रीसाइक्लिंग समाधान चुनने के प्रति जागरूकता बढ़ाएँगे। प्रधानमंत्री की ओर से मान्यता हमें धरती पर ई-वेस्ट के प्रभाव को कम करने के हमारे मिशन में और अधिक विश्वास देती है।

मुझे लगता है कि सरकार और नियामक पॉलिसी फ्रंट पर अच्छा काम कर रहे हैं। औपचारिक क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने सही नीतियाँ लाकर ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग की स्थिति में बदलाव किया है।

कबाड़ीवाला : ई-वेस्ट को खत्म करने के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोगकर्ता

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की बढ़ती माँग, दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ रहे अपशिष्ट, ई-वेस्ट का निर्माण कर रही है। हालाँकि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की अधिकता एक बड़ी समस्या है, लेकिन यदि इसका समुचित तरीके से निपटान और पुनर्नवीनीकरण किया जाए तो ये समाधान का एक बड़ा हिस्सा भी हो सकते हैं। ई-वेस्ट के निपटान के लिए नवाचारों के साथ इस वैश्विक समस्या को हल करने के लिए हमारे देश में कई स्टार्ट-अप्स काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में एक स्टार्ट-अप **कबाड़ीवाला** के कार्यों पर प्रकाश डाला, जो ई-वेस्ट के संग्रह को परेशानी मुक्त बनाता है।

*इस बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए दूरदर्शन की टीम ने कबाड़ीवाला मोबाइल-ऐप के सह-संस्थापक **श्री अनुराग असाती** से बातचीत की।*

उन्होंने बताया, "हर दिन लोग अधिक-से-अधिक ई-वेस्ट पैदा कर रहे हैं, लेकिन इसका निपटान करने के लिए पूरी दुनिया में पर्याप्त तंत्र नहीं है। लगभग हज़ारों टन ई-वेस्ट का उचित तरीके से प्रबन्धन नहीं किया जाता है। ई-वेस्ट, जो विभिन्न खतरनाक सामग्रियों का स्रोत है, अन्य प्रकार के वेस्ट की तुलना में अधिक प्रदूषणकारी है, इसलिए इसके वैज्ञानिक निपटान और रीसाइक्लिंग की आवश्यकता है। यदि यह काम उचित तरीके से किया जाता है, तो यह वेस्ट को धन में परिवर्तित कर सकता है। यह न केवल सर्क्यूलर इकोनॉमी में योगदान देगा, बल्कि रोज़गार सृजन में भी मदद करेगा। वर्तमान में प्रमुख चुनौतियों में

से एक, लोगों से ई-वेस्ट एकत्र करना है, जो अन्यथा इसे इस तरह से निपटाएँगे, जिससे पर्यावरण और स्वास्थ्य को बहुत नुकसान पहुँच सकता है।"

कबाड़ीवाला एक अनूठा प्लेटफ़ॉर्म है जो ई-वेस्ट सहित सभी रीसाइक्लेबल सामग्री ग्राहकों के ठिकाने पर जाकर एकत्र करने की सेवाएँ प्रदान करता है। वर्तमान में हम 6 शहरों में काम कर रहे हैं और 2 लाख से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान करते हैं। हम कबाड़ एकत्र करने की सेवाओं के लिए कॉल या मोबाइल ऐप-आधारित बुकिंग प्रदान करते हैं। हम सरकार के मटीरियल रिकवरी सेन्टर के प्रबन्धन में भी उसके साथ मिलकर काम करते हैं।

हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उनके 'मन की बात' सम्बोधन में हमारा उल्लेख किए जाने से बहुत खुश और सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इस मान्यता ने हमें और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है। हमें रीसाइक्लिंग उद्योग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने पर गर्व है और हम अपने साथी नागरिकों के सहयोग के लिए आभारी हैं। हम सब मिलकर एक स्वच्छ और हरित भारत बना सकते हैं।"

ई-वेस्ट सम्बन्धी मुद्दे और 'वेस्ट टू वेल्थ' की अवधारणा

जगदीश मित्रा

मुख्य रणनीति अधिकारी, टेक महिन्द्रा,
अध्यक्ष, FICCI – विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार समिति

ई-वेस्ट से अभिप्राय बेकार हो चुके इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे कम्प्यूटर, टेलिविज़न, सेल-फ़ोन और घरेलू उपकरणों से है। तीव्र प्रौद्योगिक प्रगति को देखते हुए विश्व भर में ई-वेस्ट (इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट) की मात्रा ख़तरनाक दर से बढ़ रही है। वास्तव में 2050 तक ई-वेस्ट की मात्रा सालाना 120 मिलियन टन तक होने का अनुमान है।

आज भारत में ई-वेस्ट इकट्ठा करना कई लोगों की आय का साधन है, लेकिन इस काम में शामिल लोगों के लिए इसमें कई प्रकार के जोखिम भी हैं। ई-वेस्ट प्रबन्धन भी सर्क्यूलर इकोनॉमी के लिए एक अवसर है, जिससे ई-वेस्ट का प्रबन्धन अधिक सस्टेनेबल तरीके से हो सकता है।

हालाँकि भारत ने चार वर्ष में ई-वेस्ट के एकत्रीकरण और प्रसंस्करण की क्षमता चार गुणा बढ़ा दी है, फिर भी 95 प्रतिशत ई-वेस्ट सम्भालने का काम अनौपचारिक क्षेत्र में अवैध तरीके से होता है। वेस्ट बीनने वाले उस वेस्ट को जलाते समय पर्यावरणीय मानकों का पालन नहीं करते, जिसका न तो प्रसंस्करण हो सकता है और न ही वह भूमि-भराव के काम आ सकता है। इससे पर्यावरण को भारी क्षति पहुँचती है और स्वास्थ्य के लिए भी ख़तरा पैदा होता है।

भारत ने 2020-21 में 3.4 लाख मीट्रिक टन ई-वेस्ट का प्रसंस्करण किया। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, प्रति वर्ष प्लास्टिक वेस्ट 3 प्रतिशत बढ़ रहा है, जबकि ई-वेस्ट का उत्पादन इससे भी अधिक है। 2018-19 में कुल 7.1 लाख मीट्रिक टन और 2019-20 में 10.14 लाख मीट्रिक टन वेस्ट पैदा हुआ। इसमें हर वर्ष 31 प्रतिशत वृद्धि होती है।

सरकार ने देश के ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग क्षेत्र को औपचारिक रूप देने के लिए अनेक उपाय किए हैं। ई-अपशिष्ट (प्रबन्धन) नियम, 2016 में रीसाइक्लिंग इकाइयों के अनिवार्य पंजीकरण का प्रावधान है और CPCB ने ई-वेस्ट के प्रसंस्करण के लिए दिशानिर्देश/मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी की है। सीपीसीबी और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (SPCB) इकाइयों की निगरानी करते हैं और इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की मदद से रीसाइक्लिंग उद्योग को मुख्यधारा में लाने और आधुनिक बनाने के आवश्यक उपाय किए गए हैं।

चूँकि हर साल लाखों टन अधिक इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट निकलता है, इसलिए इसे उपयुक्त और वैज्ञानिक तरीके से रीसाइक्लिंग करना महत्त्वपूर्ण है। रीसाइक्लिंग में रासायनिक घटकों, अणुओं और सामग्रियों को अलग किया जाता है और बाद में इन्हें नए उत्पाद बनाने के कच्चे माल के रूप में बेचा जाता है। इस स्थिति में उन्नत तकनीक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इन दूषित पदार्थों को पर्यावरण से अलग कर पाना मुश्किल होता है।

विषैले या हानिकारक पदार्थों का उपयोग करने की इस समस्या का एक समाधान यह सुनिश्चित करना है कि हम ई-पुर्ज़ों का निर्माण ग़ैर-ज़हरीले पदार्थों से करें ताकि पर्यावरण और जन-स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

हमें ई-पुर्ज़ों के डिज़ाइन बदलने चाहिए, इन्हें इस प्रकार डिज़ाइन किया जाना चाहिए; जिसमें एन्ड-ऑफ़-लाइफ़ की बजाए टाइम-टू-रीस्टोर डिज़ाइन अप्रोच हो, यानी कुछ समय उपयोग करने के बाद ई-पुर्ज़े को फेंकने की बजाय उसे फिर से काम में लाया जाए ताकि सर्क्यूलर इकोनॉमी को बढ़ावा मिले।

चूँकि ईएसजी पहल विश्व स्तर पर अधिक प्रचलित हो गई हैं, इसलिए ई-पुर्ज़ों के उत्पादकों को ई-वेस्ट का प्रबन्धन और स्कोप-1, स्कोप-2 और स्कोप-3 उत्सर्जन की सूचना देने के लिए इन ई-वेस्ट को ट्रैक करने के अधिक मज़बूत उपाय अपनाने की आवश्यकता होगी। सूचना प्रौद्योगिकी उत्पाद के निर्माण से उसके वेस्ट होने तक की सम्पूर्ण यात्रा में शामिल उत्तरदायी पक्षों को ट्रैक करने और पहचानने में मदद करके इसका प्रबन्धन कर सकती है।

बढ़ते ई-वेस्ट के मुद्दे पर एक और दृष्टिकोण है– स्मार्ट वेस्ट प्रबन्धन और रीसाइक्लिंग। माना जा रहा है कि (आर्टिफ़ीशियल इंटेलिजेंस) सस्टेनेबल रीसाइकिल करके निपटान की एक बेहतर तकनीक को पूर्वानुमानित कर सकती है। उदाहरण के रूप में, फ़िनलैंड की एक कम्पनी ज़ेनरोबॉटिक्स ने 2011 में स्मार्ट रीसाइक्लिंग के काम में ई-वेस्ट अलग करने के लिए रोबॉटिक वेस्ट-सॉर्टर का उपयोग करके कृत्रिम-मेधा (एआई) का उपयोग शुरू किया। एआई, मशीन लर्निंग और कम्प्यूटर दृष्टि का उपयोग करके रोलिंग कन्वेयर बेल्ट से पुनः काम में लाई जा सकने वाली सामग्री इकट्ठा करने के लिए रोबोट की मदद से परीक्षण किए जा रहे हैं।

तब से आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से वेस्ट का पुनर्चक्रीकरण अधिक से अधिक लोकप्रिय हो रहा है।

ई-वेस्ट के प्रबन्धन में प्रौद्योगिकी-आधारित रचनात्मक दृष्टिकोण :

- रोबॉटिक ई-वेस्ट निगरानी प्रणाली
- रोबॉटिक ई-वेस्ट पृथकीकरण प्रक्रिया
- जलवायु स्थिरता लक्ष्य हासिल करने के लिए ई-वेस्ट प्रबन्धन
- स्मार्ट वेस्ट-बिन्स

अंत में यही कहेंगे कि ई-वेस्ट पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य; दोनों के लिए एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है, लेकिन 'वेस्ट टू वेल्थ' की अवधारणा वेस्ट को मूल्यवान संसाधनों में परिवर्तित करके एक समाधान प्रदान करती है। ई-वेस्ट के उत्तरदायी प्रबन्धन को बढ़ावा देकर और इस अवधारणा को अपनाकर हम वेस्ट कम कर सकते हैं, संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और एक सस्टेनेबल भविष्य को बढ़ावा दे सकते हैं।

सर्क्यूलर इकोनॉमी को मज़बूत करने के लिए प्रतिबद्ध भारत के स्टार्ट-अप

डॉ. पी. पार्थसार्थी,
संस्थापक और प्रबन्ध निदेशक, ई-परिसारा

भारत में इस्तेमाल किए जा चुके अरबों लैपटॉप, मोबाइल फ़ोन और टैबलेट हर दिन बेकार हो जाते हैं। यह ई-वेस्ट बड़े पैमाने पर उत्पादित होता है, जिसमें 17 से अधिक विभिन्न धातुएँ निकाली जा सकती हैं। इनमें सोना, चाँदी, पैलेडियम, प्लेटिनम जैसी कीमती धातुएँ शामिल हैं। इसलिए दक्षतापूर्वक ई-वेस्ट प्रबन्धन के लिए तंत्र विकसित करना आवश्यक है। ई-वेस्ट का अनुचित और अवैज्ञानिक निपटान, वर्तमान में भारत के सामने एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप संसाधन प्रतिलाभ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे पर्यावरणीय क्षति होती है।

भारत में लगभग 500 अधिकृत रीसाईक्लर्स 15 से 17 प्रतिशत से अधिक ई-वेस्ट का समुचित रूप से रीसाइकिल करते हैं, जो सर्क्यूलर इकोनॉमी में योगदान देता है। हालाँकि इस चुनौती से निपटने और देश भर में रोज़गार की बड़ी सम्भावनाएँ पैदा करने के लिए इसे बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

इस दिशा में ई-परिसारा (ईपीपीएल) ने सराहनीय पहल की है। भारत की यह पहली ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग सुविधा है जिसे 2004 में तब शुरू किया गया था, जब ई-अपशिष्ट प्रबन्धन नियम नहीं थे। इसने सोने, चाँदी, पैलेडियम, प्लेटिनम, ताम्बे को पुनर्प्राप्त करने के लिए प्रिंटेड सर्किट बोर्डों के लिए स्वदेशी तकनीक विकसित की है और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के अनुरूप स्वदेशी रूप से विकसित कुशल ई-वेस्ट प्रबन्धन में योगदान दिया। ईपीपीएल भारत में निर्मित विभिन्न प्रक्रियाओं और मशीनरी को विकसित करने में भी अद्वितीय है। ईपीपीएल ने हिन्दूपुर, आंध्र प्रदेश के पास एक दूसरी एकीकृत रीसाइक्लिंग फ़ेसीलिटी भी स्थापित की है। इसमें ईपीपीएल ने लिथियम-आयन बैटरी के रीसाइक्लिंग के लिए स्वदेशी तकनीक भी विकसित की है।

ई-परिसारा की हमारी टीम, प्रधानमंत्री द्वारा हाल में अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में ईपीपीएल द्वारा प्रिंटेड सर्किट बोर्ड से कीमती धातु अलग करने के लिए प्रौद्योगिकी विकास पर विशेष ध्यान देने के बारे में किए गए उल्लेख से उत्साहित है। इसने हमें आत्मनिर्भर भारत के अनुरूप विभिन्न प्रक्रियाओं और उपकरणों को विकसित करने के लिए प्रेरित किया है। हम अपने सभी प्रतिष्ठित ग्राहकों और सरकारी एजेंसियों को हमारे प्रयासों को मान्यता देने के लिए विशेष धन्यवाद देते हैं। हम सर्क्यूलर इकोनॉमी तथा इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट मैनेजमेंट के विकास और ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग के लिए मेक इन इंडिया ग्लोबल हब के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

भारत में ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग उद्योग का भविष्य, अधिसूचित और 1 अप्रैल, 2023 से प्रभावी नए इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट प्रबन्धन नियमों और 22 अगस्त, 2022 से अधिसूचित बैटरी अपशिष्ट प्रबन्धन नियम से बहुत बेहतर होगा। ये विभिन्न धातुओं, इंजीनियरिंग प्लास्टिक और काँच जैसे कुशल संसाधनों की पुनर्प्राप्ति और लैंडफिल से बचने के लिए कई स्टार्ट-अप्स के लिए बड़े अवसर प्रदान करते हैं।

उपरोक्त नियम सकल घरेलू उत्पाद, रोज़गार के अवसरों और शहरी खनन के पारिस्थितिक प्रभाव पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव के साथ सर्क्यूलर इकोनॉमी में योगदान करते हैं। प्राथमिकता के आधार पर भूमि आवंटन, प्रौद्योगिकी विकास के लिए ऋण सब्सिडी और अनुपालन आवश्यकताओं की त्वरित स्वीकृति के मामले में रीसाइक्लिंग द्वारा सर्क्यूलर इकोनॉमी बनाने के लिए विभिन्न सरकारी एजेंसियों से चौतरफा समर्थन की आवश्यकता है।

यह स्वच्छ और हरित भारत के विकास को बढ़ावा देगा, जो ई-वेस्ट प्रबन्धन और संसाधन सुधार पर विशेष ज़ोर के साथ दक्ष, आत्मनिर्भर और तकनीकी रूप से उन्नत है।

भारत में वेटलैंड की क्षति का पुनरुत्थान

सरकारी सक्रियता और जनभागीदारी का प्रमाण

"वेटलैंड हमारी पृथ्वी के अस्तित्व के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि अनेक पशु-पक्षी इन पर निर्भर हैं। जैव विविधता को समृद्ध करने के साथ-साथ ये क्षेत्र बाढ़ नियंत्रण और भूमिगत जल का पुनर्भरण भी सुनिश्चित करते हैं।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"नियामक ढाँचे, नीतियाँ, और सरकारी कानून तभी प्रभावी हो सकते हैं, जब देश के नागरिक वेटलैंड संरक्षण के लिए प्रेरित और शामिल हों। इसलिए, सरकार वेटलैंड संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए जनभागीदारी के माध्यम से स्थानीय समुदायों, छात्रों, शोधकर्ताओं और सभी आयु वर्ग के लोगों को शामिल करने और प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"

-एस.ए. हुसैन
वैज्ञानिक, भारतीय वन्यजीव संस्थान

मणिपुर की प्रसिद्ध 'लोकटक झील' और 'इच्छा पूर्ति झील' के रूप में लोकप्रिय सिक्किम की खेचिओपलरी झील, इस बात के सबूत हैं कि भारत अपनी वेटलैंड को क्या दर्ज़ा देता है। भारतीय इतिहास में पवित्र और विशिष्ट स्थान के रूप में माने गए वेटलैंड, जैविक विविधता बनाए रखने के लिए महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र है।

ये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र हैं, जो जलवायु शमन और अनुकूलन, मीठे पानी की उपलब्धता, विश्व अर्थव्यवस्थाओं तथा अन्य कई क्षेत्रों में योगदान करते हैं। हालाँकि ये पृथ्वी के सबसे अधिक संकटग्रस्त पारिस्थितिक तंत्र भी हैं और जंगलों की तुलना में तीन गुणा तेज़ी से ग़ायब हो रहे हैं। इतने अधिक महत्त्व के बावजूद वेटलैंड क्षेत्र कई कारणों से दुनिया भर में ख़तरे में हैं, जिनमें जल निकासी, प्रदूषण, अनसस्टेनेबल, आक्रामक प्रजातियाँ, वनों की कटाई और मिट्टी का क्षरण शामिल हैं।

इन क्षेत्रों की तेज़ी से हो रही क्षति को पलटने के लिए वेटलैंड के बारे में राष्ट्रीय और वैश्विक जागरूकता बढ़ाना पहले से कहीं अधिक ज़रूरी है ताकि इनके संरक्षण और बहाली के कार्यों को प्रोत्साहित किया जा सके।

लोगों में वेटलैंड्स के बारे में समझ की आवश्यकता और जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक वर्ष 2 फरवरी को विश्व वेटलैंड दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष का विषय है, "अब समय है वेटलैंड्स बहाली का"। इसमें वेटलैंड्स बहाली को प्राथमिकता देने की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया गया है।

हालाँकि हमें गर्व है कि भारत में हम वेटलैंड्स कम होने की वैश्विक प्रवृत्ति को उलट रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस तरह सस्टेनेबिलिटी को विकास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बनाया है, उससे वेटलैंड की देखभाल करने के तरीके में समग्र सुधार हुआ है। परिणाम यह हुआ कि भारत अब 75 रामसर स्थलों या अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व के वेटलैंड्स स्थलों की भूमि बन चुका है, जो दक्षिण एशिया के किसी भी देश के लिए रामसर स्थलों का सबसे बड़ा नेटवर्क है। भारत की स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष में हासिल की गई यह ऐतिहासिक उपलब्धि राष्ट्र के गौरव को और अधिक बढ़ाती है।

सरकार वेटलैंड्स पर विशेष बल देते हुए जैव विविधता संरक्षण की दिशा में कठोर और सतत प्रयास कर रही है। वेटलैंड के अधिकतम उपयोग को प्रोत्साहित करने और जैव-विविधता बढ़ाने के लिए केन्द्रीय बजट 2023-

वेटलैंड एक महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र

वेटलैंड क्या हैं?

वेटलैंड एक ऐसी जगह है, जहाँ भूमि मौसमी या स्थायी रूप से नमकीन या ताज़ा पानी से ढकी होती है।

वेटलैंड महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

वेटलैंड को अक्सर प्राकृतिक किडनी या प्राकृतिक सिंक कहा जाता है, क्योंकि ये पर्यावरण को साफ़ करता है और भूमि के जल प्रतिधारण को सन्तुलित करता है। वेटलैंड मीठे पानी, जैव विविधता, आजीविका, भोजन और चारा, बाढ़ नियंत्रण आरक्षित क्षेत्र, भूजल पुनर्भरण, जलवायु परिवर्तन शमन आदि जैसी पारिस्थितिक सेवाएँ प्रदान करने वाली भूमि और पानी के बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं।

कार्य

भारत के प्रमुख वेटलैंड्स

चिल्का झील क्षेत्र (ओडिशा), वुलर झील (जम्मू और कश्मीर), रेणुका (हिमाचल प्रदेश), साम्भर झील (राजस्थान), दीपोर बील (असम), पूर्वी कोलकाता वेटलैंड (पश्चिम बंगाल), नल सरोवर (गुजरात), हरिका (पंजाब), रुद्र सागर (त्रिपुरा) और भोज वेटलैंड (एमपी)।

24 में घोषित अमृत धरोहर योजना के साथ देश की वेटलैंड का विवरण देते हुए 'वेटलैंड्स ऑफ़ इंडिया' वैब पोर्टल शुरू करके सरकार वेटलैंड के कायाकल्प की दिशा में अभिनव उपाय कर रही है। अन्तरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र (स्पेस ऐपिलिकेशंस सेन्टर), अहमदाबाद द्वारा तैयार राष्ट्रीय वेटलैंड दशकीय परिवर्तन एटलस जैसी नई पहल, जो पिछले एक दशक में देश भर में वेटलैंड में हुए परिवर्तनों को उजागर करती है, और विशिष्ट अनुसंधान आवश्यकताओं और ज्ञान अन्तराल को दूर करने के लिए वेटलैंड संरक्षण और प्रबन्धन केन्द्र (सीडब्ल्यूसीएम) की स्थापना उल्लेखनीय है, जिसमें आज तक कुल 49 वेटलैंड की वृद्धि हुई है, जो 2014 से पहले केवल 26 थी।

भारत में रामसर स्थल अत्यधिक विविध हैं। जहाँ सबसे छोटा रामसर स्थल (वेम्बन्नूर) सिर्फ़ 19.75 हेक्टेयर का है, वहीं सबसे बड़ा सुंदरवन 0.42 मिलियन हेक्टेयर तक फैला है। ऐसे विशाल प्रसार और गहरे सांस्कृतिक और पारम्परिक सम्बन्धों को देखते हुए इन स्थलों के आस-पास रहने वाले समुदायों को इनके संरक्षण में अहम भूमिका निभानी है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वेटलैंड का विस्तार वास्तव में हमारी सदियों पुरानी संस्कृति और प्रकृति के संग सद्भाव में रहने की परम्परा का बड़ा उदाहरण है। इन स्थलों के आस-पास रहने वाले लोगों के प्रयास, चाहे वे पड़ोस के किसान हों या पक्षियों की अनूठी प्रजातियों को संरक्षित रखने के प्रयास में जुटे स्थानीय ग्रामीण हों, यह 'जन-भागीदारी' की ही भावना है, जो भारत की प्राकृतिक क्षमता की दुनिया के समक्ष सोदाहरण अगुआई कर रही है।

"पंजथ वसंत के दौरान, विभिन्न स्थानों के लोग एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। यह मई के महीने के दौरान एक आकर्षण बन जाता है, जिसमें लोग इकट्ठा होते हैं और तालाब को साफ़ करते हैं ताकि उनके खेतों में पानी आ सके। और मैं 'मन की बात' पर इसे बढ़ावा देने के लिए सरकार का शुक्रगुज़ार हूँ।"

-राव फ़रमान अली

पंजथ नाग समाज के निवासी

संस्कृति और वेटलैंड्स

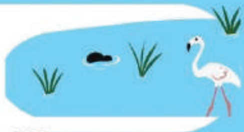

परिचय:

वेटलैंड्स का भारतीय संस्कृति और परम्पराओं से गहरा सम्बन्ध है। मणिपुर में लोकटक झील स्थानीय लोगों द्वारा 'इमा' (माँ) के रूप में प्रतिष्ठित है, जबकि सिक्किम की खेचिओपलरी झील 'इच्छा पूर्ति झील' के रूप में लोकप्रिय है। उत्तर भारतीय त्योहार छठ लोगों, संस्कृति, जल और वेटलैंड के जुड़ाव की सबसे अनोखी अभिव्यक्तियों में से एक है। चाणक्य के अर्थशास्त्र में भी वेटलैंड का उल्लेख मिलता है, जहाँ इसे 'अनूप' या अतुलनीय भूमि के रूप में जाना जाता है, और इसे पवित्र माना जाता है।

अपने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत में वेटलैंड्स के कुछ ऐसे उदाहरणों का उल्लेख किया, जो महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक क्षमता को बनाए रखते हैं और अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं।

चिल्का झील, उड़ीसा

पक्षियों की 150 से अधिक प्रजातियों के लिए एक शीतकालीन मैदान, और इरावदी डॉल्फिन के अन्तिम घरों में से एक, चिल्का वेटलैंड एक खारे पानी की झील और उथला लैगून है जो बंगाल की खाड़ी के साथ एक मुहाना बनाता है। चिल्का को उत्तर से दया, भार्गवी और नूना नदियों और दक्षिण से रुशिकुल्या नदी द्वारा पानी मिलता है। विभिन्न प्राकृतिक आवास (मीठे पानी, डेल्टा और लवणीय) चिल्का को एक अद्वितीय चरित्र देते हैं, जिससे यह दुनिया में सबसे महत्त्वपूर्ण ईकोटोन (ताज़ा पानी-समुद्री पानी) प्राकृतिक आवासों में से एक बनता है। अपने अद्वितीय निवास स्थान और विशाल जैविक विविधता के कारण जिसमें विभिन्न संकटग्रस्त और लुप्तप्राय प्रजातियाँ शामिल हैं, चिल्का को 1981 में अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व की वेटलैंड की रामसर सूची में जोड़ा गया था। चिल्का भारत की सम्भावित UNESCO विश्व धरोहर स्थलों में से एक है।

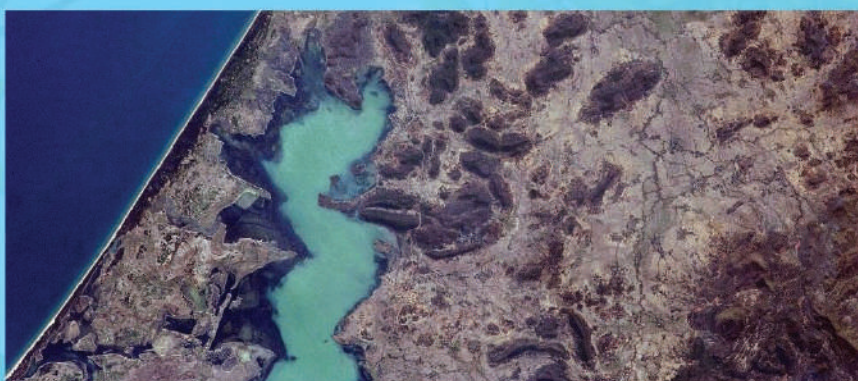

वेदांथंगल, तमिलनाडु

वेदांथंगल पक्षी अभयारण्य तमिलनाडु के चेंगलपट्टू ज़िले के सबसे पुराने पक्षी-संरक्षित क्षेत्रों में से एक है। यह साइट एक महत्त्वपूर्ण पक्षी और जैव विविधता क्षेत्र (IBA) है और इसमें कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जैसे कि ब्लैक-हेडेड आइबिस, यूरेशियन स्पूनबिल, ब्लैक-क्राउन्ड नाइट हेरॉन और पेन्टेड स्टॉर्क। मीठे पानी की यह वेटलैंड एक जन-संरक्षित जलपक्षी क्षेत्र है, जिसका इतिहास सदियों पुराना है। स्थानीय लोग इस बगुलों के आवास की रक्षा करते रहे हैं और बदले में झील के खादयुक्त पानी से लाभान्वित होते रहे हैं।

लोकटक झील, मणिपुर

लोकटक मणिपुर में कई धाराओं और नदियों की यात्रा का अन्त होता है। यह एक स्पंदनशील झील है और भारत के उत्तरपूर्वी क्षेत्र में सबसे बड़ी ताज़े पानी की झील होने पर गौरवान्वित है। यह झील तैरते गोलाकार दलदलों के लिए जानी जाती है, जिन्हें स्थानीय भाषा में फुमदिस कहा जाता है। ये दलदल लगभग द्वीपों की तरह दिखते हैं और ये मिट्टी, कार्बनिक पदार्थ और वनस्पतियों का एक समूह होते हैं। इस झील में दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है, केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जो लुप्तप्राय संगाई मृग, जोकि मणिपुर का राज्य पशु भी है, की अन्तिम शरणस्थली है। इसके अलावा, झील जलीय पौधों की लगभग 230 प्रजातियों, पक्षियों की 100 प्रजातियों और काकड़ हिरण, साम्भर और भारतीय अजगर जैसे जीवों की 400 प्रजातियों को आश्रय देती है। लोकटक पक्षियों को देखने वालों के लिए एक दर्शनीय स्थान है। मणिपुरी सभ्यता के आरम्भ से अब तक के इतिहास का गवाह रही इस झील से जुड़े बिना मणिपुरियों की सांस्कृतिक और पारम्परिक पहचान कभी पूरी नहीं हो सकती। पारिस्थितिक स्थिति और इसके जैव विविधता मूल्यों को ध्यान में रखते हुए, झील को 23 मार्च, 1990 को रामसर कन्वेंशन के तहत अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व की वेटलैंड के रूप में नामित किया गया था।

साम्भर झील, राजस्थान

साम्भर साल्ट लेक भारत की सबसे बड़ी खारी झील है और राजस्थान के अधिकांश नमक उत्पादन का स्रोत है। शाकम्बरी माता के मन्दिर के किनारे स्थित इसे शाकम्बरी झील के नाम से भी जाना जाता है। झील हर साल 196,000 टन से अधिक स्वच्छ नमक का उत्पादन करती है, जो भारत के कुल नमक उत्पादन का 10 फीसदी है। झील विशेष शैवाल और बैक्टीरिया के लिए जानी जाती है जो झील में उत्पन्न होते हैं। यह पानी को आकर्षक रंग देते हैं जो झील की पारिस्थितिकी को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रवासी पक्षियों को भी बनाए रखता है। एक प्रसिद्ध रामसर वेटलैंड, यह स्थल बड़ी संख्या में राजहंस सहित विभिन्न प्रकार के शीतकालीन जलपक्षियों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

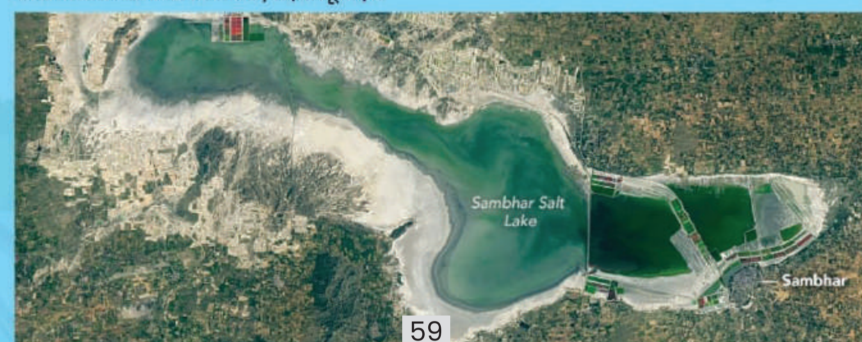

स्थानीय त्योहार द्वारा संरक्षित कश्मीरी झरना

पंजथ नाग दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग ज़िले में ट्राउट मछली के पालन और नीचे की ओर कई गाँवों में पीने और सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति करता है। एक स्थानीय त्योहार, रोहन पोश की परम्परा के तहत गाँव के सैकड़ों पुरुष और बच्चे साल में एक बार झरने में मछली पकड़ने जाते हैं। सामूहिक गतिविधि के तहत लोग सिल्ट और वीड्स को साफ़ करते हैं और शेष वर्ष के लिए इसके जल स्तर का प्रतिधारण करते हैं। इस झरने की एक पौराणिक प्रासंगिकता है; इसकी सफ़ाई की परम्परा आदिकाल से चली आ रही है।

दूरदर्शन पर हमारी टीम ने समुदाय और उसके प्रयासों के बारे में अधिक जानने के लिए समुदाय के लोगों से बात की।

"पंजथ भारत में सबसे बड़ा झरना है। इसका नाम 'पंच हाथ'– पाँच सौ के लिए कश्मीरी अंक से लिया गया है। इस झरने में बहुत सारी मछलियाँ निवास करती हैं, विशेष रूप से ट्राउट और कश्मीरी मछली। बचपन से हम सुनते आ रहे हैं कि हमेशा इससे जुड़े सांस्कृतिक मूल्यों के कारण तालाब को साफ़ रखना होता है। उसके लिए हमने एक दिन तय किया है, उस दिन हमारे गाँव और आस-पास के गाँव के लोग टोकरी लेकर आते हैं और उसमें जो मछलियाँ और गन्दगी होती है, उन्हें अलग करते हैं। इस तरह इस तालाब की सफ़ाई की जाती है, जिससे 50 गाँवों की ज़मीन सींची जाती है। जितनी तेज़ी से इस तालाब में मछलियाँ बढ़ती हैं, उतनी तेज़ी से किसी और तालाब में नहीं बढ़ती। यहाँ साल में एक बार मछली उत्सव होता है, इससे बागवानी को फायदा होता है और यहाँ का पानी भी साफ़ हो जाता है," गुलाम मोहम्मद घनाई बताते हैं।

"हमारे यहाँ यह पर्व कई वर्षों से चला आ रहा है। इस गाँव के पुराने लोगों ने, जो कृषि और बागवानी बहुत करते थे, इस त्योहार की शुरुआत इसलिए की; क्योंकि वे साल में एक बार इस झरने की सफ़ाई किया करते थे और गाँव में आज भी लोगों की कमाई का ज़रिया खेती ही है। कृषि का अर्थ है संस्कृति के साथ समझौता, इसलिए झरनों का महत्त्व है, क्योंकि जब बीज बोया जाता है, धान की क्यारियाँ तैयार की जाती हैं और पानी की धार का झुकाव किया जाता है, इसकी बहुत आवश्यकता होती है।

मछली उत्सव के दौरान लोग इसे आनन्द के रूप में लेते हैं और झरने को साफ़ करते हैं ताकि इसका पानी उनके खेतों में जाकर उनकी मदद करे। अलग-अलग जगहों के लोग इस त्योहार के बहाने आपस में बातचीत करते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यह मई के महीने के दौरान एक आकर्षण बन जाता है, जिसमें लोग इकट्ठा होते हैं और तालाब को साफ़ करते हैं ताकि उनके खेतों में पानी आ सके," राव फ़रमान अली कहते हैं।

कश्मीर के पंजथ त्योहार के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

वेटलैंड कन्ज़र्वेशन में विश्व में अग्रणी भारत

डॉ. वीरेन्द्र आर. तिवारी

निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान

डॉ. गोपी जी. वी.

वैज्ञानिक, भारतीय वन्यजीव संस्थान

डॉ. एस.ए. हुसैन

वैज्ञानिक, भारतीय वन्यजीव संस्थान

भारत, जैव विविधता के 4 हॉटस्पॉट वाले विशाल विविध देशों में से एक है, जिसमें विभिन्न आकारों में कई प्रकार के वेटलैंड्स हैं। भारतीय वेटलैंड को उनकी विविधता के लिए जाना जाता है, क्योंकि इन्हें सभी 10 जैव-भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया है। इन वेटलैंड्स में ऊँचाई वाली झीलें जैसे ट्रांस-हिमालय में लद्दाख की त्सो कार, मणिपुर के एशिया लोकटक में सबसे बड़ी मीठे पानी की झील, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की बाढ़ से प्रभावित मैदान, राजस्थान में साम्भर जैसी खारे पानी की झील, केरल में वेम्बनाड जैसे बैकवाटर्स और तमिलनाडु के वेदांथंगल, कुंथनकुलम जैसे टैंक, पश्चिमी घाटों की मिरिस्टिका जैसी दलदल, पश्चिम बंगाल में सुन्दरवन के मैनग्रोव तथा कीचड़दार भूमि और भारत के पश्चिम तथा पूर्वी तट के साथ कोरल रीफ आदि शामिल हैं।

वेटलैंड्स मानव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे विभिन्न तरीकों से कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ जैसे कि कृषि फसलों, मछलियों और अन्य जलीय जीवों के लिए प्राकृतिक आवास प्रदान करते हैं, जो मनुष्यों के लिए भोजन हैं (उत्पादक सेवा); पानी से हानिकारक वेस्ट तथा गैसों, प्रदूषकों को शुद्ध कर और वातावरण से कार्बन को अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन (सहायक सेवा) से निपटते हैं; भूजल का पुनर्भरण करते हैं और कई प्रजातियों के लिए आवास प्रदान करते हैं, मिट्टी को उर्वर बनाते हैं (नियामक सेवा); मनोरंजन और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं और सांस्कृतिक पहचान तथा आध्यात्मिक महत्त्व (सांस्कृतिक सेवा) के हैं।

वेटलैंड्स को कभी-कभी किडनी ऑफ़ द लैंडस्कैप के रूप में वर्णित किया जाता है, क्योंकि वे जल विज्ञान और रासायनिक दायरे में कार्य करते हुए प्राकृतिक तथा मानव दोनों स्त्रोतों के प्रदूषणकारी अवयवों को निकाल देते हैं।

वेटलैंड्स को व्यापक खाद्य श्रृंखला और समृद्ध जैव विविधता के लिए 'जैविक सुपरमार्केट' भी कहा जाता

है। वे विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों जैसे जलपक्षी, मगरमच्छ तथा कछुओं के लिए अद्वितीय आवास प्रदान करके महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीवों की कई दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त प्रजातियाँ जैसे सुन्दरवन में बाघ, चिल्का लैगून में इरावदी डॉल्फिन, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों में गंगा नदी डॉल्फिन, केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान में मणिपुर ब्रो एंटलर हिरण, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र बाढ़ के मैदानों में स्वाम्प हिरण, ऊदबिलाव की तीन प्रजातियाँ, भारत की तीन मगरमच्छ प्रजातियाँ, कछुए की मीठे पानी की कई प्रजातियाँ, लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में काली गर्दन वाले सारस, असम में सफेद पंखों वाली वुड बत्तख, गंगा के बाढ़ के मैदानों में सारस क्रेन तथा भारतीय स्किमर, घोंसलों के समूह के जलपक्षी और कई अन्य मछलियाँ, उभयचर और सरीसृप प्रजातियाँ वेटलैंड्स को अपना घर मानती हैं।

इनके अलावा, अब वेटलैंड्स को वैश्विक स्तर पर कार्बन डाइऑक्साइड सिंक और जलवायु परिवर्तन को कम करने वाले कारक के रूप में वर्णित किया जाता है।

मानव और पर्यावरण को दी जाने वाली इतनी अधिक सेवाओं के कारण, आने वाली पीढ़ियों के लिए इन वेटलैंड्स की रक्षा और संरक्षण करना स्वाभाविक है। इसलिए यूनेस्को ने 1971 में ईरान के रामसर शहर में एक कन्वेंशन की स्थापना की जिसे वेटलैंड कन्वेंशन के नाम से जाना जाने लगा। वेटलैंड कन्वेंशन का उद्देश्य 'दुनिया भर में सतत विकास प्राप्त करने की दिशा में योगदान के रूप में स्थानीय तथा राष्ट्रीय कार्यों और अन्तरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से सभी वेटलैंड्स का संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग' करना है। जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अपनी प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में भारत 1 फरवरी, 1982 को इस कन्वेंशन का सदस्य बना। भारत में 1982 और 2013 के बीच रामसर स्थलों की संख्या केवल 26 थी। दिसम्बर 2022 तक रामसर स्थलों की संख्या 75 हो गई है इनकी संख्या 75 करते हुए हाल के वर्षों में वेटलैंड्स को बढ़ाने की दिशा में कई

पहल की हैं। इसमें, देश के भूभाग का 4.9 प्रतिशत यानी 13,26,677 हेक्टेयर क्षेत्र शामिल है और इसमें, एशिया में सबसे अधिक रामसर स्थल हैं। भारतीय राज्यों में, तमिलनाडु में 14 रामसर स्थलों के साथ सबसे अधिक संख्या का रिकॉर्ड है, इसके बाद उत्तर प्रदेश में 10 रामसर स्थल हैं।

इस सकारात्मकता के बावजूद, भारत में वेटलैंड्स के लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है। वेटलैंड्स कई प्राणियों के लिए उपयोगी हैं, लेकिन ये मानवजनित गतिविधियों के निरंतर दबाव के साथ दुनिया में सबसे असुरक्षित पारिस्थितिक तंत्रों में से एक हैं। इन गतिविधियों ने प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से वेटलैंड्स को प्रभावित किया है। भारत 2022 में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि के साथ दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत का कृषि क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में 20.19 प्रतिशत का योगदान देता है और इसका सीधा दबाव देश के वेटलैंड्स पर पड़ता है। फसल उगाने के लिए वेटलैंड का संरक्षण, घरेलू उपयोग के लिए पानी की माँग, औद्योगिक अपशिष्ट जल निकासी, जल विज्ञान परिवर्तन, पोषकों में वृद्धि, ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में परिवर्तन, तेज़ी से बढ़ने वाली किस्में और जलवायु परिवर्तन आज वेटलैंड को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं।

हालाँकि चुनौतियाँ मौजूद हैं, लेकिन अवसर चुनौतियों से अधिक हैं और भारत हमेशा यह दिखाने में विश्व में अग्रणी रहा है कि सरल तरीकों से पारिस्थितिक पुनर्स्थापन कैसे किया जा सकता है। ऐसी ही सफलता की एक कहानी ओडिशा की चिल्का झील का पुनर्जीवन है। यह झील देश में प्रवासी पक्षियों के लिए सबसे बड़ी शरणस्थली है। गाद और अपशिष्ट के कारण झील का मुहाना बंद होने के कारण इसे 1993 में मॉन्ट्रेक्स रिकॉर्ड में रखा गया था, लेकिन प्रशासन द्वारा किए गए

पुनर्जीवन प्रयासों के कारण, 2002 में इसे रिकॉर्ड से हटा दिया गया और 2002 के लिए रामसर वेटलैंड कन्ज़र्वेशन पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

इसी तरह, भारत सरकार ने जलीय पारिस्थितिक तंत्र और वेटलैंड (संरक्षण और प्रबन्धन नियम) के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय योजना (एनपीसीए) 2017 के रूप में वेटलैंड्स के संरक्षण के लिए एक प्रबन्धन योजना तैयार की है। एनपीसीए योजना का उद्देश्य जैव विविधता और पारिस्थितिक तंत्र में सुधार के अलावा वांछित जल गुणवत्ता वृद्धि प्राप्त करने के लिए वेटलैंड्स का समग्र संरक्षण और पूर्वावस्था प्राप्ति है। इसका उद्देश्य एकीकृत प्रबन्धन योजनाओं, क्षमता विकास तथा अनुसंधान और कार्यान्वयन में सहायता प्रदान कर राज्यों के साथ विकास कार्यक्रम में वेटलैंड्स को मुख्यधारा में लाने को बढ़ावा देना है।

मानव कल्याण, समावेशी आर्थिक विकास और जलवायु शमन तथा अनुकूलन के लिए वेटलैंड्स आवश्यक हैं। वे मानव उपभोग और कृषि के लिए पानी उपलब्ध कराते हैं। वे नदी तटों की रक्षा करते हैं और शहरों तथा बस्तियों को सुरक्षित और परिवर्तनीय बनाने में मदद करते हैं। वे पृथ्वी के सबसे बड़े प्राकृतिक कार्बन भंडार हैं। वे जैव विविधता और प्रकृति की प्रचुरता तथा अनूठेपन में सहायक हैं। वे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने और अनुकूल बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। वे स्थायी आजीविका प्रदान करते हैं और मानव स्वास्थ्य तथा कल्याण के लिए आवश्यक हैं। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए वेटलैंड्स द्वारा प्रदान किए जाने वाले कई लाभ और सेवाएँ आवश्यक हैं। सतत विकास लक्ष्य, 2030 तक ग़रीबी उन्मूलन और सतत विकास हासिल करने के लिए एक महत्त्वाकांक्षी एजेंडे का प्रतिनिधित्व करते हैं और भारत इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध है।

नियामक ढाँचा, नीतियाँ और सरकारी कानून तभी प्रभावी हो सकते हैं, जब देश के नागरिक वेटलैंड्स कंज़र्वेशन के लिए अभिप्रेरित हों और इन प्रयासों में शामिल हों। इसलिए सरकार वेटलैंड के महत्त्व के बारे में भागीदारी प्रबन्धन और संरक्षण जागरूकता के माध्यम से वेटलैंड प्रबन्धन में सक्रिय रूप से भाग लेने, वेटलैंड के खतरे को कम करने के उपाय करने, वेटलैंड को पुनर्स्थापित करने तथा सर्वोत्तम तरीकों को सम्प्रेषित करने; मौजूदा 75 रामसर स्थलों को प्राथमिकता के आधार पर प्रभावी ढंग से संरक्षित तथा प्रबन्धित करने और एकीकृत नदी बेसिन प्रबन्धन तथा पुनर्स्थापन के माध्यम से रामसर स्थलों के अलावा सभी वेटलैंड्स का विवेकपूर्ण उपयोग करने और वैज्ञानिक मार्गदर्शन, संचार, अन्तरराष्ट्रीय सहयोग तथा क्षमता निर्माण जैसे उपायों के द्वारा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए जनभागीदारी के माध्यम से स्थानीय समुदायों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा सभी आयु वर्ग के लोगों को शामिल करने और प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Dr. Pramod Sawant @DrPramodPSawant

Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji made a special mention in todays #MannKiBaat about the unique #PurpleFest, India's first inclusive programme organised by Goa Government at Panaji. 1/3

WATCH:

youtube.com
PM Modi makes Special Mention of Purple Fest Organised ...
Subscribe Now - https://bit.ly/2YnSDEX Stay Updated! 🔔 • Facebook - ...

12:07 PM · Jan 29, 2023 · **4,323** Views

SFAC India @sfacindia

In 'Mann Ki Baat' Hon'ble Prime Minister @narendramodi ji mentioned about Aland Bhootai Millets FPC of Karnataka. People are liking their khakhra, biscuits and laddus.

Have you tried these delicious products by Aland Bhutai Millets FPC, Kalburgi?

#SFACIndia #IYM2023 #MannKiBaat

1:26 PM · Jan 31, 2023 · **677** Views

Binbag Recycling @BinbagRecycling

Grateful to Hon'ble PM Shri Narendra Modi ji to have spoken about the issue of e-waste recycling in the 29th Jan episode of Mann Ki Baat.

We're confident that the e-waste industry will receive much-needed impetus when leaders of the country bring the issue to the forefront.

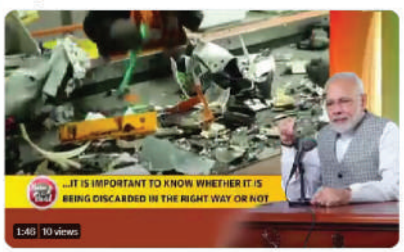

9:38 AM · Feb 1, 2023 · **19** Views

Nirmala Sitharaman @nsitharaman

"..a matter of joy...pride for us is that in...2022, there have been a total of 145 patents in the name of this institute...two patents every five days. This record is amazing in itself. I would...like to congratulate the team of IISc for this success."@PMOIndia

#MannKiBaat

12:32 PM · Jan 29, 2023 · **68.5K** Views

Dr. S. Jaishankar @DrSJaishankar
India government official

The first #MannKiBaat of 2023 was informative and interesting at the same time.

PM @narendramodi has given us an abiding message to strengthen our Republic by Jan Bhagidari, Sabka Prayas and by performing our duties.

4:05 PM · Jan 29, 2023 · **141.1K** Views

Anurag Asati @AnuragAsati124

A proud moment for @TheKabadiwala Team.
Prime Minister Shri @narendramodi ji mentions The Kabadiwala in Man Ki Baat.
We are beyond elated and honored to have been mentioned by Prime Minister Shri Narendra Modi Ji in his latest "Man Ki Baat" @ChouhanShivraj
#ManKiBaat #Kabadiwala

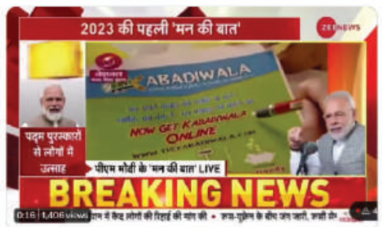

Shivraj Singh Chouhan and 5 others

3:53 PM · Jan 29, 2023 · **4,835** Views

Iram Maimuna
Visionary| Innovator|Sustainability Activist |Profit for Purpose|WEF Signatory | We have enough sou...
1w · Edited

Our honourable Prime minister Narendra Modi stressed on increase in electronics and the right disposal of E waste . E-Waste Social is enabling businesses to recycle there waste efficiently by connecting them to the closest authorized recycler thereby ensuring that waste is recycled in an environmental friendly manner and also that the business gets right value out of waste . We are promoting #localrecycling #resourcerecovery and #circulareconomy . We salute our Prime Minister for the vision and creating an ecosystem for development. Narendra Modi #india E-Waste Social #recyclingideas #circulareconomy #localrecycling #msme #ficci FICCI MSME Business Forum India NASSCOM

PM Modi praises rise in patents in India, Lays stress on right disposal of E-waste
m.economictimes.com

24 · 1 Comment

Transforming Rural India Foundation @TRIFoundation

Proud to announce that the Millet Cafe in Raigarh, Chhattisgarh has been praised by none other than our Prime Minister, Shri. @narendramodi, on his radio program 'Mann Ki Baat'!

@TRIFoundation (TRIF) has supported the setting up of a millet cafe in Raigarh, Chhattisgarh. (1/2)

1:26 PM · Jan 31, 2023 · **1,160** Views

Amitabh Kant @amitabhk87

Wonderful that PM @narendramodi spoke at length on millets in his @mannkibaat today.
#G20 & the #InternationalYearofMillets are a unique opportunity for India to usher in behavioural change & take macro & micro nutrients of this superfood to the kitchens of the world.

2:40 PM · Jan 29, 2023 · **11.9K** Views

kumud joshi
Water Resources | Climate Change | Sustainable Agriculture | Project Management | Unilever | Ex R...
1w · Edited

World Wetlands Day #worldwetlandsday is celebrated annually on February 2 to create awareness of the vital role that wetlands play in maintaining a healthy and balanced ecosystem. #ecosystems The theme of world wetlands day 2023 is wetlands restorations #restoration. Wetlands serve as crucial habitats for numerous species of flora and fauna and provide a range of benefits including water purification, flood control, and carbon sequestration. Prime minister Mr. Narendra Modi #narendramodi also highlighted the importance of wetlands #wetlands in his Man ki Baat #mannkibaat on 29th January. Let's take a moment to acknowledge the importance of wetlands and pledge to conserve and protect them for future generations. #WorldWetlandDay #WetlandConservation #IndiaBiodiversity #MOEF #moefcc #naturebasedsolutions #earthobservation #wetlandsconservation #climatechange Gajendra Singh Shekhawat

PM Modi Highlighting the Importance of Wetlands and Ramsar Sites during Mann ki Baat on 29/01/2023
https://www.youtube.com/

Ashwini Vaishnaw @AshwiniVaishnaw

अगर E-Waste को ठीक से Dispose नहीं किया गया, तो यह, हमारे पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन, अगर सावधानीपूर्वक ऐसा किया जाता है, तो, यह Recycle और Reuse की Circular Economy की बहुत बड़ी ताकत बन सकता है।- पीएम @narendramodi.

#MannKiBaat
Translate Tweet

3:10 PM · Jan 29, 2023 · **40.3K** Views

G Kishan Reddy @kishanreddybjp

Jammu and Kashmir - The Paradise on Earth!

PM Shri @narendramodi mentions about the beauty & serene locales of J&K in today's #MannKiBaat.

#DekhoApnaDesh
#IncredibleIndia

Narendra Modi and 5 others

1:50 PM · Jan 29, 2023 · **5,522** Views

Indian Council Of Historical Research(ICHR) @ICHRMOE_1972

यह हर्ष की बात है कि मन की बात कार्यक्रम के 97वें एपिसोड में माननीय प्रधानमंत्री जी ने 'भारतम लोकतन्त्रास्य जननी' पुस्तक पर चर्चा करते हुए पुस्तक के कई आलेखों पर अपने विचार रखे। उन्होंने परिषद के सदस्य सचिव जी के एक आलेख पर भी चर्चा की।
#MaanKiBaat
Translate Tweet

Ministry of Education and 4 others

12:32 PM · Jan 29, 2023 · **286** Views

Nitin Gadkari @nitin_gadkari

Events like Purple Fest will encourage #Divyang people's ability to make a difference and bring changes in society.

#MannKiBaat
@narendramodi

1:27 PM · Jan 29, 2023 · 26.5K Views

Pema Khandu @PemaKhanduBJP

How heartening that Hon PM Shri @narendramodi Ji has mentioned former Hon Min Shri Karma Wangchu Ji, who was conferred Padma Shri posthumously, in his #MannKiBaat.

Arunachal remains indebted to contributions of Shri Wangchu in promoting & preserving our rich cultural heritage.

11:18 AM · Jan 29, 2023 · 2,970 Views

Attero @AtteroIndia

We are honoured to have been recognised in Mann Ki Baat for our unique & globally patented #EWaste #Recycling Technology! It has further strengthened our commitment to creating a sustainable #environment for all.

#MannkiBaat - youtube.com/watch?app=desk...

#Attero

Rising Flame @RisingFlameNow

We're thrilled to hear Honourable Prime Minister Modi recognise the critical importance of @purplefestgoa by @discommgoa (Government of #Goa), @grpawaskar Disability Commissioner and @tahahaaziq in strides to further the mission of #AccessibleIndia! (1/4)

Hardeep Singh Puri @HardeepSPuri

India has been a cradle of civilisation & indeed democracy!
In today's #MannKiBaat PM @narendramodi Ji reviews the book 'India: The Mother of Democracy' prepared & published by ICHR.
Speaks about how Sri Guru Nanak Dev Ji too laid emphasis on unanimous decision making.
@PMOIndia

Ministry of Culture and 9 others

2:43 PM · Jan 29, 2023 · 9,037 Views

IISc Bangalore @iiscbangalore

We are very grateful to the Hon'ble PM Shri Narendra Modi for lauding IISc's patenting efforts in his #MannKiBaat & highlighting the fact that IISc had 145 patents filed, granted or registered in 2022.
youtube.com/watch?v=6XoOuy...
@PMOIndia @narendramodi @mygovindia
@EduMinOfIndia

youtube.com
IISc बेंगलुरु की शानदार सफलता
#MannKiBaat

5:00 PM · Jan 29, 2023 · 17.6K Views

Kiren Rijiju @KirenRijiju

#KheloIndia

Narendra Modi @narendramodi · Jan 29
India government official
Snow sports and more...news from Jammu and Kashmir which will bring a smile on your face. #MannKiBaat

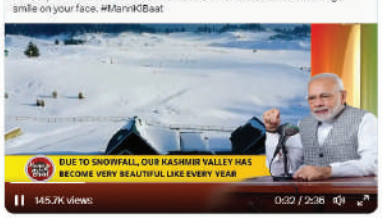

पीएम की 'मन की बात' में 'हो' के संरक्षक का जिक्र

रांची @ पत्रिका. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात में कोल्हान के जानुम सिंह सोय का जिक्र किया है। जानुम सिंह सोय कोल्हान इलाके के जाने-माने शिक्षाविद और हो भाषा के संरक्षक हैं। पिछले चार दशकों से वो हो भाषा के संरक्षण के लिए कार्यरत हैं।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा

तकनीकी दशक का सपना साकार करेंगे नवोन्मेषक : मोदी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 29 जनवरी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि देश में घरेलू स्तर पर दाखिल किए जाने वाले पेटेंट की संख्या, विदेशों से दाखिल किए जाने वाले पेटेंट से अधिक हो गई है और उन्हें विश्वास है कि 'तकनीकी दशक' (टेकेड) होने का भारत का सपना इन नवोन्मेषकों के दम पर पूरा होगा। मोदी ने नए साल में अपने पहले 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा कि यह देश की बढ़ती वैज्ञानिक क्षमता को रेखांकित करता है।

प्रधानमंत्री ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि तकनीकी दशक बनने का भारत का सपना उसके नवोन्मेषकों और उनके द्वारा दाखिल किए जाने वाले पेटेंट से पूरा होगा।' कहा कि प्रतिष्ठित भारतीय विज्ञान संस्थान ने 2022 में 145 पेटेंट कराए हैं, जो शानदार मिसाल है।

योग, ज्वार-बाजरा से लोगों की सेहत सुधर रही है : मोदी

'मन की बात' की 97वीं कड़ी में बोले प्रधानमंत्री

Echoes of Padma awards heard in Naxal-affected areas, says PM

New Delhi: Prime Minister **Narendra Modi** in his *Mann Ki Baat* highlighted that this year the echoes of the Padma Awards are heard even in those areas which used to be Naxal affected as those who have shown the right path to misguided youth in Naxalite-affected areas have been honoured.

"For this, Ajay Kumar Mandavi, who does wood carving in Kanker, and Parshuram Komaji Khune, associated with the famous Jharipatti Rangbhoomi of Gadchiroli, have also received this honour. Similarly, Ramkuiwangbe Niume, Bikram Bahadur Jamatia and Karma Wangchu, who are involved in the preservation of their culture in the North-East, have also been honoured," the PM said.

He emphasised that this time there has been a good representation of the tribal community and people associated with tribal life among the Padma awardees. Sharing that tribal life is different from the hustle and bustle of the cities, the PM said that its challenges are also different.

"Despite this, tribal societies are always ready to preserve their traditions. Efforts are also made to preserve and research aspects related to tribal communities. Similarly, many great personalities who have worked on tribal languages have received Padma Awards. It is a matter of pride for all of us," he added.

The PM highlighted that people working with tribals like Siddhi, Jarawa and Onge have also been honoured this time. Drawing attention to the growing interest in India and abroad in yoga and millets and highlighting that both are linked to good health, the PM in his *Mann Ki Baat* said that a revolution is on the way because of public participation in both campaigns. TNN

लोकतंत्र हमारी रगों में, हम स्वभाव से लोकतांत्रिक समाज : पीएम मोदी

मन की बात : पीएम ने कहा, बाबा साहेब ने बौद्ध भिक्षु संघ की तुलना भारतीय संसद से की थी

'Mann Ki Baat': PM Modi Praises Odisha Milletpreneurs

Bhubaneswar(AOBureau): Prime Minister Narendra Modi on Sunday praised Odisha's Milletpreneurs and the SHG of Sundergarh which has taken up the Odisha Millet Mission. During his 97th radio talk show 'Mann Ki Baat', Modi elaborated the new term Milletpreneurs. "You must have heard the word entrepreneur, but have you heard Milletpreneurs? Milletpreneurs of Odisha are in the limelight these days. A Self Help Group of about 1500 women of the tribal district Sundergarh is associated with the Odisha Millets Mission," he said. He further added women from the district are making everything from millets like cookies, rasgulla, gulab jamun, and even cakes. Due to their great demand in the market, the income of women is also increasing, Modi pointed out. The United Nations has taken the decision of both International Yoga Day and International Year of Millets after India's proposal. Secondly, yoga is also related to health and millets also play an important role in health, the PM said. He also explained about a millet café in Chhattisgarh where items like Chilla, Dosa, Momos, Pizza and Manchurian are very popular. The Prime Minister raised the importance of wetland on conservation of biodiversity. During his talk, he explained the Ramsar site featuring Chilika lake of Odisha. "These wetlands of India are also an example of our natural potential. Chilika Lake of Odisha is known to shelter more than 40 waterbird species," he said.

ভোট টানতে আদিবাসী লড়াইয়ের প্রশংসা প্রধানমন্ত্রীর 'মন কি বাতে'

'ପଦ୍ମ ପୁରସ୍କାର ମଧ୍ୟରେ ଆଦିବାସୀଙ୍କୁ ଦେଖି ଭାରତ ଗର୍ବିତ'

Domestic patent filings now more than overseas ones: PM

TIMES NEWS NETWORK

Getty Images

In his monthly radio address Mann ki Baat, PM Modi said innovators and their patents will help fulfil India's dreams of a 'Techade'

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi said on Sunday that for the first time in 11 years the number of domestic patent filings exceeded overseas filings, pointing to an increased drive towards innovation in the country.

In his monthly radio address Mann ki Baat, the PM said that innovators and their patents will help fulfil dreams of India's "Techade", helping Indians take advantage of world class technology and products that are developed in the country.

While detailed data was not readily available, Modi said that India now ranked as the seventh highest on the list of countries for patent filing and fifth on trademarks and had made significant gains on the Global Innovation Index. Pointing to the jump in domestic patent filings, he said: "It also shows the growing scientific prowess of India."

Modi made a special mention of Indian Institute of Science, Bangalore, which has some 145 patents.

The government has lined up a series of measures, including strengthening the patents office, to speed up the entire process and make it cheaper and easier for startups and innovators.

On 'Mann Ki Baat,' PM Modi stresses recycling of e-waste

TRIBUNE NEWS SERVICE

NEW DELHI, JANUARY 29

Noting that a United Nations (UN) report said 50 million tonnes of e-waste is being generated every year, Prime Minister Narendra Modi said has if the weight of all commercial planes built so far is combined, it would not equal the amount of e-waste being released.

"It is like every second 800 laptops are being thrown away," he said during 'Mann Ki Baat', calling for judicious disposal of electronic gadgets.

Modi said if people don't properly dispose of e-waste, it would prove detrimental to the environment.

"Every household has electronic devices. Today's devices is tomorrow's e-waste. Therefore, proper disposal of electronic devices is a must," said the PM.

He called for recycling e-waste and said doing so was no less than making wealth from waste. "In all, 17 precious metals, including gold, silver, copper and nickel, can be extracted from e-waste. At present, only 15-17 per cent of the e-waste is being recycled," said PM Modi in his first "Mann Ki Baat" of the year.

TIME FOR 'TECHADE'

Domestic patent filings have outscored the country's foreign patent filings. India's dream of 'techade' will be fulfilled on the strength of its innovators.

Narendra Modi, PRIME MINISTER

The Prime Minister also lauded the rising acceptance of yoga and millets, saying that it was on India's proposals that the UN adopted June 21 as the International Day of Yoga and declared this year as the International Year of Millets.

"Milletpreneurs" of Sundargarh district in Odisha are in the limelight these days, he said, mentioning a self-help group of about 1,500 women producing several delicacies made of millets.

Citing several other developments in different states related to millets growing popularity, he said meals prepared from them were being served at various G20 events being held across the country.

In his address, Modi noted that this year's Padma awards, described by him as "People's Padma", included a number of tribal people or those working for the community besides those who have strengthened the world of music.

Lauding a book titled "India — The Mother of Democracy", the Prime Minister said Indians were proud of the fact that their country is the "mother of democracy".

Modi also said domestic patent filings had outscored the country's foreign patent filings as he expressed confidence that India's dream of "techade" — his call for Indian technologies to dominate the decade — will be fulfilled on the strength of its innovators.

Modi has in the past used "techade" to describe the decade being dominated by homegrown technologies.

He said India's rank in patent filing is seventh globally while it is fifth in trademark registrations.

ਸਾਡੇ ਖ਼ੂਨ ਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ 'ਚ ਵਸਿਆ ਹੈ ਲੋਕਤੰਤਰ : ਮੋਦੀ

ਪੀਐੱਮ ਨੇ ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ 'ਚ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਸਮਾਗਮਾਂ ਬਾਰੇ ਕੀਤੀ ਚਰਚਾ

Mann ki Baat: PM calls for relentless efforts to strengthen the republic

The Hindu Bureau

NEW DELHI

In the 97th episode of his monthly radio address, *Mann Ki Baat*, on Sunday, Prime Minister Narendra Modi called for relentless efforts to strengthen the Indian Republic. He said the republic became strong "by public participation", "by everyone's effort" and "by performing one's duties towards the country".

Mr. Modi also congratulated the Padma awards winners and hailed their "nation first" approach.

The Prime Minister said there had been a good representation of the tribal community and people associated with tribal life among the Padma awardees. He said many great personalities who had worked on tribal languages like Toto, Ho, Kui, Kuvi and Manda had received the awards.

"It is a matter of pride for all of us," he said.

Talking about the history of democracy in India, he said that a village in Tamil Nadu – Uthiramerur – had an inscription from 1,100 to 1,200 years ago which was like a mini-Constitution.

"It has been explained in detail how the gram sabha should be conducted and what the procedure for selection of its members shall be," he said.

"Another example of democratic values in the history of our country is the Anubhav Mandapam of Lord Basaveshwara of the 12th century. Here, free debate and discussion were encouraged. You will be surprised to know that it was even before the Magna Carta. The republican traditions of the Kakatiya dynasty kings of Warangal were also very famous. The Bhakti movement furthered the culture of democracy in western India," he said, while mentioning about the book, *India: The Mother of Democracy*, prepared and published by the Indian Council of Historical Research (ICHR).

Just as people have made yoga and fitness a part of their lives by taking active participation on a large scale, similarly people are adopting millets on a large scale

NARENDRA MODI

Connecting millets and yoga, he said a revolution is on the way because of public participation in campaigns for both.

"Just as people have made yoga and fitness a part of their lives by taking active participation on a large scale, similarly people are adopting millets on a large scale. People are now making millets a part of their diet," he said.

Mr. Modi said if recycled carefully, e-waste could become a great force in the circular economy of recycle and reuse.

He said about 17 types of precious metals could be extracted from e-waste. "These include gold, silver, copper and nickel. So, utilising e-waste is no less than making *Kachre Ko Kanchan*. Today there is no dearth of start-ups that are doing innovative work in this direction," Mr. Modi said.

Speaking about the importance of wetland sites protected under the Ramsar Convention, he reminded about the importance of observing World Wetlands Day on February 2.

"Wetlands may be there in any country, but they have to fulfil many criteria. Only then are they declared Ramsar sites. Ramsar sites should have 20,000 or more water birds. It is important to have a large number of local fish species," he said.

ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಕರುನಾಡಿನ ಸಾಧಕರು

ಬೆಂಗಳೂರು: ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ 97ನೇ ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕರುನಾಡಿನ ಸಾಧಕರನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಚಿಕ್ಕಬಳ್ಳಾಪುರ ಜಿಲ್ಲೆ ಶಿಡ್ಲಘಟ್ಟ ತಾಲೂಕು ಪಿಂಡಿಪಾಪನಹಳ್ಳಿಯ ಪದ್ಮಶ್ರೀ ಪುರಸ್ಕೃತ ಮುನಿವೆಂಕಟಪ್ಪ ಕಲಾ ಸಾಧನೆಯನ್ನು ಶ್ಲಾಘಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅಂತೆಯೇ, ಬೀದರ್ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಹುಲಸೂರಿನ ಮಹಿಳಾ ಕಿಸಾನ್ ಮಿಲೆಟ್ಸ್ ಪ್ರೊಡ್ಯೂಸರ್

ಕಂಪನಿ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚುಗೆ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. , ಕಲಬುರಗಿ ಜಿಲ್ಲೆ ಆಳಂದ ತಾಲೂಕಿನ ತಡಕಲ್ ಗ್ರಾಮದ ಆಳಂದ ಭೂತಾಯಿ ಸಿರಿಧಾನ್ಯ ರೈತ ಉತ್ಪಾದನಾ ಕಂಪನಿ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೂ ಶ್ಲಾಘನೆ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಐಐಎಸ್‌ಸಿ ಸಂಸ್ಥೆಯು 2022ರಲ್ಲಿ 145 ಪೇಟೆಂಟ್ ಪಡೆದಿರುವುದನ್ನು ಹೆಮ್ಮೆಯ ಸಂಗತಿ ಎಂದು ಭಾಷಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ವಿವರ ಪುಟ 9

ہندوستان جمہوریت کی ماں ہے

اور جمہوریت ہماری رگوں اور ثقافت میں ہے: مودی

मन की बात - 97वें संस्करण में कहा कि जनजातीय समुदायों में काम करने वालों को किया सम्मानित

पद्म पुरस्कार विजेताओं के प्रेरक जीवन विस्तार से जानें और साझा करें : मोदी

मोटा अनाज बन रहा लोगों के जीवन का हिस्सा

लोकतंत्र की जननी है भारत

टोली को लेकर जम्मू कश्मीर के युवाओं में खासा उत्साह

रसगुल्ला, लैपटॉप से लेकर कश्मीर में क्रिकेट की चर्चा

ભારત મધર ઓફ ડેમોક્રસી : આપણી નસેનસમાં લોકતંત્ર : વડાપ્રધાન મોદી

» મોદીએ દેશવાસીઓ સમક્ષ ન્યૂ ઈન્ડિયાની બ્લ્યૂ પ્રિન્ટ રજૂ કરી » પદ્મ એવોર્ડ વિજેતા આદિવાસી સમુદાયની હસ્તીઓની પ્રશંસા » લોકોને 'ઈન્ડિયા : ધ મધર ઓફ ડેમોક્રસી' વાંચવા વિનંતી કરી

ભારતનું ટેકડેનું સપનું સંશોધકો પૂરું કરશે : PM મોદી

આદિવાસીઓ તેમની પરંપરા જાળવવા આતુર

યોગ દિવસ અને બાજરા વર્ષની ઉજવણી ભારતનું ગૌરવ

PM મોદીની 2023માં પ્રથમ વખત મન કી બાત, કહ્યું - આદિવાસી સમુદાય દેશનો અભિન્ન અંગ

નવી દિલ્હી : વડાપ્રધાન મોદીએ આજે દેશના લોકો સાથે નવા વર્ષ ૨૦૨૩માં પ્રથમ વખત મન કી બાત કાર્યક્રમને સંબોધ્યો હતો. આ મન કી બાત કાર્યક્રમનો 97મો એપિસોડ હતો. પીએમ મોદીએ આ કાર્યક્રમને સંબોધતા કહ્યું કે આદિવાસી સમુદાયના લોકો દેશનો અભિન્ન અંગ છે. આ સમુદાયના લોકોને પણ પદ્મ પુરસ્કારોથી સન્માનિત કરવામાં આવ્યા છે.

પીએમ મોદીએ કહ્યું કે લોકતંત્ર ભારતીયો લોકોની નસોમાં વસે છે. આપણી સંસ્કૃતિમાં વસે છે. આપણે સ્વભાવથી લોકશાહી સમાજ છીએ. નવું વર્ષ પણ ખુશીઓ અને આનંદ લઈને આવે છે. સંગીત ક્ષેત્ર સાથે જોડાયેલી હસ્તીઓને પણ સન્માનિત કરવામાં આવી.

MANN KI BAAT

FILE PHOTO

PM Modi Praises Rise in Patents in India, Lays Stress on Right Disposal of E-waste

'17 precious metals like gold, silver, copper, nickel can be extracted from e-waste through different processes'

Our Political Bureau

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday hailed the significant rise in patents in India over the last few years, leading to conspicuous improvement in the country's ranking in the Global Innovation Index. He also cautioned the technology sector about increasing e-waste and underlined the need for its appropriate disposal to prevent harm to the environment.

In his first monthly 'Mann ki Baat' address of 2023, the PM spoke on several issues, from promotion of millets to recognition of talent among tribals through Padma awards. He also emphasised on the need to protect biodiversity and the significant jump in the number of Ramsar wetlands in the country.

'Several start-ups are engaged in finding innovative and profitable ways of disposing of e-waste'

Modi appreciated the role of Bengaluru-based Indian Institute of Science (IISc) in innovation and research. "It is a matter of joy and pride for us that in the year 2022, there have been a total of 145 patents in the name of this institute (IISc). This means — two patents every five days... I would like to congratulate the team of IISc for this success. Today India's ranking is 7th in patent filing and 5th in trademarks," he said, adding that there has been a 50% increase in the number of patents registered in the last five years.

He also stated that in the Global Innovation Index, India has moved to the 40th position from 80th in 2015.

The PM warned that while technology is taking big strides in India, there is also the threat of growing e-waste. "Today devices like mobile phones, laptops, tablets have become common in every household. Their number will be in billions across the country. Today's latest devices are also the e-waste of the future. Whenever someone buys a new device or replaces one's old device, it becomes necessary to keep in mind whether it is discarded properly or not. If e-waste is not disposed of in the right manner it can cause harm to the environment," he said.

He said 17 kinds of precious metals can be extracted from e-waste through different processes. The list includes gold, silver, copper and nickel. Several start-ups are engaged in finding innovative and profitable ways of disposing of e-waste.

'मन की बात'मध्ये पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे प्रतिपादन

ई कचऱ्याचा पुनर्वापर हिताचा

आदिवासी समुदायासाठी प्रयत्न

MANN KI BAAT

'Democracy is in our veins, in our culture'

PM: India's dream of 'techade' will be fulfilled by innovators

HARIKISHAN SHARMA
NEW DELHI, JANUARY 29

PM Narendra Modi. File

INDIA IS a democratic society by nature, and it should be our endeavour to continuously discuss democracy and make the world aware of it, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday.

"India is the world's largest democracy and we Indians are also proud of the fact that our country is also the mother of democracy," he said in the 97th episode of Mann Ki Baat, his monthly radio programme.

"Democracy is in our veins, in our culture. For centuries, it has been an integral part of our daily lives. By nature, we are a democratic society," Modi said.

He said he received a book, *India-The Mother of Democracy*, few weeks ago. "Upon reading this book, you will realise how the spirit of democracy prevailed in every part of our country since ages," he said. "As mother of democracy, we must continuously think about this subject, discuss it and endeavour to make the world aware of it. This will strengthen the spirit of democracy in the country."

He said Dr B R Ambedkar had compared the Buddhist Bhikshu Sangha to Parliament. "He described it as an institution which had several rules guiding the motions, resolution, quorum, voting and counting of votes. Babasaheb was of the opinion that Lord Buddha must have got the inspiration for this from the political system at that time."

The PM also cited the example of a Tamil Nadu village. "There is a small but famous village in Tamil Nadu, called Uthiramerur. An inscription on a rock here, some 1,100 or 1,200 years old, amazes the world. This rock inscription is like a mini constitution. It explains in detail how the gram sabha should be conducted and what should be the process of selection of its members," he said.

"There is another example of democratic values in our history, the 12th century Anubhav Mandapam of Bhagwan Basaveshwara. Here, free debate and discussion was encouraged," he said. "You may be surprised to know this happened even before Magna Carta."

He also mentioned an event called 'Purple Fest' which was held in Goa from January 6 to 8. "This was a unique effort in itself for the welfare of the divyangs."

The Prime Minister also said the number of domestic patent filing was more than foreign filing for the first time in the past 11 years. "Today India's ranking is 7th in patent filing and 5th in trademarks. Talking about patents only, there has been an increase of about 50 per cent in the past five years. In the Global Innovation Index too, India's ranking has improved tremendously and now it has reached 40th position, while in 2015, India was behind even the 80th position… For the first time in the past 11 years in India, the number of domestic patent filing was more than foreign filing. It also shows the growing scientific prowess of India," Modi said.

"I believe that the dream of India's techade will definitely be fulfilled on the strength of our innovators and their patents. With this, we all will be able to take full advantage of world class technology and products prepared in our own country," he said.

In the past, the Prime Minister had used "techade" to describe the decade being dominated by technologies and India making the most of it.

Modi also talked about growing enthusiasm among Kashmiri youths regarding sports. "In the coming times, many of these youth will win medals for the country, and will hoist the Tricolour," he said.

Modi praises IISc for 145 patent filings in 2022 in 'Mann ki Baat'

NEW DELHI, DHNS

Prime Minister Narendra Modi, on Sunday, lauded Bengaluru's Indian Institute of Science for filing 145 patent applications in 2022, terming it a rare feat.

In his 'Mann ki Baat' broadcast, Modi also singled out Bengaluru-based e-Parisaraa, engaged in recycling e-waste, for special praise. "It has developed indigenous technology for extracting precious metals from printed circuit boards," the PM said.

In his first 'Mann ki Baat' of 2023, 97th since 2014, the PM said it was an amazing record that IISc had 145 patents, two patents every five days, in 2022.

"Today, India's ranking is seventh in filing for patents and fifth in trademarks," he said. The PM said there had been an increase of about 50% in filing for patents in the last five years.

"In the Global Innovation Index too, India's ranking has improved tremendously, and now it has reached 40th position, while in 2015, India was behind even the 80th position in the Global Innovation Index," Modi said.

The PM said that for the first time in the last 11 years in India, the number of domestic patent filings was more than foreign filings, a proof of the growing scientific prowess of India.

"I am confident that India's dream of techade will be fulfilled by its innovators and their patents," he said.

Touching on the subject of e-waste, the prime minister said if it is not disposed of properly, it can also harm the environment, but if dealt with carefully, it can become a great force in the circular economy of recycling and reuse.

Use of technologies and start-ups have made India a "global recycling hub," Modi said. "Those working in the field of e-waste say that at present, only 15-17% of e-waste is being recycled every year," the PM said.

In his address, Modi noted that this year's Padma awards, described by him as "People's Padma," included a number of tribals or those working for the community, besides those who have strengthened the world of music.

He said the total number of Ramsar sites, an international recognition for wetlands, in the country had increased to 75 from 26, in 2014. Lauding local communities, Modi said they deserve praise for preserving biodiversity.

Lauding the book, 'India - The Mother of Democracy,' the PM said Indians were also proud of the fact that their country was the "mother of democracy". Modi noted the increasing acceptance of Yoga and millets.

नरेंद्र मोदी : 'मन की बात'मधून दिव्यांगांसाठी राबविलेल्या उपक्रमाचे कौतुक

'पर्पल फेस्ट'द्वारे सुलभ भारत

खासगी क्षेत्राचाही सहभाग

'पर्पल फेस्ट'मध्ये दिव्यांगजनांनी सादर केलेली कलाकारी. • संग्रहीत

पद्म पुरस्कार विजेताहरूको प्रेरणादायी जीवनलाई विस्तृत रूपमा जान्नुहोस् र साझा गर्नुहोस्: प्रधानमन्त्री

भारत लोकतंत्र की जननी, यह हमारी रगों और संस्कृति में:मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यह हमारी रगों में बसा है। हमारी संस्कृति में है। सदियों से यह हमारे कामकाज का अभिन्न हिस्सा रहा है। हम स्वभाव से एक लोकतांत्रिक समाज हैं।

अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात के 97वें एपिसोड को संबोधित करते हुए मोदी ने 'इंडिया-द मदर ऑफ डेमोक्रेसी' किताब की तारीफ की। उन्होंने कहा, भारतीयों को इस बात पर भी गर्व है कि उनका देश लोकतंत्र की जननी है। मोदी ने कहा, इस किताब को पढ़ने के बाद आपको महसूस होगा कि कैसे लोकतंत्र की भावना देश के हर हिस्से में सदियों से बहती आ रही है। मोदी ने कहा, हमारे देश के इतिहास में लोकतांत्रिक मूल्यों का उदाहरण 12वीं शताब्दी के भगवान बसवेश्वर का अनुभव मंडप है, जहां मुक्त चर्चा और परिचर्चा को प्रोत्साहन दिया जाता था। उन्होंने कहा कि यह मैग्नाकार्टा से पहले का उदाहरण है।

योग, ज्वार से सेहत सुधर रही

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि योग, ज्वार, बाजरा और अन्य मोटे अनाज लोगों के स्वास्थ्य में अहम भूमिका निभा रहे हैं। जन-भागीदारी की वजह से इसमें क्रांति आ रही है। लोग इसे अपना रहे हैं।

पीएम मोदी ने मन की बात में किया भोपाल के द कबाड़ीवाला का जिक्र

दो युवा इंजीनियरों ने वर्ष 2014 में की थी आनलाइन कचरा खरीदने की शुरुआत

PM: 'Techade' dream will be fulfilled by innovators

New Delhi, January 29

PRIME MINISTER NARENDRA Modi said on Sunday that domestic patent filings have outscored the country's foreign patent filings as he expressed confidence that India's dream of "techade" will be fulfilled on the strength of its innovators. This underscores the country's increasing scientific capabilities, he said in the first episode of 'Mann ki Baat' in the new year.

Modi has in the past used "techade" to describe the decade being dominated by technologies and India making most of it.

He said India's rank in patent filling is seventh globally while it is fifth in trademark registration. India's patent registration has risen by 50% in the last five years, the prime minister said, noting that its ranking in the global innovation index has surged to 40 from below 80 in 2015.

"I am confident that India's dream of techade will be fulfilled by its innovators and their patents," he said.

The premier Indian Institute of Science had 145 patents in 2022 which is a rare record, Modi said.

In the broadcast, he informed people that the total number of Ramsar sites, an international recognition for wetlands, in the country has increased to 75 from 26 in 2014.

Lauding local communities, Modi said they deserve praise for preserving the biodiversity. "It is also a tribute to our age-old culture and tradition of living in harmony with nature." –PTI

मन की बात में पीएम मोदी ने की छत्तीसगढ़ के अजय कुमार मंडावी की चर्चा, पद्म पुरस्कार विजेताओं को लेकर कही ये बात

ମିଲେଟ୍ ମିଶନକୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

ରାମସର ଘୋଷିତ ଚିଲିକା ପ୍ରସଙ୍ଗରେ ଚର୍ଚ୍ଚା

ବର୍ଷର ପ୍ରଥମ ମନ୍ କୀ ବାତ୍

பிரதமர் மோடி பெருமிதம்

உலகை ஆச்சரியப்படுத்தும் உத்திரமேரூர் கல்வெட்டுகள்

Modi stresses turning e-waste into gold, focuses on millet-rich diet

RAJESH KUMAR THAKUR @ New Delhi

MILLETS, e-waste, Kashmir's serene beauty, scientific research, tribals among Padma awardees were some of the topics that figured prominently in Prime Minister Narendra Modi's 'Mann Ki Baat' on Sunday.

"If e-waste is not disposed of properly, it can harm our environment. But if done carefully, it can become a great force in the circular economy of recycle and reuse," Modi said in this year's first episode of 'Mann Ki Baat'.

Citing a report of the United Nations organisation, he said that 50 million tonne of e-waste is being thrown every year. He said that 50 million tonne of e-waste could not even be equal to the cumulative weight of all the commercial planes built in history of mankind.

"Each second, 800 laptops are being scrapped. You will be amazed to know that about 17 types of precious metals can be extracted from this e-waste through different processes. This includes gold, silver, copper and nickel. So, utilising e-waste is no less than making 'Kachre Ko Kanchan'", PM Narendra Modi said.

Use of technologies and start-ups have made India a "global recycling hub", Modi said, adding there is no dearth of start-ups that are doing innovative work in this direction.

"Those working in the field of e-waste say that at present, only 15-17 per cent of e-waste is being recycled every year," the prime minister said.

On growing use of millets in foods, the PM spoke about the Millet's Cafe opened at Raigarh in Chhattisgarh and noted how the number of 'Milletpreneurs' are increasing.

"Wherever the event associated with G-20 summit is being organised, nutritious and tasty dishes made from millets are included in the menu and Indian missions around the world are also making a lot of efforts to increase the millets popularity", the PM said.

Touching upon the Padma awards, Modi said, "India now feels proud to see tribal personalities among Padma awardees with a good representation of the tribal community."

Throwing light on India's progress in science technology and innovation, he said that India has obtained 7th rank in patent filing and 5th in trademark registering, an increase of 50 per cent in five years.

"In the Global Innovation Index too, India's ranking has improved tremendously and now it has reached 40th position, while in 2015, India was behind even the 80th position in the Global Innovation Index", he said. PM Narendra Modi concluded 'Mann Ki Baat' saying efforts to strengthen the Republic should go on relentlessly by public participation, by everyone's effort.

It is like every second 800 laptops are being thrown away. You will be amazed to know that about 17 types of precious metals can be extracted from this e-waste through different processes. This includes gold, silver, copper and nickel. So, utilising e-waste is no less than making 'Kachre Ko Kanchan'

Narendra Modi, PM

पीएम ने किया कश्मीर का जिक्र, बोले- लोग सच कहते हैं यह धरती का स्वर्ग है

प्रधानमंत्री ने रेडियो पर प्रसारित मन की बात में रविवार को कश्मीर के मनोहर दृश्यों और वहां युवाओं में खेल-कूद के प्रति बढ़ रहे उत्साह की विशेष रूप से चर्चा की और कहा कि आने वाले समय में कश्मीर के अनेक युवा खेल के मैदानों पर भारत का तिरंगा लहराएंगे। पीएम मोदी ने लोगों को कश्मीर घूमने और दोस्तों को भी वहां ले जाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, एक सोशल मीडिया यूजर ने लिखा है कि 'स्वर्ग इससे ज्यादा खूबसूरत और क्या होगा? ये बात बिल्कुल सही है – तभी तो कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। आप भी इन तस्वीरों को देखकर कश्मीर की सैर जाने का जरूर सोच रहे होंगे। बर्फबारी की वजह से हमारी कश्मीर घाटी हर साल की तरह इस बार भी बहुत खूबसूरत हो गई है।बनिहाल से बडगाम जाने वाली ट्रेन की वीडियो को भी लोग खासकर पसंद कर रहे हैं। खूबसूरत बर्फबारी, चारों ओर सफेद चादर सी बर्फ। लोग कह रहे हैं, कि ये दृश्य, परिलोक की कथाओं सा लग रहा है। कई लोग कह रहे हैं कि ये किसी विदेश की नहीं, बल्कि अपने ही देश में कश्मीर की तस्वीरें हैं। पीएम मोदी ने कहा, मैं चाहूंगा, आप, खुद भी जाइए और अपने साथियों को भी ले जाइए। कश्मीर में बर्फ से ढके पहाड़, प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ और भी बहुत कुछ देखने-जानने के लिए है।

The Indian EXPRESS

Citing Padma awards, PM Modi hails tribal communities in Mann Ki Baat

Odishatv.in

We Report. You Decide

Mann Ki Baat: PM Modi lauds milletpreneurs of Odisha's Sundergarh

Outlook

India's Dream Of 'Techade' Will Be Fulfilled By Innovators, Their Patents: PM Modi

ThePrint

PM Modi calls Winter Games, snow cricket in Kashmir "an extension of Khelo India movement"

NBT नवभारत टाइम्स

रसगुल्ला, लैपटॉप से लेकर कश्मीर में क्रिकेट की चर्चा, PM मोदी के मन की बात की 5 बड़ी बातें जान लीजिए

प्रभात खबर

Mann Ki Baat: भारत मदर ऑफ डेमोक्रेसी, हमारे रगों में है लोकतंत्र- जानिए मन की बात में और क्या बोले पीएम मोदी

आज तक

'हमारी रगों में लोकतंत्र, भारत मदर ऑफ डेमोक्रेसी', मन की बात में बोले पीएम मोदी

दैनिक जागरण

PM Modi ने 'मन की बात' में ई-वेस्ट पर की चर्चा, कहा- "रीयूज सर्कुलर इकोनॉमी में बन सकता है बड़ी ताकत"

दैनिक भास्कर

'मन की बात' में छत्तीसगढ़ के स्पेशल कैफे का जिक्र: PM मोदी बोले- रायगढ़ जाने का मौका मिले तो मिलेट कैफे का आनंद जरूर उठाएं

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार